श्रावक नित्यकृत्य अनुक्रमणिका.

श्रावक नित्यकृत्य अनुक्रमणिका.



॥ अर्हम् ॥

प्राचीन पुस्तकोद्धार फन्ड–ग्रन्थांकः ॥ १२ ॥

श्रीश्रावकनित्यकृत्य संग्रहः

॥ अथ नवकारमंत्रम् ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो उवझायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहतें हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारे ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र सहित ॥ ३ ॥ सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ फरसना शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पाले ॥१॥ पलावे ॥ २ ॥ अनुमोदे ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ २ ॥ काय गुप्ति ॥ आदरे ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल कहे ॥ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछैं गुरुगुण सहित श्रीगुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्य जीके सामने खडा होके तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरू ॥ १ ॥ वचनदंरू ॥ २ ॥ कायदंरू ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पमिलेहण जिमणे हाथ करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीश पमिलेहण लिखते हैं ॥ ६ ॥

कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं निलारू मस्तकें परिहरुं ॥

ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शातागारव ॥ ३ ॥ ए तीनुं मुखे परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणशल्य ॥ २ ॥ मिछादंसणशल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोन्न ॥२॥ ए दोय मावे ॥ खंन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मान्ने हाथे परिहरुं ॥

॥ न्नय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ छुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमण हाथे परिहरुं ॥

॥ पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन मान्ने पगे परिहरुं ॥

॥ वायुकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रस काय ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति पमिलेहणा संपूर्णा ॥ ६ ॥

॥ पीछैं खमा होय कें इछामि खमासमणका पाठ कहे कें

॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं, पढमसंघ
सत्तरिसय, जिणवराण विरहंत लप्नइ ॥ न
कोमि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ
विहुं कोमिहिं वरनाण ॥ समणह कोमीस
निच्चविहाणि ॥ १ ॥ सत्ताणवइसहस्सा,
कोमीर्ज ॥ चउसय ठायासीया, तिहुके
वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लरक
सहस्सा, चउसय अठासिया पमिमा ॥
॥ अथ जंकिंचि ॥
जं किंचि नाम तिह्नं ॥ सग्गे पायाले मा
जिणबिंबाइं ॥ ताइं सबाइं वंदामि ॥ १ ॥
॥ अथ नमुह्नुणं वा शक्रस्त
नमुह्नुणं अरिहंताणं, नगवंताणं ॥ १ ॥
यराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं,
सवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्नीणं ॥
लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं,
॥ ४ ॥ अनयदयाणं, चरकुदयाणं ॥ मग्गद
वोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसि
गाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्क
अप्पमिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउम
जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहय
गाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं सबदरिसिणं, सिवमयल

नमो जिणाणं जिअन्नयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति णागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १५ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोएअ ॥ सबाइं ताइं वंदे ॥ इह संतो तञ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १६ ॥ इह्यामि खमा० ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ नगवन् जावंत केवि साहू ॥ नरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंमविरयाणं ॥ १ ॥ इति॥१७॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुन्यः ॥ १७

॥ अथ उपसर्गहरंस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ डुरे मंतो ॥ तुज्झ पणामो वि वहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुरक दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ नत्तिप्नरनिप्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज वोहिं ॥ नवे नवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥१ए॥

सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं- वंदण वत्ति-आए ॥ इत्यादि कहना, सो लिखते हे ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवतिआए ॥ सकार वत्तिआए, सम्माणवत्तिआए ॥ बोहिलान वत्तिआए ॥ निरुवसग्गवत्ति-आए ॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धिइए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछे अन्नछ० कही चारनवकार अथवाएक लोगस्सका काउस्सग्ग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुरकरव-रदी० ॥ सुयस्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ पुरकरवरदी ॥

॥ पुरकरवरदीवड्ढे धायइसंके अ जंबुदीवे अ ॥ नरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धंस-णस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुरकलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स धम्मस्स सारमुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे नो पयउ णमो जिणमए नंदी सया संजमे ॥ देवं–नाग–सुवन्न–किन्नर–गण-स्सनूअनावच्चिए ॥ लोगो जछ पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कम-च्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥ २४ ॥ सुअस्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं वंद-णवत्तिआए० ॥ ए पाठ संपूर्ण कह कर अन्नछुससिएणं कह

कें आठ नवकारका काउस्सग्ग करे काउस्सग्गके मांहे आज्ञुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आगें लिखेगें. पीछे सिद्धाणंवुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ सिद्धाणं वुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं वुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेलसिहरे, दिरका नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ्ठनिठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ वेआवच्चगराणं ॥

॥ वेआवच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठिसमा हिगराणं ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० इहा कहनानहि ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछे संमासा प्रमार्जन पूर्वक वेठ कें मुहपत्ती पमिलेहे. पीछे वांदणा दे. तिनका विधि कहते हें ॥

॥ अवग्रहके वाहिर उत्ना हूआ आधा नीचा नमकर इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इतनो पाठ कहकर जूमि प्रमार्जन करता हूआ निसीहि कह कें थोमा अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्जन कर कें उक्कमा वेठ कें मावे हाथमें मुहपत्ति लेकें मावे

कानसें लेकें जिमणा कान पर्यंत निलाम पूंजी, मुहपत्ती आगें रखकें तिसके मध्य भागमें गुरुचरणोंकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्तकर कें थोमा नीचा नमकर मस्तकमे अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापनकर कें ॥ खमणिजो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछे फेर ॥ जत्ता भे इत्यादि आवर्त कर कें खमा होकें पीछे पगसें भूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. वहां ॥ आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणा ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं, जावणिजाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिजो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहुसुभेणभे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे, जवणिजं च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए, पमिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मणडुक्कमाए वयडुक्कमाए, कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सबकालिआए, सबमिछोवयाराए, सबधम्माइक्कमणा ए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पमिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अ पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ डुजी वारके वांदणामे आवस्सिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइ वइक्कंता, तथा चउमासीयें चउमासीउ वइक्कंतो पखीयें पखो वइक्कंतो, संवछरीयें संवछरीउ वइक्कंतो ॥ एसीतरें पाठ कहेना ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आलोएमि. जो मे० ॥ इति ॥ २७ ॥ इहां देवसियके ठिकाने राइयं कहेना ॥

॥ पीछे रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पति काय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेइंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवयोनिमें, माहारे जीवे जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रते जलो जाण्यो होय, ते सबे हु मने वचने कायायें करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ७ ॥ लोज ॥ ए ॥ राग ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अन्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य

॥ १७ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवतां प्रते जलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मन, वचन, कायये करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ २ए ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, जक्तकथा करी होय. और जो कोइ पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मने वचने, कायाये करके, दिवस अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणामें आलोउं ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पडिक्कमणामें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहना ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ पीछे सबस्सवि राइय ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इछाका० ॥ ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मांगे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछे इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कहके संडासा प्रमार्जन करकें आसन पर वेठके जिमणा गोडा उंचा रखकें डावा गोडा नीचें करके ऐसें कहे कि जगवन् ! सूत्र जणुं ? तब गुरुं कहे जणेह॥ पीछे इछं कहि कें तीन नवकार उर तीन वार करेमि जंते ॥ जण कें इछामि पडिक्कमिउं जो मे राइउं इत्यादि कहकर ॥ तं निंदे तं च गरिहामि पर्यंत वंदित्तु सूत्र वेठके कहे ॥ पीछे खडा होकें अप्नुठिउंमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रं ॥

वंदित्तु सबसिद्धे, धम्मायरिए अ सबसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे पडिक्कमे देवसियं सबं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुवयाणं, गुणवयाणं च तिण्हमइयारे ॥ सिक्खा णं च चउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलगपाणाइवायविरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ॥ पढमवयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुवयंमि, परिथूलगअलिअवयणविरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलगपरदवहरणविरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेना-

---

१ स्वस्थानात् यत्परस्थानं, प्रमादस्य वशाद् गतं । तत्रैव क्रमणं भूयः प्रतिक्रमणमुच्यते ॥

हरूप्पउंगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउत्थवयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धणधन्न खित्तवत्थू, रुप्पसुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फलेअ गंध मल्ले अ ॥ उवभोगपरिभोगे वीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहिभरकणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वण साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव—दंत लरकरसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदहतलावसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तणकट्ठेमंतमूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणुव्वट्टणवन्नग विलेवणे सद्दरूवरसगंधे ॥ वत्थासणआभरणे, पडिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ॥ दंडंमि अणट्ठाए तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिरकावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलरकेवे ॥ देसावगासियंमि, बीए

सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही–पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसह विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु ॥ संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसं-सपओगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माण-सिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्खा–गारवेसु सन्नाकसायदंडेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइ-आरोअ [1]तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोसस-मज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदियगुरु सगासे ॥ होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आव-स्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ ॥ दुक्खाणमंतकि-

१ तयं.

रिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संजरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ [1]तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अप्भुट्ठिउंमि आराहणाए विरउंमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए, जवसयसहस्समहणीए ॥ चउवीसजिणविणिग्गयकहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मद्दिठी देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ॥ असद्दहणे अ तहा,विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सबजीवे सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सबजूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउबीसं ॥ ५० ॥इति॥२१॥ इहां प्रजातके पडिक्कमण में देवसिके ठिकाने राइयं कहना ॥

पीछें दो वांदणा देकर अवग्रहमाहि रह्यो थकोज कहे ॥ ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्भुट्ठिउंमि अप्भिंतर ॥ राइयं खामेउं ? गुरु कहे खामेह इछं खामेमि राइयं कहके संडासा प्रमार्जन पूर्वक गोडालीये बेठके, बे वांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसुं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

---

१ टिपणी–तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स इस पदकुं मनमें विचारणा मुखसे उच्चारण नहि करणा इति संप्रदाय.

॥ अथ अब्भुठ्ठिओ ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अब्भुठ्ठिओमि अब्भिंतर देवसियं खामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जं किंचि अपत्तियं ॥ परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए ॥ जं किंचि मज्झविणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा ॥ तुब्भे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि डुक्कडं कहे. पीछें बे वांदणा देई भूमि प्रमार्जन करता हुआ पाछे पगे अवग्रह बाहिर आयकें आयरिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिअ उवज्झाए सूत्र ॥

आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण–संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मो–निहिअ–निअचित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥ इति ॥ २३ ॥

पीछें करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरि० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासी तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कह कें काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ तप चिंतवना न आवेतो छ लोगस्सका अथवा चोवीश नवकारका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें

रिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिउमि आराहणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए, भवसयसहस्समहणीए ॥ चउवीसजिणविणिग्गयकहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठ्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ॥ असद्दहणे अ तहा,विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥इति॥२१॥ इहां प्रभातके पडिक्कमण में देवसिके ठिकाने राइयं कहना ॥

पीछें दो वांदणा देकर अवग्रहमाहि रह्यो थको ज कहे ॥ ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुट्ठिउमि अब्भिंतर ॥ राइयं खामेउं ? गुरु कहे खामेह इच्छं खामेमि राइयं कहके संडासा प्रमार्जन पूर्वक गोडालीये बेठके, वे वांह पडिलेहि॥ मुहपत्ती वामहाथसुं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

---

१ टिपणी—तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स इस पदकुं मनमें विचारणा मुखसे उच्चारण नहि करणा इति संप्रदाय.

॥ अथ अप्भुठ्ठिअ ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अप्भुट्ठिओमि अभिंतर देवसियं खामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जं किंचि अपत्तियं ॥ परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए ॥ जं किंचि मज्झविणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं वा ॥ तुझ्झे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३२ ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि डुक्कडं कहे. पीछें वे वांदणा देई भूमि प्रमार्जन करता हुआ पाछे पगे अवग्रह बाहिर आयकें आयरिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिअ उवज्झाए सूत्र ॥

आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण–संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मो–निहिअ–निअचित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥ इति ॥ ३३ ॥

पीछें करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरि० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासी तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कह कें काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ तप चिंतवना न आवेतो ६ लोगस्सका अथवा चोवीश नवकारका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें

प्रगट लोगस्स कहे॥ मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणा देई सकल तीर्थनाम लेइ नमस्कार करे, सो लिखे हें ॥

॥ अथ सकलतीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणि किरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वखारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ चौर्जयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥श्रीम० ॥३॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे॥कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिछले वा, नेपाले नाहले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वाढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च

१ चैत्रे १ चित्रे ४ क चौजयते ख वैजयते ५ क विपुलगिरिवरे ख विमलगिरि. ६ क अघाटे ख अपाढे ग आपाडे ७ क हेमकूटे ख हेवकूटे.

पौंड्रे ॥ आर्द्रे माड़े पुलिंदे द्रविड़कवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंद्रायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरा पत्तने चोज्जयिन्यां, कौशांब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम् ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे नद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीर तीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने नूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे डुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "[२]श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौजान्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौमले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके नवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं नक्तिनाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥ इति ॥ २४ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करकें ॥ इच्छामो अणुसर्हिं कहिकें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछे णमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहकर 'परसमयतिमिरतरणिं' ए तीन गाथा कहें, सो लिखते हें ॥

---

१ क चंद्रमुख्याम् ख चंद्रावत्यां. २ नवमी गाथा उक्तार्थ अने प्रक्षेप कहै.

॥ अथ परसमयतिमिरतरणिं ॥

॥ परसमयतिमिरतरणिं, जवसागर वारितरण वरतरणिं ॥ रागपरागसमीरं वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्धसंसार-विहारकारि, दुरन्तजावारिगणानिकामं ॥ निरन्तरं केवलिस-त्तमा वो, जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि कुनया-गमरूढगूढ संमोहपंकहरणामलवारिपूरं ॥ संसारसागरसमु-त्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल जरलोजालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलजवकारागारविछित्तिकारं, कुरुकमलकरे मे मङ्गलं देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावानीस्तुति ॥

॥ [1]संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीर, नमामि वीर, गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ जावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालि-तानि ॥ संपूरिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिन-राज पदानि तानि ॥ २ ॥ वोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराजि-रामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु-गममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरा गमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीवहुलपरिमलालीढलोलालि-माला, फंकारारावसारामलदलकमलागारजूमीनिवासे ॥ गया-

---

१ साधवियां श्राविकाउं ससारदावानी ३ गाथा कहै नमोऽर्हत् सिद्धान कहे.

संसारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा भणी, शक्रस्तव कहे.

पीछे खमा होकर अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नछ० ॥ इत्यादि पाठ कहकें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुतिकी कहे, सो लिखते हें.

॥ अश्वसेन नरेसर वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, नीलवरण सुखकंद ॥ अहि लंछन सेवित, पउमावइधरणिंद ॥ प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दुसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछे णमो अरिहंताणं कहिकें काउस्सग्ग पारे ॥ इसतरे आगें पण जाणणा ॥ पीछे लोगस्स कहे ॥ सबलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्ति० ॥ अन्नछ० ॥ इत्यादि कहिके ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारिकें दुजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुलगिरिवेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुपोत्तर नंदी, रुचक कुंमल सुखठाम ॥ भुवणेसर व्यंतर, जोइसविमाणीय धाम वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछे पुस्करवरदीवड्ढे कहकें सुयस्स भगवउ० वंदण० अन्नछू० ॥ कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारिकें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते हें.

॥ अथ परसमयतिमिरतरणिं ॥

॥ परसमयतिमिरतरणिं, ज्ञवसागर वारितरण वरतरणिं ॥ रागपरागसमीरं वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्धसंसार-विहारकारि, दुरन्तज्ञावारिगणानिकामं ॥ निरन्तरं केवलिस-त्तमा वो, ज्ञवावहं मोहज्ञरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि कुनया-गमरूढगूढ संमोहपंकहरणामलवारिपूरं ॥ संसारसागरसमु-त्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल ज्ञरलोज्ञालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलज्ञवकारागारविछित्तिकारं, कुरुकमलकरे मे मङ्गलं देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावानीस्तुति ॥

॥ [1]संसारदावानलदाहनीर, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं, गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालि-तानि ॥ संपूरिताज्ञिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिन-राज पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराज्ञि-रामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु-गममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरा गमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालि-माला, झंकारारावसारामलदलकमलागारज्ञूमीनिवासे ॥ छाया-

१ साधवियां श्राविकाउं संसारदावानी ३ गाथा कहै नमोऽर्हत् सिद्धान कहे.

संभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा भणी, शक्रस्तव कहे.

पीछे खमा होकर अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ० ॥ इत्यादि पाठ कहकें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुतिकी कहे, सो लिखते हैं.

॥ अश्वसेन नरेसर वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, नीलवरण सुखकंद ॥ अहि लंछन सेवित, पउमावइधरणिंद ॥ प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दुसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछे णमो अरिहंताणं कहिकें काउस्सग्ग पारे ॥ इसतरे आगें पण जाणणा ॥ पीछे लोगस्स कहे ॥ सबलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्ति० ॥ अन्नत्थ० ॥ इत्यादि कहिकें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारिके दुजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुलगिरिवेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखठाम ॥ भुवणेसर व्यंतर, जोइसविमाणीय धाम वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछे पुक्खरवरदीवड्ढे कहकें सुयस्स भगवओ० वंदण० अन्नत्थू० ॥ कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारिकें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ परसमयतिमिरतरणिं ॥

॥ परसमयतिमिरतरणिं, जवसागर वारितरण वरतरणिं ॥ रागपरागस्समीरं वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्धसंसारविहारकारि, दुरन्तजावारिगणानिकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि कुनयागमरूढगूढ संमोहपंकहरणामलवारिपूरं ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरलोजालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलजवकारागारविछित्तिकारं, कुरुकमलकरे मे मङ्गलं देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ ३ए ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावानीस्तुति ॥

॥ [1]संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं, गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ जावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराजिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरा गमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला, कंकारारावसारामलदलकमलागारज्ञमीनिवासे ॥ गाथा-

[1] साधवियां आवकाउं संसारदावानी ३ गाथा कहे नमोऽर्हत् निवान कहे.

॥ सिद्धाचल सेवुं सदा सहुतीरथ सिरदार, सोरठ देश सोहामणो तिहां ए गिरिवर सार ॥ १ ॥ तीन भुवन विच एहवो तीरथ कोइ न होय, सीमंधरवयणेकरी शेत्रुंजमहातम जोय ॥ २ ॥ श्रीयुगादि जिनराजजी समवसख्या इण ठाम, तेहथी ए तीरथ वरुो अविचल सुखनो धाम ॥ ३ ॥ काती पूनम दशक्रोमसुं ए ज्ञावरु वारिखिह्न जाण, सिद्धि वधू रंगे वख्या कृपाचंद मन आण ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपुंमरीकजीनो चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीऋषन्नजिनेश्वररायना पहिला गणधर देव, पुंमरीक नामें सदा सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ चैत्री दिन शिवपुर लह्या पांच क्रोम परिवार, पुंमरीक तेहथी थयो प्रगट नाम सुखकार ॥ २ ॥ आ अवसरपणी कालमा ए प्रथम सिद्ध अन्निराम, कृपाचंद गिरिराजने प्रतिदिन करे प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥ ४१

॥ जय जय नान्नि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंमण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, न्नव दुःख विहंडण ॥ जय जय साधु सुरिंद्र विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषन्न जिणेसर ॥ १ ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुऊ पद पंकज प्रीतिधर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ २ ॥ जं किंचि नाम तिह्नं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुन्यः ॥ तक कहिके श्रीसिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

जिहां अंग इग्यारे, वारे उपांग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउन्नेद ॥ जिन आगम षटद्रव्य, सप्तपदारथ जुत्त ॥ सांन्नलि सद्दहतां, तुटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठे सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कहकें वेयावच्चगराणं० ॥ ॥ अन्नत्थ० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारिकें नमोऽर्हत्सिद्धा० कहकें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हें ॥

पउमावई देवी, पार्श्वयक्ष परतक्ष ॥ सहु संघना संकट दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनन्नक्ति, सूरि कहे इकचित्त ॥ सुख सुजस समापे, पुत्र कलत्र वहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ पीठे नीचा वैठकें णमोत्थु० कहकें ॥ तीन खमासमणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य,उपाध्याय, सर्वसाधु मिश्रकही वांदे१॥१॥

॥ इतना विधि कियां पीठें स्थिरता हुवेतो खमासमण तीन वखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह न्नगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं यह पाठ कह कर चैत्य वंदन करे. सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीवीसविहरमानजीको चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर १ युगमंधर २ वाहु ३ सुवाहु ४ जाण सुजात ५ स्वयंप्रन्नु ६ सातमा, ऋषन्नानन ७ मन आण, ॥१॥ अनंतवीर्यने ८ सूरप्रन्नु ए विमल १० वज्रधर ११ कहिये, चंद्रानन १२ चंद्रवाहुजी १३ न्नुजंग १४ नेमप्रन्नु १५ लहिये,॥२॥ ईश्वर १६ श्री वयरसेनजी १७ महान्नद्र १८ जिनदेव, देवजस १ए अजित-

---

१ विधिप्रपा १ सामाचारीशतक २ श्रावक विधिप्रकाश ३ विगेरेमे अड्ढाइज्जेसु कहणा कह्या नहीं जो कहते हैं सो विधि नही है ॥ किंतु गड्डरीया प्रवाह है ॥

१ टीप्पणी २–उत्तर दिशा सामुं श्रीमंधरजीका चैत्यवंदन करे.

वीर्यंजी २० सुरपति सारेसेव, ॥३॥ पंचविदेहे विचरता ए वीस जिनेसर जाण, कृपाचंद त्रिहुंकालमें नमतां कोरु कल्याण, ॥४॥ इति वीस विहरमान चैत्यवंदनं सं० ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिर नामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गति जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्रीसीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहु कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचि नाम तित्थं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ और ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः॥ तक कहिकें सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥ ३८

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतकी अवधार लालरे परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र चक्कीसरू, सुर नर रहे कर जोरू लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोरू लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उद्धारण हो तुम्हें, दूरहरो भवदुःख लाल

जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥
॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सीमंधरजिनस्तव प्रारंभः ॥ ३९

॥ पूर्व विदेह पुखलावती जयो जगपतीरे श्रीसीमंधरस्वाम प्रहसमनितनमुं रे ॥ १ ॥ जगत्रयभावप्रकाशता भविप्रतिबोधतारे उपगारी अरिहंत ॥ प्रह० ॥ २ ॥ धन्यनयरी धन्यतेनरा धन्य ते धरारे विचरे जिहां जिनराज ॥ प्रह० ॥ ३ ॥ धन्य दिवस धन्य ते घमी देखसुं आंखमीरे भक्तिवछल भगवंत ॥ प्रह० ॥ ४ ॥ महिर निजर अवधारजो पतितउधारजोरे जिनहर्ष घणें ससनेह प्रहसमनित नमुंरे ॥ इति ॥ श्री सीमंधरजीको स्तवन संपूर्ण ॥

॥ पीछें जयवीयराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० कहकें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारिकें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते हें ॥

॥ महीमंरूणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलणाणगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ ॥ ४० ॥ ३ ॥ इमहीज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हें ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरीचैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो–विजायचक्की–नमि–विनमि–मुणी पुंमरियो मुणिंदो, वाली पज्जून्न–संबो भरह सुक मुणी सेलगो पंथगोवा, रामो कोमी पंचपावरू नरवई नारउ पंरुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे गिरिमहं तित्थमेयं नमामि ॥ १ ॥

॥ सिद्धाचल सेवुं सदा सहुतीरथ सिरदार, सोरठ देश सोहामणो तिहां ए गिरिवर सार ॥ १ ॥ तीन भुवन विच एहवो तीरथ कोइ न होय, सीमंधरवयणेकरी शेत्रुंजमहातम जोय ॥ २ ॥ श्रीयुगादि जिनराजजी समवसख्या इण ठाम, तेहथी ए तीरथ वड्यो अविचल सुखनो धाम ॥ ३ ॥ काती पूनम दशक्रोडसुं ए द्राविड वारिखिल्ल जाण, सिद्धि वधू रंगे वख्या कृपाचंद मन आण ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपुंडरीकजीनो चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीऋषभजिनेश्वररायना पहिला गणधर देव, पुंडरीक नामें सदा सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ चैत्री दिन शिवपुर लह्या पांच क्रोड परिवार, पुंडरीक तेहथी थयो प्रगट नाम सुखकार ॥ २ ॥ आ अवसरपणी कालमा ए प्रथम सिद्ध अभिराम, कृपाचंद गिरिराजने प्रतिदिन करे प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥ ४१

॥ जय जय नाभि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंडण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहंडण ॥ जय जय साधु सुरिंद्र विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ १ ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुझ पद पंकज प्रीतिधर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ २ ॥ जं किंचि नाम तिब्ठं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ तक कहिके श्रीसिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पुंमरीकगणधरजीस्तवनं ॥

श्रीपुंमरीक गणधर नमुं, पुंमरगिरि सिणगार लाल रे ॥ पांचकोम मुनि परिवस्था, कीधो अणसण सार, लाल रे ॥ पुंम ॥ १ ॥ आदीसर जिन उपदिसे, ए तीरथ परसाद, लाल रे ॥ शिवकमला तुमे पामशो, मेटी सहु विखवाद लाल रे ॥ पुंम ॥ ॥ २ ॥ तीरथ पतीमां हुं अबुं, प्रथम तीरथ इम जाण, लालरे॥ प्रथम सिद्ध सिद्धाचले, तुमे थास्यो महिराण, लालरे ॥ पुंम ॥ ३ ॥ प्रभुनी आणा आदरी संलेखना चितलाय, लालरे ॥ चैत्रीदिन शिवपुर लह्या, घातीकर्म खपाय, लालरे ॥ पुंम ॥ ॥ ४ ॥ यात्रा विधीसुं कीजिए, जिनजी दियो उपदेश, लालरे॥ कृपाचंद गिरिराजनी, चाहे सेवा हमेश, लालरे ॥ पुंम ॥ ए ॥ इती श्रीपुंमरीक गणधरजी स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनम् ॥

सिद्धाचल गिरि नेव्या रे ॥ धन्य नाग्य हमारा विमला-चलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूंख समोसस्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चारा ॥ अष्ट ऊव्यसें पूजो नावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशान्तरथी हूं इहां आयो, श्रवण सुणी गुण तोरा ॥ पतितउद्धारण विरुद तुमारो, एह तीरथ जग सारारे ॥ ध० ॥ ३ ॥ नाव नक्तिसें प्रजु गुण गावे अपना जन्म सुधारा ॥ जात्रा करि नवि जन शुन्न नावे, नरक तिर्यंच गति ... ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढारे तयांसी मास आपाढे, वदि

आगम जोमवारा ॥ प्रजुके चरण परताप संघमें, क्षमारतन प्रजु प्यारारे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं लिख्यते ॥

॥ सिरि सिद्धाचल गिरिवर राया परमातम पद संपद पाया, श्रीरुषजजिनेसर जिनराया प्रजु मया करी, दिल रंजन दिदारक मुजने दीजिये ॥ १ ॥ जे समता शुद्ध सुधा आपे, जमता युत कुमतिलता कापे, वलि बोध बीजने थिर थापे ॥ प्रजु० ॥ ॥ २ ॥ पर पुद्गलममता दूरगमे, चेतनता निजघरमांहिं रमे, तिहां जनम मरण सहू डुःख विरमे ॥ प्रजु० ॥ ३ ॥ जेहथी जवपरणति चितनवसे अध्यातम अनुजव गुण विकसे तिहां सहज समाधि दशा उल्लसे ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥ ए अध्यातम वीनति मधुरी ॥ वाचक–गणि–क्षमाकल्याण करी ॥ ते सफल करो मुज हेत धरि ॥ प्रजु० ॥ ५ ॥

इति सिद्धाचलस्तवनं संपूर्णम् ॥ ४२

॥ पीठे जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नज० ॥ कहकें एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारिकें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहकें स्तुति कहे सो लिखते हैं ॥

॥ शत्रुंजगिरि नमियें रुषजदेव पुंमरीक ॥ शुज तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरजीक ॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४२ ॥ ४ ॥ पीठे फु होवे तो पमिलेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण विधि ॥ ५ ॥

॥ खमासमण देई इछाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ पडिलेहण संदिस्साउं? गुरु कहे. संदिस्सावेह ॥ बीजे खमासमणे ॥ इछाका० सं० ॥भ०॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछे इछं कही मुहपत्ती पडिलेहे ॥ इमहीज दोय खमासमणे अंगपडिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपडिलेहण करुं कहकें धोतियुं कणदोरो पडिलेहकें खमासमण देई इछाकारे ॥ सं० ॥ भगवन्! पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पडिलेहके रखे, अने जो गुरुवादिक थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्यामाँगे, पीछे खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह ॥ पीछे इछं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेही ॥ दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उंहिपडिलेहण संदिस्साउं ॥ उंही पडिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीछे पौषधशाला प्रमार्जी, काजो विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी दृष्टिपडिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अवभी प्रायः एसेही करते दिखते हैँ ॥

अब सामायिक पारणेका विधि कहते हैँ ॥ ६ ॥

॥ पीछे सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ति पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरू कहे 'पुणोवि कायव्वो, पीछे यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥

सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तवो ॥ पीछे तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊनो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें वेसी मस्तक नमावी ॥ नयवं दसएनद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ नयवं दसएनद्दो ॥ ४४

॥ नयवं दसएनद्दो, सुदंसणो थूलिनद्द वयरोय ॥ सफली-कयगिहचाया, साहू एवं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया नावा ॥ फासु अ दाणे निज्जर, अभि-ग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमछो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संनरइ जीवो ॥ जं च न संनरामि अहं, मिछामि डुकरं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेए चिंतियं, असुहं वायाइ नासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिछामि डुकरं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसह संठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो वोधवो, सेसो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लागी होय, दश मनका, दश वचनका, वारह कायाका वत्तीस डुपणमांहि जो कोइ डुपण लागो होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिछामि डुकरं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥ ॥

॥ अथवा पहिला सामायिक पारी कें, पीछे पमिलेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरे गुरुकुं सुहराइ पूछे ॥

* दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपतिसूरिजीकी समाचारीमें एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥ ७

॥ पिछले पहोरें धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछे गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पासे मूकी खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं ॥ भ० ॥ समायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह. इछं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछे खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह इछं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इछाकारेण सं० भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछे करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछे इछं कही ॥ इछामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसे इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचे बैठके मुहपत्ती पडिलेहि वांदणा देई कहे. इछाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चरकाण करावोजी. पीछे गुरु दिवस चरिम पच्चरकाण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्षं अथवा स्वमुखें अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चरके अने जो तिविहार उपवास कीधो

हुवे, तो मुहपत्ती पमिलेहि पच्चरकाण करे ॥ वांदणा न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चरकाण करवुं छे नहीं ॥ ते माटें मुहपत्ती नाहिं पमिलेहे ॥ ए विस्तार विधि हे ॥ पीछे एक खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सद्याय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछे इछं कही वली खमासमण- देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ सज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछे इछं कही ॥ खमासमण देई ॥ उन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सज्झाय करे ॥ पीछे खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ वेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ वेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछे इछं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इछा० ॥सं०॥न०॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं पमिग्गहूं ? गुरु कहे पमिग्गएह ॥ पीछे इछं कही शुन्न ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पमिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥ ७

प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ चैत्य- वंदन करुं ? गुरु कहे करेह. पीछे इछं कही ॥ जय तिहुअणं कहे ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देख- णेमें आवे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥ ४५ ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअकरि केसरि ॥ तिहुअणजण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंभणय पुरट्ठिअ ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंति झत्ति वर पुत्तकलत्तइं, धण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणभुंजइ रज्जाइं ॥ पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास पसाइण, इय तिहुअण वरकप्परु- क्खसुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्ण- हुट्ठसुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण खएणखुण्ण नर सल्लिअ सूलिण ॥ तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धण्णंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउ वि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पउत्तइ मंत–तंत– जंताइ विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग विगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि, दुरिअइं हरउ स पासदेउ दुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणा थंभेइ भीमद- प्पुद्धुर सुरवर, रक्खस–जक्ख–फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसु जोइणि जोइअ, इय तिहुअण अविलंघिआण जय पास सुसामि अ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थअ- णत्थतित्थ भत्तिब्भर. निब्भर, रोमंचंचिअचारुकाय किण्णरनर सुरवर ॥ जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअ

मणकनलन्नसल न्नय पंजरकुंजर, तिहूअणजणआणंदचंद न्नुवणत्तयदिणयर जय मइमेइणि वारिवाह जय जंतुपिआमह, थंन्नणयठिअ पासनाह नाहत्तण कुण मह ॥ ८ ॥ वहु विहवण्णुअवण्णुसुण्णुवसिउ छपणिहि, मुरकधम्म कामछ काम नर नियनियसछहि ॥ जं ज्कायइ वहुदरिसणछ वहुनामपसिद्धउ, सो जोइअ मणकमलन्नसल सुह पास पवद्धउ ॥ ए ॥ न्नय विप्नल रणफणिरदसण थरहरिअसरीरय, तरलिअनयणविसण्णुसुण्णुगग्गर गिर करुणय। तइं सहसत्ति सरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर मह विज्कवि सज्कसइ पास न्नय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह पवूढरूढ छुहदाह सुपुलिय ॥ मणइमण्णुसज्जण पुणअप्पाणंसुरनर, इय तिहुअणआणंद चंद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसु घंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लिरमल्लमहल्लन्नत्तिसुरवर गंजुल्लिय ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति न्नवणेवि महूसव, इय तिहुअणआणंदचंद जय पास सुहुप्नव ॥ १२ ॥ निम्मलकेवलकिरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयछसछ विछरिअ पहान्नर ॥ कलिकलुसिअ जण घूअलोयलोयणह अगोयर, तिमिरइं निरुहर पास नाह न्नुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरण जलवरिससित्तमाणवमइ मेइणि, अवरावरसुहुमछवोहकंदलदलरेइणि ॥ जायइ फलन्नरन्नरिय हरिय छुहदाह अणोवम, इय मइमेइणि वारिवाह दिस पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकलकल्लाणवलि उल्लूरियछुहवणु, दाविअसग्गपवग्गमग्ग छुग्गइगम वारणुं, ॥ जय जंतुह जणएणतुल्लजंजणियहियावहु,

रम्म–धम्म सो जयउ पास जय जंतु पिआमहु ॥१५॥ भुवणारण निवास दरिअ परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्त वाल खुदा सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंवुलु चिठहिँ, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिँ ॥ १६ ॥ फणिफण-फारफुरंतरयण करंजिअनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलुप्पल सामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगंजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंभणयपुरठिअ ॥ १७ ॥ महमण-तरलपमाणनेय वायावि विसंवुलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहलंघलु ॥ तुह माहप्पपमाणदेव कारुण पवित्तउ, इय मइ मा अवहीर पास पालिहि विलवंतउ ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिउ णे य कलुणु किं किं व न जंपिउ, किं व न चिठिउ किठ देव दीणयमविलंविउ कासु न किय निप्पल्ललल्लुअम्हेहिं डुहत्तहिँ, तहवि न पत्तउ ताण किंपि पइं पहु परिचत्तहिँ ॥ १९ ॥ तुहुं सामिउ तुहुं मायवप्प तुहुं मित्त पियं करु, तुहुं-गइ तुहुं मइतुंहिज ताणतुहुं गुरु खेमंकरु ॥ हउं डुह भर भारिअ वराउ राउल निब्भग्गउ लीणउ तुह कमकमलसरण जिणपालहिँ चंगउ ॥ २० ॥ पइं किवि कय नीरोय लोय किवि पावियसुहसय, किवि मइमंत महंत किवि केवि साहियसिव-पय ॥ किवि गंजिअरिउवग्ग केवि जसधवलिअ भूअल, मइं अवहीरहि केण पास सरणागयवच्छल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीह नाह निप्पन्नपयोअण, तुहुं जिण पास परोवयारकरुणिक्कपरा-यण ॥ सत्तुमित्तसमचित्तवित्ति नय निंदिअसममण, माअ-वहीरिअ जुग्गउवि मइं पास निरंजण ॥ २२ ॥ हउं बहुविहडु

हतत्तगत्त तुहुं डुहनासणपरु, हउं सुयणह करुणिक्कठाण तुहुं निरु करुणाकरु ॥ हउं जिण पास असामिसालु तुहु तिहुंअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं फंखत इय पास न सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गा जुग्गविज्ञाग नाह नहुजोयहि तुह सम, जवणुवयार सुहावज्ञाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण नियइ जुविदाहसमंतउ, इय डुहबंधव पासनाह मइ पाल थुणंतउ ॥ २४ ॥ न य दीणह दीण य मुएवि अणविकिवि जुग्गय, जं जोइयउवयारु करहि उवयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेण तुह नाहिण चत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पास पालहि मइं चंगउ ॥ २५ ॥ अह अन्नविजुग्गयविसेसकिवि मन्नहि दीणह, जं पास वि उवयारु करइ तुह नाह समग्गह ॥ सुच्चिअ किल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह, किं अणुण तंचेव देव मा मइ अवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्नण नहु होइ विहल जिण जाण उ किं पुण, हउं डुक्खिउ निरुसत्तचत्तडुक्कहु उस्सुयमण ॥ तं मन्नउ निमिसेण एण एउ विजाइ लप्नइ, सच्चं जं जुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पपयासिउ, किज्ञउ जं नियरूवसरिसु न मुणउ बहु जंपिउ ॥ अन्नुण जिणजगतुहसमोविदक्खिन्नदयास उ, जइ अवगिन्नसि तुंहिज अहह किं होइसहयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविण किणविपेअपाइण वेलंविउ, तउजाणुं जिणपास तुम्हहउं अंगी करिअ उ ॥ इयमहइछिअ जं न होइ सा तुह उंहावण, रक्कंतह नियकित्तिणे य जुज्ञइ अवहीरण ॥ २९ ॥ एव महारिह जत्त देव इयन्हवणमहूसउ, जं अण लिय गुणगहण तुम्ह

मुणिजण अणिसिद्ध ॥ इय मइं पसिय सुपासनाहथंभणय-पुरष्ठिअ, इय मुणिवर सिरि अभयदेव विणवइ आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥ ४६

॥ जय महायस जय महायस, जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समछ परमछजाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय दुहत्त–सत्ताण ताणय, थंभणयष्ठियपासजिण ॥ भवियह भीम भवत्थु, भयअवणिंताणंतगुण ॥ तुज्झ त्तिसंझ नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछे शक्रस्तव कहकें खमा होकर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कहकें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहीएक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हें ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥ ४७

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन, सातहाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउ-स्सग्गमें रहे थके सुने. पीछे णमो अरिहंताणं कहकें काउ-स्सग्ग पारे. इसीतरें आगें पण स्तुतिकी चारोंगाथामें जान लेनां.

॥ पीछे लोगस्स कहकर सबलोए अरिहंत चेइयाणं० वंद-

णवत्ति० ॥ अन्नत्थु० ॥ कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारिकें उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हें ॥

॥ सुर नरवर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामितभर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम निशिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवावीस ॥ १ ॥ यह दूसरी गाथा कहिकें काउस्सग्ग पारे. पीछे पुरकरवरदी० वंदण वत्तिआए० अन्नत्थू० कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करकें, पारिकें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथे करि आगम, भाख्या श्रीभगवंत ॥ गणधरते गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहिकें सिद्धांण बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग करके पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन-स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहिकें बेठकें नमोत्थूणं कहे. पीछे एक खमासमण देईकें श्रीआचार्यमिश्रदूसरा खमासमण दीये. पीछे श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमण देकर श्री वर्त्त-मान आचार्यजीका नाम लेकें मिश्र चोथे खमासमण मे सर्व साधुजी मिश्र इसीतरें कहकर गोडा लीयें बेठकें मस्तक नमाव

सव्वस्सवि देवसिय० इत्यादि कहकर तस्समिछामि दुक्कडं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछे खडे होकर करेमिभंते सामाइयं० ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउं० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नत्थु०॥ इत्यादि कहिकें,काउस्सग्ग मांहे आजूना चउ प्रहरमें॥ इत्यादि पाठ चिंतवीं, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. अथवा 'णमो अरिहंताणं' कही काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछे संडासा प्रमार्जन पूर्वक बैठकें मुहपत्ती पडिलेहि कें वांदणा देवे. पीछे अवग्रहमांहिज उन्नो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे तब गुरु कहे आलोएह. पीछे इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कहकें अतिचार आलोवे. पीछें सव्वस्सवि देवसिय इत्यादिथी मांडीने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछे इच्छं तस्स मिछामि दुक्कडं कहिकें संडासा प्रमार्जि प्रमार्जित भूमियें आसन पर बैठकें भगवन्! सूत्र भणुं? एसा कहे. तबगुरु कहे भणेह. पीछे इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भंते भणीने इच्छामि पडिक्कमिउं जोमे देव सिउं इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछे खडा होकर अब्भुट्ठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणा देवे, अरु अवग्रह माहिंज खडा हुआ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुट्ठिउमि अब्भिंतर देवसियं खामेउं? गुरु कहे, खामेह ॥

इच्छं खामेमि देवसियं कहकें गोडालीयें बेठकें वाम हाथे

मुहपत्ती मुखें धरकें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख करकें सर्व पाठ कहे. पीछे विधिसेंती दो वांदणा देकर आयरिय उवज्झाए इत्यादि त्रण गाथा कहकें करेमि भंते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें काउस्सग्ग करे० तस्स उ० अन्नत्थू ॥ कहकें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारिकें पीछे दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहकें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारिकें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुरकरवरदीवड्ढे कहिकें सुयस्स भगवओ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहकें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछे पारिकें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहकें वेयावच्चगराणं न कहे पीछे सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछे गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें नमोर्हत्सिद्धा० कहिकें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो, गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुणकें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥ ४७

सुवर्णशालिनी देयात्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्यमशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछे खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहकें, एक नवकार चिंतवी पूर्वनी परें क्षेत्रदेवता की स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥ ४ए

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछे खमा हुवा एक नवकार कही, संमासा प्रमार्जि उकमो बेठकें मुहपत्ती पमिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ पच्चरकाण नहि लिया होय तो पच्चरकाण करे पीछे इच्छामो अणु- सहिं० ॥ कही बेठे. गुरु एक स्तुति कह्यां पीछे श्रावक समस्त मस्तकमें अंजलि करिके णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं कही संसारदावाकी स्तुति ३ कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंद- राज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापा- र्दितजंतु निर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोजतः ॥ स शुक्र मासोद्भववृष्टिसन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृङ्गीकुरङ्गं मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति ॥ विकचकमलमुच्चैः साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकल- सुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहकें पीछें णमोत्थूणं० कहकें एक श्रावक खमासमण देई कहे इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन

भणुं स्तवन सांभलुं ? गुरु कहे भणेह सांभलेह. पीछें आसन पर बेठकें नमोऽर्हत्सिद्धा० कहके बमो स्तवन कहे,सो लिखते हें ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ५०

॥ भविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका कांइ ॥ आगम वाणीने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहां तत्व पिछाणे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबरू श्रावक श्रेणिक-राजा, रावण प्रमुख अनेक ॥ विविधपरे जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोता, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्रकुमार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमे अंगे जिन प्रतिमानो, प्रगटपणे अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूजा रायपसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन राज एहवा आगम अरथ मरोमी, करियें केम अकाज रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगे ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ भ० ॥

---

१ ११ गाथासे स्तवनकी कम गाथा होवे तो ॐ वरकनक गाथा १ कहना इति संपदाय.

श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्यभाव विहूं भेदें कीनी, जीवाभिगम छे साखी रे॥ भ० ॥ श्री० ॥ ए ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मत करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवलो, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाईरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, फेर खमासमणे ॥ इछाका० ॥ सं ॥ भ० ॥ देवसि प्रायछित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे, करेह. पीछें इछं कहकें देवसि प्रायछित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थु० ॥ कहै शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारीकें लोगस्स कहे.

ए॥ पीछें खमासमण देकर इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ समस्त खुद्दोवद्दवउड्डावणछं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कही. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारिकें ॥ प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देईकें ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं ॥ एसा कह कर थंभण पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीथंभण पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥ ५१

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः

शिवफलः स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥पार्श्व नाथो जगन्नाथो, नित्यंनाथो नृणां श्रिये ॥२॥ इति ॥

पीछें नमोत्थुणं सेंलेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछे खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंभणयठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ श्रीथंभणयठियपाससामिणो ॥ ५२

॥ श्रीथंभणयठियपाससामिणो सेस तित्थसामीणं ॥ तित्थ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसमहं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुठियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंभणापार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खडे होके वंदण व० ॥ अन्नत्थू० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करिकें पीछे पारी प्रगट लोगस्स कहीकें ॥ श्री खरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहिकें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछे प्रगट लोगस्स कहकें ॥

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहिकें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीछे प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें मावो गोडो

उंचो करिकें खमासमण देकें, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्य-
वंदन करुं जी. एसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥ ५३

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, दुज्जय-मयण-वाण मुसुमूरण ॥ सरसपियंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पास भुवणत्तयसामि य ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणिकिरणालि-द्धउ ॥ नं नव जलहरतडिल्लयलंछिय, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसि-द्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछे नमुत्थूणंसें लेकें जयवीयराय पर्यंत कहके पडी, चउमासी और संवछरीके रोज तो वडी शांति सुणे, परंतु और दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥ ५४

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ॐमिति निश्चित-वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥

सर्वदुरितौघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहभूत-
पिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र, प्रधा-
नवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च
नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति, विजये
सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे
भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्याणमंगलप्रददे ॥
साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां
कृत सिद्धे, निवृतिनिर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अभय प्रदान-
निरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां,
शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रतिमति-
बुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च
जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धिनि ! जय देवि
विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधर, दुष्ट–ग्रह–राज–
रोगरणभयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः
॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु
सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं
॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु
कुरु जनानाम् ॥ ॐमिति नमो नमो ह्रॉं, ह्रीं ह्रूँः ह्रः यः क्षः ह्रीं
फुट् फुट स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता
जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै
॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥
सलिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥
यश्चैनं पठति सदा, श्रृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥

हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ पीछे चीराकका अथवा वीजलीका चांदणा पमा होय तो इरियावहि० ॥ तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहिके, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछे प्रगट लोगस्स कही पूर्वकी परें सामायिक पारे. एक स्तवन दादाजीको कहे देवसी पमिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ श्रीभुवन देवताकी थुइ ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी, निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ आथुइ मकान वदले तो कहे ॥

अन्यथा नहि कहे.

॥ अथ श्री वरकनक पाठ प्रारंभः ॥

ॐ वरकणय संखविद्दुम, मरगय घणसन्निहं विगय मोहं, सत्तरिसयंजिणाणं, सव्वामरपूइयं वंदे स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ भवणवइ वाणमंतर, जोइसवासी विमाणवासीय, जे केवि दुट्ठदेवा, ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ वीशस्थानकस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ आदीसर अलवेसरजगपतिभविमनसायर चंदा जी ॥ सेत्रुंजमंमण दुःख विहंमण अद्भुत ज्योतिसोहंदा जी ॥ सुखसंपति कारण जगततारण सेवे सुरनर इंदा जी ॥ करुणाकर जिन-

वर उपगारी कामित सुरतरु कंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंतसिद्धप्र-
वचन आचारजस्थविरपाठकमन आणोजी ॥ साधुनाण दंसण-
दसमो–पद विनयचारित्र वखाणो जी ॥ ब्रह्मक्रिया तप गोयम
जिनपद समाधिअपूर्वश्रुतजाणो जी ॥ श्रुतभक्ति तीरथ प्रभा-
वन वीसथानक पहिचानो जी ॥ २ ॥ श्रीमुखवीर जिनेसर
भाखे ए पद सेवो प्राणी जी ॥ तीर्थंकरपद एहथी लहियै
जिन आगमनी वाणी जी ॥ ज्ञाता अंगे गणधरदेवे विवरीने
घणीआणी जी ॥ ए आराधनथी सिव लहियै निरुपमसुखनि-
सानीजी ॥ ३ ॥ तीन काल पांचेशक्रस्तव देव वंदन विधि
कीजे जी ॥ काउसग्गपरदक्षिणा गुणनो विधिसुं जिनपूजीजे
जी ॥ खमासमण विहुं टंकपडिक्कमणो स्तवना नित्य सुणीजे
जी ॥ कृपाचंद्र सुयदेवि पसाये मन वंछित फल लीजे जी
॥ ४ ॥ इति ॥ वीसथानक स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ श्री बीजनी स्तुति ॥

॥ मनसुद्ध वंदो भावेभवियण श्रीसीमंधर राया जी ॥
पांचसैं धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयां-
शनरपति सत्यकि नंदन वृषभ लंछन सुखदायाजी ॥ विजय
भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पाया जी ॥ १ ॥ काल
अतीत जे जिनवर हूवा होस्ये जेह अनंता जी ॥ संप्रतिकाले
पंचविदेहे वरतेवीस विख्याता जी ॥ अतिशयवंत अनंत गुणा-
कर जगबंधव जगत्राता जी ॥ ध्यायकध्येय स्वरूप जे ध्यावे
पावे शिव सुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्री अरिहंत प्रकाशी
सूत्रे गणधर आणी जी ॥ मोहमिथ्यात्व तिमिरभरनाशन

अनि नव सूर समाणी जी ॥ नवोदधि तरणी मोक्ष नीसरणी नयनिक्षेप सोहाणी जी ॥ ए जिन वाणी अमिय समाणी आराधो नविप्राणी जी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवि श्रीपंचांगुलिमाई जी ॥ विघन विफारणी संपत्ति कारणी सेवक जन सुखदाई जी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जगजसज्योतिसवाईजी सानिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥ बीज स्तुतिः ॥ २ ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचमि गति दातार । उत्तम पंचमि तप विधि दायक ग्यायक नाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित वांछित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिणंदसु वंदो आणंदो नविपक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंचमहाश्रवरोधक बोधक नव्य उदार ॥ पंच अणुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दमि सिव पुहता, ते सगला जिनराय ॥ पंचमी तप धर नवियण ऊपर सुथिर करो सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर युगवर पंचम गणधर वांण ॥ पंच ज्ञान विचार विराजित नाजित मद पंच वाण ॥ पंचम काल तिमिरनरमांहे दीपक सम सोनंत ॥ पंचमी तप फल मूल प्रकाशक ध्यावो जिनसिद्धांत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवा कारक जे नरनार ॥ वलि निरमल पंचमी तप धारक तेह नणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिका देवी अह निस आपो सुख अमंद ॥ श्रीजिनलान सुरिंद पसायै कहै जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमि स्तुतिः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअष्टमीनी थुइ ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्राप्रभुजीनी सेव ॥ मूरति मंन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां दुख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र, पूजे प्रभुजीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोमी गुण गाय ॥ नंदीसर द्वीपे, मिल सुरवरनी कोम ॥ अठाही महोछव, करतां होमा होम ॥ २ ॥ सेत्रुंजा सिखरें, जाणी लाभ अपार ॥ चौमासे रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ भवियणनें तारे, देइ धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पिण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोषो पडिक्कमणो करिये व्रत पचरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थायें, दिन २ कोम कल्याण ॥ जिनसुखसूरि कहै इम शासनसुरीय सुजाण ॥ ॥ ४ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीइग्यारस स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेसर दीक्षा नमीजिन ज्ञान ॥ श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ॥ ए पंच कल्याणक समरीजै जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार ॥ इग्यारे वारे प्रतिमा देशक धार ॥ इग्यारे दुगणा दोय अधिक जिनराय ॥ मन सुधे सेव्यां सब संकट मिटजाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारै कीजे व्रत उपवास ॥ वलि गुणनो गुणियै विधिसेती सुविलास ॥ जिनआगमवाणी जाणी जगत प्रधान ॥ एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवणवण

सनवंत ॥ जिनचंद्र सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलने आराधक बहु जाण ॥ जिन शासनदेवी देव करो कल्याण ॥ इति ॥ इग्यारस स्तुति ॥ ४ ॥

॥ अथ पक्खीचौदश स्तुति ॥

प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छचौरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चौदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम जिम संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिन पूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चौदस जोवो चतुर सुजान ॥ इण पर ठाम ठाम तुम देखो चौदस पाखी होय. भूला कांइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रे केरी साख, भविक जीव इक आराधो टीका चूर्णी भाष्य ॥ आवस्यकसूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद-पुरवधर इन पर बोले ते निश्चय मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुत-देवी इक मन आराधो मन वांछित फल होय, जे जे आज्ञा-सूधी पाले ज्यानो विघन हरेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगच्छ मंडण कुमति विहंडण माणि-क्यसूरि गुरूराय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पर्युपणापर्वस्य स्तुतिः प्रारंभः ॥

। वीरजिनेसर जग अलवेसर, राजग्रही समोसरियाजी ॥
गु ८ इण परिभाखे, चउविहसंघ परिवरियाजी ॥ आषा-
ढम ी पच्चाश, दिननी संख्या जाणोंजी ॥ संवछरि पडि-
ए करीनें, आतम निजघरआणोंजी ॥ १ ॥ दोयराता

दोय धोला जिनपति, दोय काला दोय नीलाजी ॥ लांछनवरण प्रमाण सूशोभित, सोले जिनवर पीलाजी ॥ सत्तरभेदी पूजा करीने, चैत्यप्रवाडी कीजेजी ॥ पर्वपजुषण पूरवपुन्ये, पाम्या लाभ जाणीजे जी ॥ २ ॥ कल्पसूत्र निजघर पधरावी, रात्रिजागो तिहां कीजेजी ॥ वरघोडो सजिसंघमलीने, सद्गुरुनें आणी दीजेजी ॥ नव-इग्यारह-तेरह-वायणा, निसुणी दुर्गति वारोजी ॥ पूजा प्रभावना सद्गुरु भक्ति, करिनें जन्म सुधारोजी ॥ ३ ॥ साहमी वछल करियें भावे, वारंवार उजमंताजी ॥ केई शीयल-तप-संयम-पाले, भाव अधिक उलसंताजी॥आठ दिवस पर्युषण सेवो, जिम सेवे सूर इन्दाजी ॥ सुयदेवी सुपसाये भाखे, जिन कृपाचन्द्रसूरीन्दाजी ॥४॥ इति पदम् ॥

इति पदम्

भावा नयाणेग नरिंद विंद । सविंद संपुजा पयार विंदं ।
वंदे जसो निज्जिय चारु चंदं । कल्लाण कंदं पढमं जिणंदं ॥ १ ॥
चित्तेगहारं रिउदप्पदारं । दुक्खंगिवारं समसुक्ख कारं ।
तित्थेसरा दिंतु सया निवारं । अपार संसार समुद्दपारं ॥ २ ॥
अन्नाण सत्तु खलणे सुवप्पं । संजुत्ति संहिलिय कोहदप्पं ।
संसेमि सिद्धंत महो अणप्पं । निव्वाणमग्गेवरजाणकप्पं ॥ ३ ॥
हंसाहिरूढा वर दाणधन्ना । वाईसिरिणाण गुणोऽवि वन्ना ।
निच्चंऽपि अम्ह हवउ पसन्ना । कुंदिंदु गोखीरतुसार वन्ना ॥ ४ ॥

॥ अथ चतुर्दशी स्तुति ॥

॥ अविरल कमल गवल मुक्ताफल कुवलय कनकभासुरं ॥ परिमल बहुल कमलदल कोमल पदतललुलितनरेश्वरं त्रिभुवन

ज्ञवन सुदीप्रदीपक मणिकलिका विमल केवलं ॥ नवनव युगलजलधि परमित जिनवरनिकरं नमाम्यहं ॥ १ ॥ व्यंतर नगर रुचिक वैमानिक कुलगिरि कुंमसकुंमले ॥ तारक मेरुजलधि नंदीसर गिरि गजदंतसु मंमले ॥ वक्षस्कार ज्ञवन वन जोत्तर कुरुवैताढ्य कुंजिगा ॥ त्रिजगति जयति विदितशाश्वतजिननतिततिरिहमोहपारगा ॥ २ ॥ श्रुतरत्नैक जलधि मधु मधुरिम रसज्ञर गुरु सरोवरं ॥ परमततिमिरकिरणहरणोद्धुर दिन कर किरण सहोदरं ॥ गमनयहेतुजंगगंजीरिमगणधरदेव गीष्पदं ॥ जिनवर वचन मवनिमवतात् शुचिदिशतु नतेषु संपदं ॥ ३ ॥ श्रीमहीर चमर तीर्थाधिप मुखकमलाधिवासिनी ॥ पार्वण चंद्र विशद वदनोज्वल राज मराल गामिनी ॥ प्रदिशतु सकल देव देवी गण परिकलिता सतामियं ॥ विच कलधवल कुवलकल मूर्त्तिः श्रुतदेवी श्रुतोच्चयं ॥ ४ ॥ इति चतुर्दशीस्तुति ॥ २ ॥

॥ राग रेखता ॥

॥ आये प्रज्ञास पाटण में, चंद्रप्रज्ञुकादरस पाया ॥ वरस उगणीस गुणसठे, चरणकज देख सुख पाया ॥ आ० ॥ १ ॥ माघवदि दूजके दिवसै, फरस कर कीन सुचि काया ॥ गये सव पाप अव मेरे, हरखसे प्रज्ञुका गुण गाया ॥ आ० ॥ २ ॥ संज्ञवजिनराज मन मोहै, पारसछवि स्यामवरण छाया ॥ सांति प्रज्ञुसांतिमुज दीजे, परम शिवमह्नि प्रज्ञु पाया ॥ आ० ॥ ३ ॥ चरम प्रज्ञु वीरजी राजै, आदि जिनराज मन ज्ञाया ॥ अजितजिन देख मन हरखे, नेम कीसीस ग्रही छाया ॥ आ० ॥ ४ ॥ जगतमें देव सव निरखे, मेरे दिल कोइ नही ज्ञाया ॥ प्रवल

भये पुन्य अब मेरे, जगत गुरु देव मन ध्याया ॥ आ० ॥ ५ ॥ अमृत समयुक्ति शासन की, तहत्त कर चित्त ठहराया ॥ मुझे है आस शिवपुरकी, कृपायुतचंद उल्लसाया ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥ पदम् ॥ १ ॥

॥ राग तमाखू ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिणचंद, वामा नंदन भेट्यारे, साहिवा ह्मांरा भाव शुं रे ह्मांरा राज जीव० अश्वसेन कुल चंद, पाप करम सब मेट्यारे ॥ साहि० ॥ अनादिनारे ॥ ह्मां॥ १ ॥ जी० ॥ मूरती मोहन वेल, नील वरण तनु छाजेरे ॥ सा० ॥ सोहामणीरे ॥ ह्मां० ॥ जी० ॥ मुख छवि अगम अपार, पूनिम निशि जिमराजै रे ॥ सा० ॥ रजनी करू रे ॥ ह्मां० ॥ २ ॥ जी० ॥ नयन अमीरसरेल, कामण गारा प्यारा रे ॥ सा० ॥ ॥ मन हरू रे ॥ जी० ॥ ह्मा० ॥ भाल विशाल रशाल, अष्टमी शशि सुख कारारे ॥ सा० ॥ भव्य चकोरने रे ॥ ह्मा० ॥ ३ ॥ जी० ॥ चिंतामणी प्रभु पास, लोद्रवपुरमें वीराजै रे ॥ सा० ॥ सुख करु रे ॥ ह्मा० ॥ सहसफणा महाराज, दरसण वांछित काजै रे ॥ सा० ॥ दुःख हरु रे ॥ ह्मा० ॥ ४ ॥ जी० ॥ संघ-मिल्यो बहु थाट, हेजै घणे गह गाटे रे ॥ सा० ॥ हरख शुं रे ॥ ह्मा० ॥ जी० ॥ अष्ट दिवस उछरंग, रथयात्रा बहुरंगे रे ॥ सा० ॥ उमंग शुं रे ॥ ह्मा० ॥ ५ ॥ जी० ॥ दीठो तुम दीदार, हिव प्रभु मुजने तारो रे ॥ सा० ॥ हित धरी रे ॥ ह्मा० ॥ जी० ॥ तुम सम अवरन देव, दीठो नही सुखकारो रे ॥ सा० ॥ जगतमां रे ॥ ह्मा० ॥ ६ ॥ जी० ॥ तुम पद पंकज सेव,

नव नव मुजने मिलज्यो रे ॥सा०॥ शुहं करु रे ॥ह्मा०॥जी०॥ एहीज सुणी अरदास वांछित पूरणकर ज्योरे रे ॥सा०॥ह्मा०॥ कृपा करी रे ॥ ह्मा० ॥ ३॥ इति पदम् २ देशी धूमररी ॥ २ ॥

आदि जिनंद नित पूजीयै एतो विमलाचल गिरिरायो हे माय ॥ नाभिराय कुल चंदलो, एतो मरुदेवी कूखै जायो हे माय ॥ आ० ॥ १ ॥ नगरी वीनीता नो धणी, एतो आदीश्वर सुखकारी हे माय ॥ अष्टापदै मुगते गया, एतो भविजन काज सुधारीहे माय ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रभु दरिसण जलधार सै, एतो भविसारंग उलसावै ए माय ॥ दरसणविन किरिया सहु, एतो सिव साधन नवि थावे हे माय ॥ आ० ॥ ३ ॥ सजी सिणगार मनोहरु, एतो गौरिमंगल गावे हे ॥ आ० ॥ द्रव्य भाव जिन-राजनी, एतो पूजा करी सुख पावै है माय ॥ आ० ॥४॥ वसुदिन उछव रंगसुं, एतो दिन दिन संघ सवायो है माय॥पंचम अंग पूरण करी, एतो कृपाचंद गुणगायो है ॥ माय ॥आ०॥५॥ इति पदम्॥३॥

॥ इक दिन पुंडरीक गणधरुं रे लाल ॥

॥ ए–देशी ॥

॥ वीर जिनेसर सांभलोरे ॥ लाल० सेवकनी अरदास सुख-कारी रे ॥ तारकविरुदसुहामणो रे लाल० सुणी आयो तुम पास उपकारी रे० वीर ॥ १ ॥ साहिब सुनिजर कीजियेरे ॥ ला० ॥ मुजपर गरीब निवाज ॥ सु० ॥ मन मोहन महिमा निलोरे ॥ ला० ॥ तुमसेवा सुखकाज ॥ उ० ॥ वी० ॥ २ ॥ काल अनादि लगै भम्योरे ॥ ला० ॥ भव अटवी विषम अगाध ॥ सु० ॥ क्रोधादिक स्वापद जिहांरे ॥ ला० ॥ प्रति

प्राणिने दे बाध ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ इंद्रिय विषय कंटक तिहारे ॥ लाल० ॥ दूर्द्धर साल समान ॥ सु० ॥ चजगइ मारग चालतांरे ॥ ला० ॥ मोह करे हैरान ॥ ज० ॥ वी० ॥ ४ ॥ काल आहेमी केमे पड्योरे ॥ ला० ॥ छलताके निसदीस ॥ सु० ॥ ए आपदथी उद्धरो रे ॥ ला० ॥ तुम मोटा जगदीश ॥ ज० ॥ वी० ॥ ५ ॥ जडे सर जले जावसुं रे ॥ ला० ॥ जेव्या श्रीजगवंत ॥ सु० ॥ तेवीसम जिन सुख करूरे ॥ ला० ॥ महिमा वंत महंत ॥ ज० ॥ वी० ॥ ६ ॥ बावन देहरीमां दीपतारे ॥ ला० ॥ मनोहर श्रीजिनराज ॥ सु० ॥ अद्भुत दीठो देहरो रे ॥ ला० ॥ मांनु नवीन रच्यो आज ॥ ज० ॥ वी० ॥ ७ ॥ दंम कलश शोहे सदारे ॥ ला० ॥ धजा पताका लहकंत ॥ सु० ॥ मांमणीजोतां एहनीरे ॥ ला० ॥ जवि मनमां हरखंत ॥ ज० ॥ वी० ॥ ८ ॥ पूरव पुन्यथी पामीयोरे ॥ ला० ॥ अनुपम जिन मुखचंद ॥ सु० ॥ कछ मंमन श्रीजगधणीरे ॥ ला० ॥ वंदे नित कृपाचंद॥ज०॥ वी०॥ए॥ इति जडेसर मंमन महावीर स्तवनम्॥४॥

॥ राग अय मन ठुमरी ॥

श्रीगिरिराज आज निहाले, कामित पूरण वांछित दाइ ॥ पूरणपुन्य उदयजयो सजनी, उज्जलगिरिकी यात्रा पाइ श्री० ॥ १ ॥ नाजिको नंदन जगत दिवाकर, इण तीरथपर आये चलाइ ॥ पूरवनिवाणुं श्री जगदीश्वर, रायणतल निज पगला ठाइ श्री० ॥ २ ॥ महिमावंत महंत विराजै, श्रीशत्रुंजय जेटो जाइ ॥ श्रीमुखवीर जिनेसर जाखै, सोहमपतिमन अधिक सुहाइ श्री० ॥ ३ ॥ सूरिधनेसर महिमा वरणी, पंचम गणधर

सम्मति लाइ ॥ द्रव्य भावविधि पूजन करिये, अष्टसिद्धि नवनिद्धि घर आइ श्री० ॥ ४ ॥ नंद–वाण–निधि–चंद्र–संवछर-चैत्री पूनिम यात्रा पाइ ॥ फूलचंद संघ सहित जिनभेटे, कृपा, चंद गिरि सिवसुखदाइ श्री० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥

॥ वीसथानक चैत्यवंदन ॥

श्री अरिहंत अनंत कांति सिद्ध निज गुण रामी ॥ प्रवचन आचारज स्थविर उवज्झाया हितकामी ॥ साधुनाण दंसण नवम विनय चारित्र वखाणो ॥ ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिन वेयावच्च जाणो ॥ १ ॥ समाधि अपूरव ज्ञान ग्रहे श्रुत भक्ति नित सार ॥ तीर्थ प्रभावन वीसमो निरुपम सुख दातार ॥ प्रथम चरम जगदीश सकल सेवी सही संपदा ॥ इक दो त्रण पद जपी वावीस जिनवर पद मुदा ॥ २ ॥ ए विंशतिथानक कह्याए ज्ञाता ये जिनचंद ए सेवनथी भवि लहै त्रिभुवनपति कृपा-चंद ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ १ ॥

॥ देशीकी चालमे ॥

॥ सदगुरु पूजन जावस्यां ॥ ह्लेतो कुशल सुरिंदगुणगास्यां हे माय स० ॥ श्रीफल भेटचढावस्यां, ह्लेतो चरणांरी पुजरचास्यां हे माय ॥ स० ॥१॥ मारुदेशमे शोभता, एतो नगर विकाणेराजे हे माय ॥ गाम गढाले दीपता, ज्यांरी महीयल महिमाछाजै हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समर्यां संकट चूरता, एतो कुशल करण अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघने, एतो खरतरगच्छ अधिकारी हे माय ॥ स० ॥३॥ दूर देशांतरथी घणा, एतो हिल मिलयात्री आवे हे माय ॥ लुलु २ सीस नमावता, एतो संतसुजस-

मिल गावे हे माय ।।स०।।४।। सकसिणगार मनोहरु, एतो ठमठम पाय ठमकावे हे माय ।।स०।। तनमन प्राण लोभावती, एतो गोरी मंगल गावे हे माय ।। स० ।। विछड्यां साजनमेलवै, एतो अनमी पाय नमावे हे माय ।। मनरा मनोरथ पूरवे, एतो ।। परघल लखमी ल्यावे हे माय ।। स० ।।६।। विषमी वेला वाटमें, एतो समर्यां सानिध आवे हे माय।भूखां भोजन मेलवे, एतो तिसिया नीर मिलावे हे माय ।। स० ।। ७ ।। यात्री आवे नितनवा, एतो थान आगल थिर थाट हे माय, सीरणीयां नित सांमठी, एतो गावे गुणगहगाटे हे माय ।। स० ।। ८ ।। कुशलसूरिंद गुरु आगले, एतो भवि मिल भावना भावे हे माय । चंदफते मुनि नित नमें, एतो परमानंद सुख पावे हे माय ।। स० ।। ९ ।। इति सं० ।।

॥ अथ पांच शक्रस्तव देव वन्दन विधि लिं० ॥

प्रथम चैत्यवन्दन करे नमोत्थुणं सवे तिविहेण वन्दामि तक कहै, पीछे इरियावही कहके, चार नवकारको काउसग्ग करके लोगस्स कहै, फिर चैत्यवन्दन करके 'नमोत्थुणं' कहै, पीछै अरिहंत चेइयाणं० वन्दन वत्तियाए अन्नत्थू० कहके एक नवकारको काउस्सग्ग करे, एक थुइकी गाथा कहके लोगस्स० वन्दन० कही दूजी थुई कहै फिर पुक्खरवरदी० वंदण वत्ति० कह तीजी थुई कहै, फिर सिद्धाणं बुद्धाणं० अन्नत्थु कही एक नवकारको काउस्सग्ग करी चौथी थूई कहै, पीछै बेठके तीसरी वेर 'नमोत्थुणं' कहै पीछै खमा होके इसतरे वंदणवत्तियाए प्रमुख संपूर्ण पूर्वकी तरेसें थुई कहके फेर बेठके चौथी वेर नमोत्थुणं नमोऽर्हत् सिद्धा० तक कहके वभो स्तवन आवे सो कहे

जगतमें आपसमो नहि कोई ॥ में देखा नेन जर जोई ॥ १ ॥ विरुद जूमंऋले गाजे । फरसतां पापसहु जाजे । पूजतां संपदा पावे ॥ अचिंती लछि घर आवे ॥ २ ॥ एके मुखे गुण कहुं केता ॥ मुझे हीये ग्यान नहि एता ॥ लालचंदकी अरज सुण लीजे ॥ चरणकी जक्ति मोहि दीजै ॥ ३ ॥ राजैथुंज ठोरठोर, देव नहि और, दादो दादो नामसें. जगत्र जश गायो है ॥ आपणेंही जाव आय, पुजै लख लोकपाय प्यास नकों रन्नमां हे, पाणी आन पायो है ॥४॥ वाट घाट शत्रुदाट हाट पुरपट्ट-णमे देवगेहनेहसुं कुशल वरतायो है॥धरमशीह ध्यान धरै सेवकां कुशल करे साचो श्रीजिन कुशलसूरि नामयुं कहायो है॥ ५ ॥

॥ अथ चैत्री पूनम थुइ ॥

॥ शेत्रुंजय गिरि नमिये रुपजदेव पुंमरीक ॥ शुज तपनी महिमा, सुणि गुरु मुख निरजीक ॥ शुध मन उपवासे वधिसुं चैत्यवंदनीक करियै जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दशवीस, अक्षत गिणती से, चढता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा जाखे इम जगदीस, तेहीज नित प्रणमुं स्वामी जिन चउवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चैत्रमास शुजवार,विधिसेती लहिये आगमसाख विचार,इम सोलवरस लग धरियै ज्ञान उदार, करतां नरनारी पामें जवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तनु चरणे नयणे तिम अरविंद, चक्केसरि देविय सेविय नरसुर वृंद, कामित सुखदायक पूरय मन आणंद ॥ जंपे गणनायक श्रीजिनलाज सूरिंद ॥४॥इति श्री चैत्रीपूनम थूइ ॥

॥ इति राई देवसी पमिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इसतरें पच्चक्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं मुठसहियं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं वा पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चक्खाण ॥ १ ॥

तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका ओर देसावगासिकका आगार न पच्चक्खे. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चक्खाण करे. सो लिखते हैं

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चक्खाण ॥ १ ॥ आगार ॥ २ ॥

पोरसिं मुठसिं पच्चक्खामि, उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थ० ॥ सहस्सा० ॥ पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगइओ पच्चक्खामि. इत्यादि पूर्व्वकी परें कहणां ॥ इति पोरसी पच्चक्खाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

इस माफक साढ पोरसीका पच्चक्खाण जाणना. इतना विशेष

है, पोरसिं पच्चरकाइके ठिकाने इहां साड्ढपोरसिं पच्चरकाइ कहणां ॥ इति साड्ढपोरसिपच्चरकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चरकाइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० ॥ पच्छ० ॥ दिसामो० ॥ ७० ॥ मह० ॥ सव्व० ॥ विगइओ पच्चरकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमड्ढपच्चरकाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

पोरसिं साड्ढपोरसिं वा पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं विआसणं वा पच्चरकाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह० सागारिआगारेणं आउट्ट-णपसारेणं गुरुअप्भुट्ठाणेणं पारि० मह० सव्व० देसावगासियं० इत्यादि पूर्व्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसणा पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

पोरसिं साड्ढपोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० पछन्नका० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगट्ठाणं पच्चरकाइ. दुविहं तिविहं चउ-व्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह० सागारिआगा-रेणं गुरुअप्भुट्ठाणेणं पारिट्ठाव० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्व्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चरकाण आगार ॥ ७ ॥

पोरसिं साड्ढपोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आ-हारं असणं पाणं खाइमं सा० अन्न० सह० पछ० दिसामो० साहु०

सव्व० आयंबिलं पच्चक्खाइ. अन्नत्थ० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसं-सिट्ठेण उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठा० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

पोरसिं साड्ढपोरसिं वा पच्चक्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० निव्विगइयं पच्चक्खामि. अन्न० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारि० मह० सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति नीवी पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ९ ॥

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० पारिट्ठावणियागारेणं मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि. अन्न० सह० स० सव्व० वोसिरामि ॥ ८ ॥ इति चउव्विहार उपवास पच्चक्खाण ॥ ९ ॥

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह० पारि० मह० स० पाणहार पोरसिं साड्ढ पोरसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अण्ण० सह० पच्छण्ण० दिसा० साहु० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि, अ० स० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चक्खाण ॥

पोरसिं साड्डपोरसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चरकामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चरकामि. तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० सागा० आउ० गुरु० पारि० मह० सव्व० विगइओ पच्चरकामि. इत्यादिपूर्ववत्.

व ि इत्यादि पूर्ववत् ॥ ९ ॥ इति दत्तिपच्चरकाण ॥ ८ ॥

दिवसचरिमं पच्चरकाइ. चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं .ाइ अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम रका ॥ १० ॥

दिवसचरिमं पच्चरकामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अण्ण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति दिवस-चरिम दुविहार पच्चरकाण ॥ १० ॥

पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसि-रामि ॥ इति पाणहार पच्चरकाण ॥ १० ॥

भवचरिमं पच्चरकाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवचरिम दो आगारकाभी होय ॥ इति भवचरिम पच्चरकाण ॥

तथा इमहिज गंट्ठिसहियं मुट्ठिसहियं अंगुट्ठसहियं प्रमुख अभिग्रह पच्चरकाणकेभी ए चार आगार. अण्ण० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्च० ॥

अहण्णं भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चरकामि दव्वओ त्तओ कालओ भावओ दव्वओणं देसावगासियं खित्तओणं इत्थ

वा अण्णत्थवा कालओणं मुहुत्तधारणापरिमाणे जावनियमं पच्चरकामि भावओणं जावगहेणं न गहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि अण्णेण केणवि रोगायंकेण वा एसो परिणामो न पडिवडइ ता अभिग्गह अण्णत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चरकाण ॥

तथा साधु पच्चरकाण करे. तब देसावगासी नही पच्चखे अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका छ आगार पच्चरके सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवाडेण वा अलेवाडेण वा अच्छेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

दोचेव नमुकारो, आगारा छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवय पुरिमड्ढे, एगासणंमि अट्ठेव ॥ २ ॥ सत्तेगट्ठाणस्सउ, अट्ठेवय आयंबिलंमि आगारा ॥ पंचेवयभत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिग्गहे, निवीए अट्ठ नवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार सं० ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते तत्र प्रथमं ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयंमंगुलभावे, तेहं विउलतवनिम्मलसहावे ॥ निरुवममहप्प भावे, थोसामि सुदिट्ठसप्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्वदुरकप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं ॥ सयाअजियसंतीणं नमो अजियसंतिणं, ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं

॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअ कम्मकिलेसविमुं-रकयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजि-अस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयंच नमंसणियं ॥ ५ ॥ आलिंगणियं ॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइअ विमग्गह सुक्खकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ-रइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवई पययपणि-वइअं ॥ अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवस-रिअ भुवि दिविज्जमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तमगुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समा-हिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथिअं थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाण वरगंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थबाहुं धंतकण-गरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं सुइसुह-मणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवो हरिउं ॥ पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासा-लुद्धओ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कव-ट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरणिगमजण-

५ ... वत्तीसारायवरसहस्साणुआयमग्गो चउदसवररयणनवमहा-निहि चउसट्ठिसहस्सपवरजुवईणसुंदरवई चुलसीहयगयरहसय-सहस्ससामी छण्णवइगामकोडिसामी आसिजोभारहंमि भयवं

॥ ११ ॥ वेढओ ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव्वभया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इक्खागु-विदेहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगयतमा विहुअरया ॥ अजियउत्तम तेअगुणेहिं महामुणि, अमियबला विउलकुला ॥ पणमामि ते भवभयमूरण, जगसरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचंदसूरवंदहठ्ठतुठ्ठजिठ्ठ-परम, लठ्ठरूवधंतरुप्प पट्टसेअसुद्धनिद्धधवल ॥ दंतपंतिसंतिसत्तिकित्तिमुत्ति जुत्तिगुत्तिपवर, दित्ततेअविंदधेअसव्वलोअभावि अ प्पभावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्प-वराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं ॥ तवसंजमेअ अजिअं, एस थुणामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ नतं नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ नतं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजण थुअच्चिअं चुअकलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयओ, संति महं महामुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय सिरिरइ अंजलि, रिसिगण-संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ, थुअ महि अच्चिअं बहुसो ॥ अइरुग्गयसरयदिवायर, समहिअ सप्पभं तवसा ॥ गयणं-गणवियरणसमुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडिसयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुयं ॥

॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअ कम्मकिलेसविमुं-
रकयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजि-
अस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ
कारणयंच नमंसणियं ॥ ५ ॥ आलिंगणियं ॥ पुरिसा जइ
दुरकवारणं, जइअ विमग्गह सुरककारणं ॥ अजिअं संतिं च
भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ-
रइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवई पययपणि-
वइअं ॥ अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवस-
रिअ भुवि दिविजमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च
जिणुत्तमुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ॥
संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समा-
हिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि
मत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथिअं थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाण
वरगंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थबाहुं धंतकण-
गरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलरकणोवचिअ सोमचारुरूवं सुइसुह-
मणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥
वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवो हरिउं ॥
पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासा-
लुद्धओ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कव-
ट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवय-
५ ६ बत्तीसारायवरसहस्साणुआयमग्गो चउदसवररयणनवमहा-
चउसठ्ठिसहस्सपवरजुवईणसुंदरवई चुलसीहयगयरहसय-
सहस्ससामी छण्णवइगामकोडिसामी आसिजोभारहंमि भयवं

वरच्छरसावहुआहिं, सुरवररइगुणपंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंससद्दतंतिताल मेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसएकएअ, सुइ-समाणणेअसुद्ध सज्जगीअपायजालघंटिआहिं ॥ वलयमेहलाकलाव-नेउराभिराम सद्दमीसए कएअ देवनट्टिआहिं ॥ हावभावविब्भमप्प-गारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअ जवमंडिआ झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा ॥ दीवसमुद्द मंदिर-दिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूलपावया ॥ संथुआ अजिअ संति पावया, हुंतु मे सिवसुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तवबलविउलं, थुअं मए अजिअ संति जिण जुयलं ॥ ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं मुक्खसुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाविअ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमेनंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संव-च्छरिए राइए अ दिअहेअ (अवस्स भणिअव्वो) ॥ सोअव्वो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपिअजिअसंतिथुअं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम पयं, अहवाकित्ति सुवित्थडां

अजिअं अजिअं पयओ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगया-
वरविमाणदिव्वकणगरहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं ॥ ससंभमो अरण
क्खुभिअलुलिअचलकुंडलं गयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥ २२ ॥
वेढओ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसु जुत्ता, आयर
संभमपिंडिअ सुट्ठुसुविम्हिअसव्वलोघा ॥ उत्तमकंचण
अ भासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणयभत्तिवसा-
गय पंजलिपेसियसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण
थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणोपयाहिणं ॥ पणमिऊणय जिणं
सुरासुरा. पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महा-
मुणिमहंपि पंजलि, रागदोसभयमोहवज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद-
वंदिअं, संतिमुत्तममहातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरवि-
आरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं ॥ पीणसोणित्थण साल-
णिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण-
निरंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणिकंचणपसिढिलमेहल सोहिअ
सोणितडाहिं ॥ वरखिंखिणिनेउरसतिलयवलय विभूसणियाहिं, रइ-
करचउरमणोहर सुंदरदंसणियाहिं ॥२७॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं
पायवंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं
मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं
चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ
पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ-
ं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअ
रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहूहिं पयओ पणमिअस्सा ॥
जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव

वरच्छरसाबहुआहिं, सुरवररइगुणपंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंससद्दतंतिताल मेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसएकएअ, सुइसमाणणेअसुद्ध सज्जगीअपायजालघंटिआहिं ॥ वलयमेहलाकलावनेउराभिराम सद्दमीसए कएअ देवनट्टिआहिं ॥ हावभावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअ जवमंडिआ झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा ॥ दीवसमुद्द मंदिरदिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूलपावया ॥ संथुआ अजिअ संति पावया, हुंतु मे सिवसुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तवबलविउलं, थुअं मए अजिअ संति जिण जुयलं ॥ ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं मुक्खसुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाविअ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमेनंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए राइए अ दिअहेअ (अवस्स भणिअव्वो) ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपिअजिअसंतिथुअं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम पयं, अहवाकित्तिं सुवित्थडां

भुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥
इति श्रीबृहदजितशांतिस्तवनं प्रथमसरणम् ॥ १ ॥

उल्लासिक्कमनक्खनिग्गयपहादंडच्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंत इव पयडं निव्वाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसओ नीहंत नाणं- ,केरे दोविदुइज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम रं जोमिणिज्जंजलीहिं, खयसमयसमीरं जो जणिज्जागईए ॥ हल्लनहयलंचालंघए जो पएहिं, अजिअ महव संतिं सो समत्थो त्थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु वहुमाणुल्लासभत्तिब्भरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व्व ॥ अलमहव अचिंताणंतसामत्थओसिं, फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं नाममित्तेण झाणं, विहडइलहु दुट्टा निट्टदोघट्टथट्टं ॥ नमिरसुर किरीडु ग्गिट्टपायारविंदे, समय मजिअ संती ते जिणिंदेभिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअपयभत्ती हीअचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वंगहारं, फुडगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज्जदंसणच्छे अभीया, इव पुणमणिवंधा कासि नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेससंती, कणयरयपसंगा छज्जए जाणिमुत्ती ॥ सरभस परिरंभारंभनिव्वाणलच्छी, घण थणघुसिणिक्कु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ वहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअलोए ताव मोहंधयारं, भमइ जय मसण्णं ताव मिच्छत्त छण्णं ॥ फुरइ फुडफलंताणंतणाणं सुपूरो, पयडमजिअसंती झाणसूरो न जाव

॥ ९ ॥ अरिकरिहरितिण्णु ण्हंवु चोराहिवाही, समरडमरमारीरुद्द खुद्दोवसग्गा ॥ पलयमजिअसंती कित्तणे झत्ति जंती, निविडतरत मोहा भक्खरालुंखिअ व्व ॥ १० ॥ निचिअदुरिअदारुदित्तझाणग्गिजाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं झाणरूवं ॥ कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चरथिर मिह लच्छि गाढसंथंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ट्ठियाणं ॥ जलिअ जलणजाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिण्णं पक्क पाइक्कपुण्णं, सयलपुहविरज्जं छड्डिअं आणसज्जं ॥ तणमिव पडिलग्गं जेजिणासुत्तिमग्गं, चरण मणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥ १३ ॥ छणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणभरनमिरीहिं मुट्ठिगिज्झोदरीहिं ॥ ललिअभुअलयाहिं पीणसोणित्थलीहिं, सयसुररमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किडिभकुट्ठ गंठि कासाइसार, खयजर वण लूआ साससोसोदराणि ॥ नहमुहदसणच्छी कुच्छिकण्णाइरोगे, मह जिणजुअपाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरुदुहतासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं ॥ पढइ सुणइ सिज्झा एह झाएइचित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणेसर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तित्थंकर सोलसम संति जिणवल्लह संथुअ, कुरु मंगल मम हरसुदुरिअमखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं सरणम् ॥ २ ॥

नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणिकिरणरंजिअं मुणिणो ॥ चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडियकरचरण-

नहमुह. निवुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुट्ठमहारोगानल, फुलिंग निदड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलिसेयवुड्ढिय च्छाया ॥ वणदवदड्ढा गिरिपायवव्व, पत्तापुणो लच्छि ॥ ३ ॥ दुव्वायखुभियजलनिहि, उब्भडकल्लोलभीसणारावे ॥ संभंतभयवि- ..., निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण वं[...] इच्छिअं कूलं ॥ पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे न- [...]ति नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धअवणदव जालावलिमिलियसयलदुम- [...] ॥ डज्झंतमुद्धमिय वहु, भीसणरवभीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोगभीसण, फुरिआरुणनयणतरलजीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजलय, सत्थहं भी- सणायारं ॥ ८ मन्नंत कीडसरिसं, दूरपरिच्छूढ विसमविसवेगा ॥ तुह नामक्खरफुडसिद्ध, मंतगुरुआनरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्लतक्कर, पुलिंदसद्दूलसद्दभीमासु ॥ भयविहुर (हलु) वुन्नकायर, उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुहनाह पणा- ममत्तवावारा ॥ ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्छियंठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नहकुलिसघायविअ लिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभमपत्थिव, नहम- णिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवड्ढिउच्छाहं ॥ महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महा- गइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे तुम्हचलणजुअलं मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्खखग्गा, भिग्घाय पविद्ध

उद्धुयकबंधे ॥ कुंतविणिभिन्नकरिकलह, मुक्कसिक्कार पउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धररिउ, नरिंदनिवहा भडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव-पसमिण, पासजिण तुहप्पभावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर, चोरारिमइंदगयरणभयाइं ॥ पासजिणनाम संकित्तणेण, पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ भवियजणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ रायभय जक्ख रक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्खपीडासु ॥ संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमिउ, सयलभुवणच्चि अ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयसरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण ॥ सम्मं पवित्तिअंभवसत्त संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअ सयलकिलेसा, निहय कुलेसा पसत्थ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाणतित्थस्स, मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म वीआ, वीआपरमिट्ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आयरिआ तह तित्थं, निहय कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वायगावायगाय, सिअवायवाय-गावाए ॥ पवयणपडिणीय कए, वणिंतु सवस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निवाणसाहणुज्जुअ, साहूणं जणिअ सवसाहज्जा ॥ तित्थप्पभावगा ते, हवंतु परमिट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं नाणं, निवाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तित्थस्स दंसणं तं, मंगलमचणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग भवंगि वग्ग कयसम्मो ॥ गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त

धम्मो, संपाविअ भवसत्त सिवसम्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयलसंघस्स ॥ ९ ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, सिवसुह मइणो कुणंतु तित्थस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपयडिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपडिवरकाजरका गोमुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ रे बंभ संति सहिआ, कय नयररका सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा [illegible], सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्झा देवीओ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअ सुअदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कयरका, जरका चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सवहासवे ॥ वेयावच्चगराविअ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग, विहिअभवाण जणिअसाहज्जा ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्तजलथल, वणपव्वयवासि देवदेवीओ ॥ जिणसासणट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासखित्तवालया, नवग्गहा सनरकत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहकालपास, कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकाल कंटएहिं सविट्टिवच्छेहिं कालवेलाहिं ॥ सवे सवत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइवाणमंतर, जोइसवेमाणिआ य जे देवा ॥ धरणिंदसक्कसहिआ, दलंतु दुरिआइ तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणासिअ तमोहं ॥ तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्जवि सासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपह सासणं कुपह, नासणं सव्व भय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसभसेण पमुहा, हयभय

निवहा दिसंतु तित्थस्स ॥ सव्वजिणाणं गणहारिणो, णहं चंच्छिअं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि वद्धमाणतित्थाहिवेण, तित्थं समप्पिअं जस्स ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयलसंघस्स ॥ २४ ॥ पयइए भद्दिआ जे, भद्दाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयर सुरा विहु सम्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिओ, सुनिठिअट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थसरणं ॥ ४ ॥

॥ मयरहिअं गुणगणरयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंतं, उवहिव थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोहजोहा, निहयविरोहा पणट्ठसंदेहा ॥ पणयंगिवग्ग दाविअ, सुहसंदोहा सुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुजइत्त सोहा, समत्तपरतित्थजणिय संखोहा ॥ पडिभग्गमोहजोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्थवाहा, हय दुहदाहा सिवंब तरुसाहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुहसाहणसज्जा, भवगिरिगुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जसुहम्मप्पमुहा, गुणगणनिवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंझं नामं नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअजिणदेवो, देवायरिओ दुरंत भवहारि ॥ सिरिनेमिचंदसूरि, उज्जोयणसूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवद्धमाणसूरि, पयडीकय सूरिमंतमाहप्पो ॥ पडिहयकसायपसरो, सरयससंकुव्व सुहजणओ ॥ ८ ॥ सुहसीलचोरचप्परण, पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सुद्धसिद्धंत, जाणओ पणय सगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लह महिवल्लहस्स, अणहिल्लवाडए पयडं ॥ मुक्काविआरिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ दसम-

च्छेरय निसिविप्फुरंत, सच्छंद सूरिमयतिमिरं ॥ सूरेणव सूरिजि-णेसरेण, हयमहिअदोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती, पयडिअगुत्ती पसंतसुहमुत्ती ॥ पहयपरवाइदित्ती, जिणचंदजईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ नवंग सुतत्थ, रयणुक्कोसों पणासिअ पओसो ॥ भवभीअ [illegible] जणमण, कयसंतोसो विगयदोसो ॥ १३ ॥ जुगपवरागम [illegible], प्परूवणा करणवंधुरोधणिअं ॥ सिरिअभयदेवसूरी, मुणिपवरो [illegible] ॥ १४ ॥ कयसावयसंतासो, हरिव्वसारंगभग्ग संदेहो ॥ गयसमयदप्पदलणो, आसाइअपवरकव्वरसो ॥ १५ ॥ भीमभवकाणणम्मिअ, दंसिअ गुरुवयणरयणसंदेहो ॥ नीसेससत्त गुरुओ, सूरीजिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ सच्चरणो, चउरणु-ओगप्पहाण सच्चरणो ॥ असम मयरायमहणो, उड्ढमुहो सहइ जस्स करो ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावओत्थ भओ ॥ गुरुगिरिगुरुओ सरहिव्व, सूरिजिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुगपवरागम पीऊसपाणि, पीणियमणाकया भव्वा ॥ जेण जिणवल्ल-हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥१९॥ विप्फुरिअपवरपवयण, सिरोमणी वूढदुव्वहखमोया ॥ जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुव्वहइ ॥ जयइजिणदत्तसूरी, सिरिनिलओ पणय मुणितिलओ ॥२१॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामकं पंचमसरणम् ॥ ५ ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणुगामिसंघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण, पुरट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयमसुहम्म [illegible]हा, गणवइणो विहिय भव्वसत्तसुहा ॥ सिरिवद्धमाणजिणतित्थ, [illegible]ते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिणवेयावच्चका-

रिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घसंघा, हवंतु ते संघसंतिकरा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणयट्ठिअपाससामि, पयपउमपणयपाणीणं ॥ निद्दलिअ दुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ दुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पडिहयपडिवक्खपक्खलक्खा ते ॥ कयसुगुणसंघरक्खा, हवंतु संपत्तसिवसुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्कापमुहा, जिणसासणदेवयाउ जिणपणिआ ॥ सिद्धाइआसमेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसासच्चउरपुरट्ठिओ, वद्धमाणजिणभत्तो ॥ सिरिबंभसंति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिहगुत्तसंताण, देसदेवाहि देवया ताओ ॥ निव्वुइपुरपहियाणं, भवाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहिपहरिउच्छिण्णकंधरा धणिअं ॥ सिवसरणिलग्ग संघस्स, सवहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सुसंघेण ॥ जिणचंदो भयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सोजयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेसरुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा भयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरुजिणवल्लहपाए, भयदेव पहुत्तदायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरवद्धमाण तित्थस्स वुड्ढिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्तगुणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसियवायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं सरणम् ॥६॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिण्णासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ भवेभवेपासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमसरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तसरणं समाप्तम् ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादावालंबनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्ज्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्याविनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंबमन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्त्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्र (चूत) कलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेदमारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥

तुल्या भवंति भवतो ननु ते न किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जल-

धरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांसमादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैः, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखमाभाति रूपममलं भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति

॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥

उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमूरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थंकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्ह-

द्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानन्तरं ॥ इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, भगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः, त्रैलोक्यपूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्योतकराः, ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीतचतुर्विंशति तीर्थकराः

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक

१४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भद्रंकर २४. एते भावितीर्थंकराः जिनाः

॥ शान्ताः शान्तिकरा भवंतु, मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेननरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वसुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ ॥ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मावती २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥

ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्म १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितवला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्प्पा १५, निर्वाणी १६, वला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंविका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४, एता वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योंपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायका ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु ॥ अस्मिंश्च भूमंडले आयतननिवासिनां साधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां, रोगोपसर्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः भवंतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु

स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं जयति शांते ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद, राजाधिपराजसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठिपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिः शुचिर्वपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया, शिवादेवी तुह्म नयरनिवासिनी ॥ अह्म शिवं तुह्म शिवं असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥२॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ इति श्रीबृहच्छांतिः समाप्ता ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्य्येभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्वपापक्षयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयेविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरींद्रो. भाषते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्व, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्य श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥७॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, नीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, न्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधी रक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥

श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्टिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी जलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडीते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरेत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं उठे परभात, च्यारघडीले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्रीनवकार, जिम पामे भवसायरपार ॥ १ ॥ कवण देवने कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म, कवण अमारो छे

व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मनमांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिकमणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोये आपणुं, ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चख्काण, सूधि पाले जिनवर आण ॥ भणजे गुणजे स्तवन सज्झाय, जिणहूंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चीतारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोसाले गुरुवंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्तलाय ॥ निर्दूषण सूजतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मिवत्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहमीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीनां देखि, करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आंखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥८॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिकानो परिहार ॥ म भरिश केनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म भाख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कहीये बत्रीश, अभक्ष्य बावीशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिभोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोहने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यतन, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ छाणां इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीरमधोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार

सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पाप तणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारीने भाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंभ, पालो शीयल तजो मन दंड ॥ १६ ॥ तेलतक्रघृतदूधने दहिं, ऊघाडा मतमेलो सही ॥ उत्तमठामें खरचो वित्त, परउपगार करो शुद्धचित्त ॥ १७ ॥ दिवसचरिमकरजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम भांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवरचरणशरणभव भवें ॥ चारेशरणकरी दृढहोय; सागारीअणसणले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथमनएहवा, तीरथशत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आटे कर्म पडे पातलां, पापतणां छूटे आमला ॥२१॥ बारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी दुःखहरणीछे एह ॥ २२ ॥ इतिश्री-श्रावकनी करणी सं० ॥

॥ अथ सेत्रुंजरास ॥

॥ श्रीरिसहेसरपायनमी ॥ आणी मन आनंद ॥ रासभणुं रलियामणो ॥ सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवतच्यार सतोतर ॥ हुवा धनेसरसूर ॥ तिणसेत्रंजमहातमकियो ॥ शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसर्या ॥ सेत्रुंजऊपरजेम ॥ इन्द्रादिक आ

गलिकह्यो ॥ सेत्रुंजैमाहातमएम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिषो ॥ नहीछे तीरथ कोय, स्वर्गमृत्यु पातालमै ॥ तीरथसगलाजोय ॥ ४ ॥ नामै नवनिधि संपजै ॥ दीठां दुरितपुलाय ॥ भेटंतां भवभयटलै ॥ सेवंतां सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैदीपए, दक्षिणभरत मझार ॥ सोरठ देस सुहामणो ॥ तिहां छै तीरथसार ॥ ६ ॥ ढाल पहिली: रामगिरि ॥ सेत्रुंजोने श्रीपुंडरीक ॥ सिद्धखेत्रकहुं तहतीक ॥ विमलाचलने करुं परणाम ॥ ए सेत्रुंजैना इकवीसनांम ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास ॥ श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास । महातीरथ पूरवे सुखकाम ए० ॥ २ ॥ सासतोपर्वतनें दृढशक्ति ॥ मुक्तिनिलो तिणकीजेभक्ति ॥ पुष्फदंत महापदम सुठाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश ॥ पातालमूल अकर्मकतास ॥ सर्वकाम कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजैनाइकवीसनाम ॥ जपैजे वेठाअपणैठांम ॥ सेत्रुंजैजात्रानो फललहै ॥ महावीर भगवंत इसकहै ॥ ५ ॥ दुहा ॥ सेत्रुंजो पहिलैअरै असीजोयणपरमांण ॥ पिहुलो मूल ऊंच पण ॥ छवीसजोयण जाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयण जाणवो ॥ वीजै अरैविशाल ॥ वीसजोयण ऊंचो कह्यो ॥ मुजवंदणा त्रिकाल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजै अरै ॥ पिहुलो तीरथराय ॥ सोलजोयण ऊंचो सही ॥ ध्यान धरूं चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयण पिहुलपण ॥ चोथै अरै मझार ॥ ऊंचो दस जोयण अचल ॥ नितप्रणमें नरनार ॥ ४ ॥ वारजोयण पंचम अरै ॥ मूलतणै विस्तार ॥ दोजोयण ऊंचो अछै ॥ सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सातहाथ छठै अरै ॥ पिहुलो परवतएह ॥

ऊंचोहोस्यै सउधनुप ॥ सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥ ढाल ॥ जिन-वरसुं मेरोमनलीणो एदेशी ॥ केवलज्ञानी प्रमुखतीर्थंकर ॥ अनंत सीधाइणठामरे ॥ अनंतवली सीझसै इणठासै ॥ तिण करु नित परणामरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजैसाधुअनंतासीधा ॥ सीझसीवलीय अनंतरे ॥ जिणसेत्रुंज तीरथ नही भेट्यो ॥ ते गरभावासकहंतरे ॥ सेत्रुंज० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमनें दिवसै ॥ ऋपभदेव सुखकाररे ॥ रायणरूंख समोसर्या स्वामी ॥ पूरवनिनाणूं वाररे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पूनमदिन ॥ इणसेत्रुंज गिरिआयरे ॥ पांचकोडीसं पुंडरीकसीधा ॥ तिण पुंडरीक कहायरे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर ॥ वेवेकोडी संघातरे ॥ फागुणसुदि दशमी दिन सीधा ॥ तिणप्रणमुं परभातरे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवदि चउदसने दिन ॥ नमिपुत्री चौंसट्ठिरे ॥ अणसणकरि सेत्रुंजेगिरि ऊपर ॥ ए सहुसीधा एकट्ठिरे ॥ से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा ॥ द्रावडने वारिखिल्लरे ॥ कातीसुदि पूनम दिन-सीधा ॥ दस कोडिसुं मुनिगिल्लरे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इणगिरिसीधा ॥ नवनारद रिपिरायरे ॥ संच प्रद्युम्न गयाइहां मुगतें ॥ आटे करम खपायरे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थंकर ॥ समोसर्या गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थंकरवेऊं ॥ रह्या चोमासोरंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ महससाधु परिवार संघातें ॥ थावच्चा सुकसाधरे ॥ पांचसे साधुसुं सेलगमुनिवर ॥ सेत्रुंजे सिवसुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंजसीधा ॥ भरतेसरनें पाटरे ॥ राम अनें भरतादिक सीधा ॥ मुक्तितणी एवाटरे ॥ से० ॥

॥ ११ ॥ जालिमयालीनेंउवयाली ॥ प्रमुखसाधुनीकोडिरे ॥ साधुअनंता सेत्रुंजैसीधा, प्रणमुंबेकरजोडिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ ढाल चोपाईनी ॥ सेत्रुंजैना कहुं सोलउद्धार ॥ ते सुणिज्यो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंगनमाय ॥ जनमजनमना पातिकजाय ॥ १ ॥ रिषभदेव अयोध्यापुरी ॥ समवसर्यास्वामी हितकरी ॥ भरतगयो वंदणनें काज ॥ ये उपदेश दियोजिनराज ॥ २ ॥ जगमांहै मोटा अरिहंतदेव ॥ चौसठइंद्रकरैं जसुसेव ॥ तेहथी मोटो संघकहाय ॥ जेहनेंप्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवीकह्यो ॥ भरतसुणीनेंमनगहगह्यो ॥ भरत कहै ते किमपामियै ॥ प्रभु कहै सेत्रुंजै जात्राकियै ॥ ४ ॥ भरत कहै संघवीपदमुझ ॥ थेआपो हुंअंगजतुझ ॥ इंद्रैंआण्या अक्षतवास ॥ प्रभुआपै संघवीपदतास ॥ ५ ॥ इंद्रैं तिणवेला ततकाल ॥ भरत सुभद्रा विहुंनैमाल ॥ पहिरावी घरसंप्रेडिया ॥ सखरसोनाना रथआपिया ॥ ६ ॥ ऋषभदेवनी प्रतिमावली ॥ रत्नतणी दीधी मनरली ॥ भरतै गणधरघरतेडिया ॥ सांतिक पोष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मुंकी सहुदेस ॥ भरत तेडायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी ॥ प्रथम-थकी रथजात्राकरी ॥ ८ ॥ संघभगतिकीधी अतिघणी ॥ संघ चलायो सेत्रुंजभणी ॥ गणधर वाहूबलिकेवली ॥ मुनिवरकोडि साथेलियावली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सगली रिद्धि ॥ भरतें साधे लीधीसिद्धि ॥ हयगयरथपायकपरिवार ॥ तेतो कहतां नावै-पार ॥ १० ॥ भरतेसरसंघवी कहवाय ॥ मारगचैत्य उधरतो

जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजे पास ॥ सहुनीपूगी मननी आस ॥११॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय ॥ मणि माणक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठामै रही महोछवकियो ॥ भरतें आणंदपुरवासियो ॥ १२ ॥ संघसेत्रुंजै ऊपरचढ्यो ॥ फरसंता पातिक झडपड्यो ॥ केवल ज्ञानी पगलां तिहां ॥ प्रणम्यारायण रूंखछै जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी सनात्र निमित्त ॥ ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी ॥ भरतें दीठी कौतुकभणी ॥ १४ ॥ गणधरदेवतणे उपदेश ॥ इंद्रैवलिदीधो आदेस ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो ॥ भरतकरायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग ॥ रतन तणी प्रतिमा मनरंग ॥ भरतै श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमाभली ॥ माहीपूनिम थापीरली ॥ ब्राह्मी सुंदरी प्रमुखप्रासाद ॥ भरतै थाप्या नवलेनाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमाप्रासाद ॥ भरतकराया गुरुसुप्रसाद ॥ भरत तणो पहिलो उद्धार ॥ सगलोही जाणै संसार ॥ १८ ॥ ढाल सिंधूडो (आसाउरी) ॥ भरत तणें पाटै आठमे ॥ दंडवीरज थयो रायोजी ॥ भरततणीपरं संघकीयो ॥ सेत्रुंजसंघवी कहायोजी ॥१॥ सेत्रुंजे उद्धार सांभलो ॥ सोलमोटा श्रीकारोजी ॥ असंख्यात वीजावली ॥ तेह न कहुं अधिकारोजी ॥ से० ॥ २॥ चैत्यकरायो रूपा तणो ॥ सोनानो बिंबसारोजी ॥ मूलगोबिंबभंडारीयो ॥ पच्छिमदिशि तिणवारोजी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जात्रा करी ॥ सफलकियो अवतारोजी ॥ दंडवीरज राजातणो ॥ ए बीजो उद्धारोजी ॥ से०॥४॥ सोसागरोपमा वितिक्रम्या ॥ दंडवीरजथी जिवारोजी ॥ ईशानें-

द्रकरावीयो ॥ एतीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथादेव लोकनो धणी ॥ माहेंद्र नाम उदारोजी ॥ तिण सेत्रुंजैनो करावीयो ॥ एचोथो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमादेवलोकनो धणी ॥ ब्रह्मेंद्र समकितधारोजी ॥ तिणसेत्रुंजैनो करावीयो ॥ ए पांचमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इंद्रनोकीयो ॥ ए छठो उद्धारोजी ॥ चक्रवर्त्तिसगरतणोकीयो ॥ ए सातमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासै सुण्यो ॥ सेत्रुंजैनो अधिकारोजी ॥ व्यंतरइंद्र करावीयो ॥ ए आठमोउद्धारोजी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु स्वामिनो पोतरो ॥ चंद्रशेखर नाममल्हारोजी ॥ चंद्रजसरायकरावीयो ॥ ए नवमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणीदेशना ॥ शांतिनाथ सुत सुविचारोजी ॥ चक्रधरराय करावीयो ॥ ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ११ ॥ दशरथसुत जग दीपतो ॥ मुनिसुव्रत स्वामी वारोजी ॥ श्रीरामचंद्र करावीयो ॥ ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहै अम्हे पापीया ॥ किम छूटां मोरी मायो जी ॥ कहै कुंती सेत्रुंजतणी ॥ यात्रा कीयां पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचे पांडव संघ करी । सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी । काष्टचैत्य बिंबलेपना । ए बारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणीपाषाणनी । प्रतिमा सुंदरसरूपोजी । श्रीसेत्रुंजैनो संघकरी । थापी सकलसरूपोजी ॥ से० ॥ १५ ॥ अट्ठोत्तरसो वरसां गयां । विक्रमनृपथी जिवारोजी । पोरवाड जावड करावीयो । एतेरमो उद्धारोजी । से० ॥ १६ ॥ संवत बार तिडोत्तरै । श्रीमाली सुविचारोजी । वाहडदे मुहते करावीयो ।

चवदमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरै इकोत्तरै ॥ देसल हर अधिकारोजी ॥ समरै साह करावीयो ॥ ए पनरमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १८ ॥ संवतपनर सत्यासीयै ॥ वैसाखवदि सुभवारो जी ॥ करमेंडोसी करावीयो ॥ ए सोलमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१९॥ संप्रति कालै सोलमो ॥ एवरतै छै उद्धारोजी ॥ नित नित कीजे वंदना ॥ पामीजै भवपारोजी ॥ से० ॥ २० ॥ दुहा ॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं ॥ सांभलो जिम छै तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहै ॥ महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी ॥ सेत्रुंजे पूजनीक ॥ भगवंतनो वेसवांदतां ॥ लाभ हुवै तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरै ॥ चैत्य करावै जेह ॥ दल परमाण समोलहै ॥ पल्योपम सुखतेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो ॥ नवो नीपावैकोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां ॥ आठ गुणों फल होय ॥ ४ ॥ सिरऊपरि गागर धरी ॥ स्नात्र करावै नारि ॥ चक्रवर्त्तिनी स्त्री थई ॥ सिवसुख पामें सार ॥ ५ ॥ काती पूनिम सेत्रुंजे ॥ चढिनैं करै उपवास ॥ नारकी सौसागर समो ॥ करै करमनो नास ॥ ६॥ काति परव मोटो कह्यो ॥ जिहां सीधा दशकोड । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या ॥ पापथी नाखै छोड ॥ ७ ॥ सहसलाख श्रावग भणी ॥ भोजन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पडिलाभतां ॥ अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ ढाल ॥ ५ ॥ (धन २ अयवंतीसुकुमालनें एहनी) देशी ॥ सेत्रुंजे गयां पाप छुटी यै ॥ लीजै आलोयण एमोजी ॥ तप जप कीजै तिहां रही ॥ तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ १ ॥ से० ॥ जिण सोनानी चोरी करी ॥ ए आलोयणतासोजी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी ॥ एक करै उपवासोजी

॥ २ ॥ से० ॥ वस्तु तणी चोरी करी ॥ सात आंविल सुध थायोजी ॥ कातीसातदिन तपकीयां ॥ रतन हरण पाप जायो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी कीधी जेणोजी ॥ सात दिवस पुरमढ करै ॥ तो छुटै गिरि एणोजी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगीया ॥ जिण चोर्या नरनारोजी ॥ आंविल करि पूजा करै ॥ त्रिणटंक सुद्ध आचारोजी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रसचोरीया॥ जे भेटै सिद्धक्षेत्रोजी ॥ सेत्रुंज तलहटी साधुनें ॥ पडिलाभैं सुध चित्तोजी ॥६॥ से० ॥ वस्त्राभरण जिर्णे हर्या ॥ ते छुटै इण मेलोजी ॥ आदिनाथनी पूजा करै ॥ ग्रह उठी बहु वेलोजी ॥ ७ ॥ से० ॥ देवगुरुनो धनजे हरै ॥ ते सुद्ध थायैं एमोजी ॥ अधिको द्रव्य खरचै तिहां ॥ पात्र पोपे बहु प्रेमोजी ॥ ८ ॥ से० ॥ गाय भेंस घोडा मही ॥ गजनो चोरणहारोजी ॥ द्यै ते वस्तु तीरथै ॥ अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥ ९ ॥ से० ॥ पुस्तक देहरा पारका ॥ तिहां लिखै अपणो नामोजी ॥ छुटै छम्मासी तप कीयां ॥ सामायक तिणठामोजी ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजका सधव अधव गुरुनारोजी ॥ व्रतभांजै तिणनें कह्यो ॥ छम्मासी तप सारोजी ॥ ११ ॥ से० ॥ गौ विप्र स्त्री बालक रिपि ॥ एहनो घातक जेहोजी ॥ प्रतिमा आगै आलोवतां ॥ छुटै तप करि तेहोजी ॥ १२ ॥ से० ॥ (ढाल ६ कूंमरभलै आवीयौ ए) ॥ एहनी ॥ संप्रतिकालै सोलमोए ॥ ए वरतै छै उद्धार ॥ सेत्रुंज यात्रा करुंए ॥ सफल करुं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ छहरी पालतां चालीयैए ॥ सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचीये ए ॥ संघ मिल्यो बहुथाट ॥ २ ॥ से० ॥ ललित सरोवर पेपीयैए ॥

वलि सत्तानी वाव ॥ से० ॥ तिहां विसरामो लीजियैए ॥ वडनै चौतरै आय ॥ ३ ॥ से० ॥ पालीताणे पाजडीए ॥ चढीयै उठि परभात ॥ से० ॥ सेत्रुंज नदीय सोहामणीए ॥ दुर थकी देखंत ॥ ४ ॥ से० ॥ चढियै हिंगुलाजनें हडैए ॥ कलिकुंडनमीयै पास ॥ से० ॥ वारी मांहे पैसीयैए ॥ आणी अंग उल्लास ॥ ५ ॥ से० ॥ मरुदेवी ट्रंक मनोहरूए ॥ गजचढी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शांति-नाथ जिनसोलमाए ॥ प्रणमी जै तसुपाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंसपोर-वाडै परगडोए ॥ सोमजीसाहमल्हार ॥ से० ॥ रूपजी संघ वी करावीयो ए ॥ चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा चरचीयैए ॥ भमतीमांहि भला बिंब ॥ पांचे पांडव पुजियैए ॥ अदभुतआदि प्रलंब ॥ से० ॥ ८ ॥ खरतर वसही खांतिसु ए ॥ बिंब जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ चवरी नमुंए ॥ टालूं अ-लग उद्वेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरम दुवार माहेंनीसरुएं ॥ कुगति करुं अतिदुर ॥ से० ॥ आवुं आदिनाथ देहरेए ॥ करमकरुं चकचूर ॥ से० १० ॥ मूलनायक प्रणमुंमुदाए ॥ आदिनाथ भगवंत ॥ से० ॥ देव जुहारुं देहरैए ॥ भमतीमांहि भमंत-॥ से० ॥ ११ ॥ सेत्रुंजे ऊपर कीजीयैए ॥ पांचे ठाम सनात्र ॥ से० ॥ कलश अठोत्तरसो करिए ॥ निरमल नीरसुगात्र से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगलेए ॥ पुण्डरीक गणधार से० ॥ रायण तलप गला नमुंए ॥ शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १३ ॥ रायण तल पगला नमुंए ॥ चौमुख प्रतिमाच्यार ॥ से० ॥ बीजी भूमि बिंबावलीए ॥ पुंडरीक गणधार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरजकूंड निहालीयैए ॥ अतिभली उल-

काझोल ॥ से० ॥ चेलणातलाई सिद्ध सिलाए ॥ अंग फरसुं उ-ल्लोल ॥ से ॥ १५ ॥ आदिपुर पाजैऊतरुंए ॥ सिद्धवडलुं विसरांम ॥ से० ॥ चैत्य प्रवाड इणपरि करीए ॥ सीधा वंछित काम ॥ से० ॥ ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंज तणीए ॥ सफल कीयो अवतार ॥ से० ॥ कुसल खेमसुं आवीयोए ॥ संघ सहू परिवार ॥ से० ॥ ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणोए ॥ सांभलज्यो सहुकोइ ॥ से० ॥ घर बैठां भणें भावसुंए ॥ तसु जात्र फल होइ ॥ १८ ॥ संवत सोल बयांसीयैए ॥ सावण वदि सुखकार ॥ से० ॥ रास भण्यो सेत्रुं-जतणोए ॥ नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गच्छ खरत-रतणोए ॥ श्रीजिनचंदसूरीस ॥ से० ॥ प्रथम शिष्य श्री पूजनाए ॥ सकलचंद सुजगीस ॥ २० ॥ तास सीस जग जाणीयैए ॥ समयसुंदरउवझाय ॥ से० ॥ रास रच्यो तिण रूवडोए सुणतां आणंद थाय ॥ से ० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्णम् ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीरजिणेसरचरणकमलकमलाकयवासो, पणमवि पभणिसुं साम साल गोयमगुरुरासो ॥ मणतणुवयण एकंत करवि नि-सुणहु भो भविया, जिम निवसे तुमदेहगेहगुणगण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीवसिरिभरहखित्तखोणीतलमंडण, मगहदे स सेणि-यनरेस रिउदलबलखंडण ॥ धणवरगुबर गाम नाम जिहां गुण-गणसज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ तसु पुहवीभज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरिइंदभूइ भूयवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी

रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुणगणह मनोहर, सात हात सुप्रमाणदेह रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकजजलपाडिय, तेजहिं तारा चंद्र सूर आकास भमाडिय ॥ रूवहि मयण अनंगकरवि मेल्यो निरधाडिय, धीरममेरु गंभीर सिंधु चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूवजास जण जंपे किंचिय, एकाकी किलभीत्त इत्थ गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निच्चयपुव्वजम्मजिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरी गंग रतिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नयगुर कवि ण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुणपात्र छात्र हींडें परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचलहोसे चरम-नाण दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतलमंडण, मगहदेस सेणियनरेसर, वरगुव्वरगाम तिहां, विप्पवसे वसुभूइ, सुंदर तसु पुहवि भज्जा, सयलगुणगणरूव-निहाण, ताणपुत्त विज्ञानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भासउ ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविहसंघपइट्ठा जाणी ॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन बेठा, तत्खिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मांगे सेवा ॥ चामर छत्र शिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जगसहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसमरसभरवरवरसंता, जोजन-

वाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमानजिणपाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जलहलकंता, गयण-विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंदभूइ मनचिंते, सुरआवे अम यज्ञहुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंडकजिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपे तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढालोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरुअवरकिमओपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न पावापुर-सुरमहिय, पत्तनाहसंसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुरक कारण ॥ जिणवरजगउज्जोयकरे, तेजहि कर दिन-कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुओतो जयजयकार ॥ १६ ॥ भासउ ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो कर संच-रिह, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समवसरण, पेखवि प्रथमारंभ तो ॥ दहदिशि देखइं विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि-वर्जितजंतुगण, प्रातिहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इद्राणी राय तो ॥ चित्तःचमकिय चिंतव ए, सेवंतां प्रभुपाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो, एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेडे वेदप-एण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगताहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥

य संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवनगुरु, संयमसुं व्रत बार तो ॥ विहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विहरंततो ॥ गोयमसंयमजग सयल, जयजयकार करंततो ॥ २१ ॥ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंततो ॥ जे जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्झायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिरकलेई सिरकासही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भासउ ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोयमसामि, जो नियनयणें अमियझरो ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जिहां २ दीजें दीख, तीहां २ केवल ऊपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोयज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणधर संचरिय, तापस पन्नरसएण जोमुनिदीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तपसोसियनिय अंग, अम्हां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचन मणि निप्पन्न, दंडकलसध्वज वडसहिय ॥ पेखवी परमाणंद, जिणहरभरतेसरमहिय ॥ निय

नियकाय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणहर बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयमगणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयरसामीनो जीव, तिर्यकजृंभकदेव तिहां ॥ प्रतिबोध्यापुंडरीक कंडरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयमसामि, सवितापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीरखांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुभ भाव, उज्जलभरियो खीरमिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुअ ॥ २९ ॥ पंचसया जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणवि जण पीयूप, गाजंती घनमेघजिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण संपन्न पन्नरेसें परिवरिय, हरियदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणवी जगगुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इस भणे, गोयम मकरिस खेव, छेह जाय आपणसही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास ३ ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्लसिय ॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठवतो ए कणयपउमेण, पायकमल संघे सहिय ॥ आवियो ए नयणाणंद, नयरपावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए त्रिसलादेवि, नंदन पुहतो परमपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो

ए ॥ जाण तो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अति-भलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मांगसेए ॥ चिंतव्यो ए वालक जेम, अहवा केडें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीरजिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ॥ आपणो ए ऊंचलो नेह, नाहन संपे साचव्योए ॥ साचोए ए वीतराग, नेह न हेजे लालीयोए ॥ तिणसमे ए गोयमचित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवलमहिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिहवासें संवसिय तीस वरस संजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुरठाउ ॥ ३७ ॥ भासउ । जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सोगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिर्यां लहके, जिम कणयाचलते जे झलके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिमसुरतरुवर कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ [illegible] रयणें विलसे, जिम अंवर तारागणविकसे, तिमगो-[illegible] गुरु केलि वने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिमससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमोहे पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवरराजे, नरवइ घर जिममंगल गाजे, तिम जिनशासन मुनिपवरो ॥ ४० ॥ जिमगुरुतरुवर सोहेशाखा, जिम

उत्तममुख मधुरी भाषा, जिम वनकेतकि महमहे ए ॥ जिमभूमीपति भुयवल चमके जिम जिनमंदिर घंटारणके, गोयमलवधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि करचढीयो आज, सुरतरुसारे वंछिय काज, कामकुंभ सहुवशि हुआए ॥ कामगवी पूरे मनकामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहिलोपभणी जें, माया वीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोभा संभव ए ॥ देवांधुर अरिहंत नमीजें, विनयपहू उवझाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांयकरीजें, देस देसांतर काय भमीजे कवण काज आयास करो ॥ प्रहऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे नवनिधि विलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदयसय वारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयोकवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल एपभणीजें परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियों धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियोए ॥ विनयवंत विद्या भंडार, तसु गुण पुहवी न लभ्भइ पार, वड जिन साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास भणीजें चउविह संघरलियायतकीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुमचंदन छडो दिवरावो, माणकमोतीना चोक पूरावो, रयणसिंहासण वैसणो ए ॥ तिहां वैठि गुरु देशनादेसी भविक जीवनाकाज सरेसी, नितनित मंगल उदयकरो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतमस्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ रागप्रभाती जे करे, ग्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ॥ जे गुरुगोतमसमरियें, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंडरीक गोय मपमुहा, गणधर गुणसंपन्न ॥ ग्रह उठीनें प्रणमतां चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमं गुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धिसंपण्णं ॥ वीरस्स पढमसीसं, गोयमसामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थदायीने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सूतक विचारलि० ॥

॥ पुत्र जन्महोनेसें दिन १० दस सूतक ॥ पुत्रीजन्म होनेसें दिन ११ सूतक मृत्यु होणेसें दिन १२ बारह सूतक, ओरजिस स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक ॥ पुत्र होते मरण पामे तो दिन १ एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, भैंस, घोडी, सांढ, घरमांहे वियावे तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइ जावे जहांतक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेश्रायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरणहोवे तो दिन ३ तीन सूतक ॥ ओर जितना महिनाको गर्भ गिरे तितनेदिन सूतक ॥ अब जिनके मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे, ओर जन्मके सूतकमें घरका १० दसदिन देवपूजा न करे ॥ ओर अन्य घरका३ तीन दिन देवपूजा न करे, ओर जो मृतकको छुवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिकमण न करे ॥ जो सदा का

अखंड नियम होवे, तो समताभावरखकें संवरपणामें रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करे नहिं. स्थापनाजीकें हाथ लगावे नहिं ओरजो मृतककों छुवा न हो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ किसीकु न छीवे तो दोय स्नानसें शुद्ध भेंसके जब बच्चा होय, तब १५ पन्नर दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. गायके बच्चा होय तो १० दश दिन पीछें दुध पीणो कल्पे. बकरीको दुध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

॥ १ ऋतुवती स्त्री, चार दिन भांडादिकको न छुवे. २ चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कारणें तीन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेपदोप नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पडि लाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु ऋतुदिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरी ग्रंथमें कहा हे. जिसके घरमें जन्म मरणका सुतक होवे, उहां १०॥ १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सुतकवाले का घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बार दिन तक देवपूजा न करे. निशीथसुत्रके शोलमा उदेशामें जन्म मरणके सूतकवालेका घर दुगंच्छनीक कहा हे. गायके मूत्रमें २४ चोवी प्रहर पीछें. भेंसके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीछें गाडर. गधेडी. घोडीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीछे. नर नारी के मूत्रमें अंतरमुहूर्त पीछें. संमूर्च्छिम जीव उपजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां

लिखा हे. विशेप विचार शास्त्रांतरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णम् ॥

॥ अव असज्झायकी विगतकहते हे ॥

१ धूंअरी पडे. तासीम असज्झाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती छाया तथा अरण्यसंवंधी रज उडे. निरंतर पडे तो दिन ३ तीन उपरांत असज्झाय.

३ मेह वरसते वुदवुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असज्झाय.

४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वर से अने न रहे तो असज्झाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जांलगं होय तां सीम असज्झाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय.

६ वुदवुदा रहित निरंतर वरसे, तो ५ पांच दिन उपरांत असज्झाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचममध्यानहूंती पडिवा लगें असज्झाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रज उड्डावणच्छं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं. अचित्त रज उड्डावणच्छं करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स चार नो काउस्सग्ग करवो.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंभीने पडिया लगें

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असज्झाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे शीम असज्झाय.

११ अकालें वीजउल्कापात होय तो प्रहर १ असज्झाय.

१२ अजवालीये पक्षें समीसांझ. पडवो, बीज, त्रीज, इयांरी असज्झाय. परंतु दशवैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे. तो प्रहर १ एक अस०

१४ भूमिकंपें प्रहर ८ आठ असज्झाय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार. उत्कृष्टें. अने जघन्यें पर ८ आठ असज्झाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल. अने जघन्य प्रहर १२ बार असज्झाय.

१७ आसाढ चउमासा पडिकमण ठायाहूती प्रहर १२ बार असज्झाय.

१८ कार्त्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीछे पडिवा लगें १२ पहर बार असज्झाय,

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल अ०

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे. तां लगें असज्झाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुपने कलह हुवे त्यांपर्यंत असज्झाय.

२२ फागण चउमासें रजपडवा जां लगें रज उडे, अने उपशमे नहिं, तां लगें असज्झाय.

२३ दंडकोमार पडते जां लगी अनेरो न हुवे. तां लगी असज्झाय.

२४ परचक्रादि भय उपजे, अने जां लगे उपशमे नहिं. तां लगे सूत्र भणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे. तो अहोरात्र असज्झाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहडे. तो अहोरात्र असज्झाय.

२७ सोहाथमाहि अनाथपुरुषमृतकपडयो होयतो तां अणउद्धरे एटले ज्यांपर्यंत मृतककूं न उठावे. त्यां सीम असज्झाय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पढवाथी हाथ ६० मांहेयहर ३ असज्झाय,

२९ मनुष्यना रुधिर पडवाथी हाथ १०० सो मांहे अहोरात्र असज्झाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पडे हात [१००] सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने ऋतु आवे थके दिन (३) त्रण अस०

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्रपर्यंत जो गाज, वीज, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय,

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असज्झाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विणकीये भणवो गुणवो नहिं. पहर १२ बार असज्झाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १, मागशिरवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्झाय अने सूत्रनी असज्झाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ ॥

साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ओर दिन पीछें न खावणी सो लिखते हे.

॥ चावल प्रहर ४, रात्र प्रहर १२, घेस प्रहर २०, छाछ प्रहर २४, दहि प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवडां प्रहर २४, घोलवडां प्रहर ४, तल्यां वडां प्रहर ४, पूडी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६, वाजरा ऊण्ग प्रहर १२, जवार ऊण्ण प्रहर १२, वाजरीकी खीचडी प्रहर ४, जवारकी खीचडी प्रहर ४, चावलकी खीचडी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पकान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्वान्न दिन २० वरसाले पकान्न दिन ७ उन्हाले लूण फासु दिन ८ वरसाले लूण फासू दिन ३ सीयाले फासू लूण दिन ४ सीयाले फासू घी दिन ८ उन्हाले फासू घी दिन ५ वरसाले फासू घी दिन ३ तथा हमेसका सीयाले फासू पाणी प्रहर ४ उन्हाले फासू पाणी प्रहर ५ वरसाले फासू पाणी प्रहर ३ सर्व अनाजकी घुघरी पाणी भिजोइ प्रहर ८ पाणीकी उसेहि घुघरी प्रहर १८ घी तेलकी तली घुघरी प्रहर २० तथा २४, वडी प्रहर ८ कढी प्रहर ४ सर्वदाल प्रहर ४ तथा ५ रायता प्रहर ८ घीकी तली प्रहर १५ एवं सर्व वस्तु ए कहे परिमाण उपरंत चलित रस होवे सो साधु तथा श्रावकको खाने योग्य रहे नहि ॥

॥ अथ दिन प्रति श्रावक चवदै नियमका प्रमाण करै (सो) बिचार लिखते ॥

सच्चित्त १ । दव्व २ । विगई ३ ॥ पाणहि ४ । तंबोल ५ । वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ वाहण ८ । सयण ९ । विलेवण १० ॥ वंभ ११ । दिशि १२ । न्हाण १३ । भत्तेसु १४ ॥ (अर्थः)

श्रावक नित प्रति नियम संभालै । दिनमें जो वस्तु अपने
खातै लागै । उसीका प्रमाण रक्खै । उपरांत त्याग करै ।
प्रथम (सचित्त वस्तुको परिमाण करै) मट्टी सर्व जाति । प
सर्व जाति । जल-अग्नि-वायु । वनस्पतीका छेदन भेदन । तर
सर्व जाति । फल सर्व जाति । परवल । तोरी केला । इत्य
सचित्तका परिमाण करै ॥ १ ॥ * ॥

॥ दूसरा द्रव्य परिमाण ॥

तिहां धातु वस्तुकी शली । (तथा) अपणी आंगुली विन
जो वस्तु मुखमें दीजै । सो सर्व द्रव्यकी गिणतीमें आ
नामांतर । स्वादांतर । स्वरूपांतर । परिणामांतरा । द्रव्यां
होणेंसें अलग द्रव्य होवै । (यथा) गहुं एक द्रव्य । तिसकी पत
रोटी । फीणा रोटी । वेढ़वा रोटी । बाटी । यह सर्व द्रव्य ज
कहियै । (इस प्रकारे) सर्व द्रव्य खांणेमें आवै । भात दाल
रोटी । मांडियो । पलेव । तरकारी सर्व जाति । पापड़
खीचीया । लड्डु सर्व जाति । फिणीघेवर । खाजा
(इत्यादि समस्त द्रव्य परिमाण करै) इहां उत्कृष्ट द्रव्यको ना
ले रक्खै । (तो) एकही द्रव्य कहीयै । (जैसे) मेव
खीचड़ीका नाम लेके रक्खे । (सो) अनेक द्रव्य निष्पन्न है
(परंतु) एक द्रव्य कहियै ॥ * ॥ इति द्रव्य प्रमाण दूस
नियमः ॥ २ ॥ * ॥

॥ तीसरा विगय परिमाणनियमः ॥

है । (और ६ विगय) घृत १ । तेल २ । मीठा ३ । दुध ४ । दही ५ । कड़ाह विगय ६ । धारणाप्रमाण रक्खै ॥ ॐ ॥

॥ अथ चौथा पादत्राणनियमः ॥

तहां । जूति । खड़ाऊ । मोजा । अपणा । इतना विराणा । ऐसे दिन प्रतें धारणा प्रमाण मोकला रक्खें ॥ ॐ ॥ इति पाणही नियमः ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ पांचमा तंबोल नियम मध्ये ॥

पान (तथा) वीड़ा । सुपारी । लवंग । इलायची । छोटी, बड़ी । जायफल । जावंत्री प्रमुख सब स्वादिम वस्तु । किरयाणा-प्रमुख सर्व जात धारणा प्रमाण रक्खै ॥ ॐ ॥ इति तंबोल-नियमः ॥ ॐ ॥

॥ छटा वस्त्र नियम मध्ये ॥

पोसाक १ । तथा ४ । छूटा वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रक्खै । पोसाक १ मध्ये । पघड़ी १ । जामो १ । कमरबंधो १ । धोती १ । इक पट्टो उत्तरासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक पोसाक कहियैं । ऐसें नही कर सकै । (तो) ४० तथा ५० कपड़ा दिन मध्ये मोकला । पराया वस्त्र भूल चूकमें आवै (तो) जयणा ॥ ॐ ॥ इति वस्त्रनियमः ॥ ॐ ॥

॥ अथ सातमा फुलनियमः ॥

तिहां गुलाब । चंपेली । वेला । केवड़ा । केतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती । हजारा । कमल । (इत्यादि) सर्व

फूलका धारणा प्रमाणें परिमाण करै ॥ * ॥ इति फूल· नियमः ॥ * ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमा वाहननियमः ॥

तिहां रथ । गाड़ी । घुड़वहिल । खड़सल । कोच । पालकी । घोड़ा । हाथी । चोपाला । म्याना । (इत्यादिक) सर्व थल वाहनजाति ॥ मोरपंखी । बतक । घुड़दोड़ । लचकार । मगर । पनसोइं । पलवार । बजरा । (इत्यादि) सर्व नाव जाति । सर्व तिरता । फिरता चरता । यह तीन प्रकारके वाहन धारणा· प्रमाणें राखै ॥ * ॥ इति वाहननियम ॥ ८ ॥ * ॥

॥ अथ नवमा शय्यानियमः ॥

तिहां पिलंग । खाट । तखत । चौकी । पट्टा गदी । खुरसी । बनात । पट्टखजनी । सेत्रुंजी । गलीचा । चांदणी सीतलपट्टी । सफ । चटाइ । सर्वजाति । दरखतकी छालका । चमडेका । कांबला । मुखमल । कारचोपी । (इत्यादि) धारणाप्रमाणें शय्या प्रमाण करै ॥ * ॥ इति शय्यानियमः ॥ * ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमा विलेपननियमः ॥

तिहां । सरसोंका । राईका । आटेका । तेल । फुलेल । सर्व- जातिका । केशर । चंदन । कपूर । कस्तुरी । रोली । (इत्यादि) शरीरसुखवास्ते । (तथा) रोगादि कारणें ओषधादिकका विलेपन फोड़ां ऊपर मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन । (इत्यादि) अंगोपांगमें लगाना । (सो विलेपन धारणाप्रमाणे करै ॥ * ॥ इति विलेपननियमः ॥ १० ॥ * ॥

॥ अथ ब्रह्मचर्यनियमः ॥

तिहां रात्रीकों (तथा) दिनको । सुई डोरैके द्रष्टांत भोगादिकका प्रमाण करै । स्वप्नकी-मन-वचनकी । जयणा ॥ * ॥ इति ब्रह्मचर्यनियम ॥ ११ ॥ * ॥

॥ अथ दिशानियमः ॥

तिहां । पूरब १ । पश्चिम २ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निकूण ५ । नैरूतकूण ६ । वायव्यकूण ७ । ईशानकूण ८ । अधोदिशि ९ । ऊर्ध्वदिशि १० । यह दश दिशाको अपने जानेका प्रमाण करै । चिठी लिखणी । आदमी भेजना । देशांतरकी चिठी वाचणी । तिसकी जयणा ॥ * ॥ इति दिशानियमः ॥ * ॥ १२ ॥

॥ अथ तेरमास्नाननियमः ॥

तिहां । आज दिन मध्ये स्नान २ । तथा ४ । वेर मोकला । परंतु पाणीका तोल रक्खै । तथा घड़ा प्रमुखका प्रमाण रक्खै । स्नान एक मध्ये इतनो पाणी खरच करूं । अधिक नहीं ढोळुं ॥ * ॥ इति स्नाननियमः ॥ * ॥ १३ ॥ * ॥

॥ अथ चौदमा भातनियमः ॥

दिनमध्ये भात सेर २ तथा ४ दो वेर (तथा) च्यार वेर

पृथ्वीकाय मट्टीका प्रमाण करे १ अप्पकाय पलीडा कूवातलावका प्रमाण करे २ तेउकाय चूला भट्टी दीया वगेरेका प्रमाण करे ३ वायुकाय पंखाका प्रमाण करे ४ वनस्पतिकाय हरिखाणिका पीणेका प्रमाण करे ५ त्रसकायके संघट्टेकी जयणा ६ असी चक्कुकतरणी १ मसी स्याहीलिखण २ कसी कुद्दालार हलवगेरेको प्रमाण करे तथा परिग्रहका प्रमाणकरे प्रभातका रखाहुवा सामकुं रखे सो प्रभातकां चितारे वादविगइ देसावगासिकका पचक्खाणकरे । इति नियमचितारणविधि ॥

खाऊ । उपरांत दुविहार । (तथा) चौविहार धारणाप्रमाणें रक्खै । (तथा) दिनमध्ये जल पीणैमें आवै तिसका प्रमाण रक्खै । तोलसें तथा मापसे ॥ * ॥ इति चौदह नियमभाषा ॥ १४ ॥ समाप्तम् ॥ * ॥

॥ अथ स्तवनरागठुमरी० ॥

सुमति चरणकज देख आजमनमधुकरलीनोरे ॥ सु० ॥ आज० ॥ सुमतिचरणकज अहोनिशीविकसै, अपरकमलकमलावैरे, जिनचरणांबुजरसे विभवियण, मकरंदगुण पीनोरे ॥ सुमति० ॥ १ ॥ सुमति सदा आतमने संगै, सहजानंदभवि विलसैरे, अनुभवअमृत पीवेचंगे, निजगुणमे भीनोरे ॥ सुमति० ॥ २ ॥ परमेसर प्रभुपरउपगारी, परमपुरुष मनुहारीरे, पांचमां जिनपति पडिमासारी, दीठो देव नगीनोरे ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ मेघनृपतिकुल नभमणिसोहै, भविजनना मनमोहेरे, सत्यदेवविख्यातिपामी, जगमाजशलीनोरे ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ जगवच्छल जगनायक जगगुरू, सेवकजन प्रतिपालकरे, श्रीजिनकृपाचंदसूरिआज भले, दरसनकीनोरे ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ श्रीजिनदत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥

सिरि सुयदेवि पसायकरे । गुरु श्रीजिनदत्तसूरि । वंदिसु खर तरगच्छरयण । सूरिजेम गुणपूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । बत्तिसे जसु जम्म । वाछिगमंत्रिपिता जणणी । बाहडदेवी सुरम्म ॥ २ ॥ इकनालै जिनवय गहिय । गुणहत्तर जसुपाट । बटसाखांवदि छठि दिन । पट्ट प्रणमें सुरथाट ॥ ३ ॥ अंबटगानथ

करलिहिय । सोवनअक्षरअंत्र । जुगप्रधानजगपयडियो । सिरिसोहैं पड़िविंव ॥ ४ ॥ जिण चउसठिजोगिण जणिय । खित्तपाल वावन्न । साइणि डाइणि विज्जुलिय । पुहविह नामनयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत वलकर सहिय । साहिय जिम धरणिंद । सावय साविय लक्ख इग । पड़िवोहिय जिणविंव ॥ ६ ॥ अरिकरि केसरि दुट्ठदल । चउविहदेव निकाय । आणनलोपै कोइजुगे । जसु प्रणमें नरराय ॥ ७ ॥ संवतवार इग्यारसमें । अजयमेर पुरठान । इग्यारसि आसाढ सुदि । सगपत्त सुहझांण ॥ ८ ॥ श्रीजिन वल्लहसूरिपए । श्रीजिनदत्तसुरींद । विघ्नहरण मंगलकरण । करो पुन्य आनंद ॥ ९ ॥ इति श्रीजिनदत्तसूरि अष्टकं ॥

॥ श्री जिनकुशलसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्रलि० ॥

रिसह जिनेसर सोजयो । मंगल केलि निवास । वासववंदिव पय कमल । जगसहु पूरै आस ॥ १ ॥ (चौपइ) चंदकुलंवर पूनिम चंद । वंदो श्रीजिनकुशलमुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम निवास । जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडन समियाणो गांम । धणकण कंचन अति अभिराम । जिहां वसै जिल्हागर मंत्र । जैतसिरी तसुघरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसुतेरैसै तीसै जम्म । सैतालै सिर संयम रम्म । पाटण सतहत्तरै जसुपाट । निन्यासियै तसुसुरगै वाट ॥ ४ ॥ भूं मंडल सरगै पायाल । अचिरा चिर जुगइणकलि काल । गुरु प्रताप नविमांनै सोय । मै नविनयणे दीठोजोय ॥ ५ ॥ निरधन लहै धन धन्न सुवन्न । पुन्नहीण पांमें वहुपुन्न । असुखीपांमें सुख संतान । एक मना करतां गुरुध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण

आपदसहुटलै । सयल सांतिसुख संपत्ति मिले । आधिव्याधी चिंता-संताप । ते छंडी नवि मंडे व्याप ॥ ७॥ पाप दोप नविलागै तिहां गुरुदरसण उत्कंठा जिहां । सेवतां सुरतरूनीछांहि । निश्चैदालिद्र मेटैवांहि ॥ ८ ॥ विसहर विसनर विसनरनाह । भूतप्रेतग्रह व्यंतर राह । गुरुनामें जेनकरै पीड़ । भाजे भावठ भवभय भीड़॥९॥ रोग सोग सविनासै दूर । अंधकार जिम ऊगैसूर । मूरखफीटी पंडित थाय । प्रभु पसाय दुख दुरीय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अछै भव सायर पोत । सोसद्गुरुमें भेट्यो आज । रलीयरंगसीधा सविकाज ॥ ११ ॥ (ढाल) अज घर अंगण सुरतरू फलियो । चिंतामणि कर कमले मिलियो । उदयो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धन्ने गिणियौ । जुग पवरागम जोमें थुणियौ । चंद्र गच्छ महिमानिलोए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथविपतिसेवा । कांइ मानवो देवीदेवा । चिंता आंणो कांइमने ॥१४॥ वार वारए कवित भणीजे । श्रीजिनकुशल सूरि समरीजे । सर्व काज आयाम विणे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसे । मुलक वाहड मेल्पुर मन हरसे । अजिय जिणेसर वर भवणां ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण । विघन हरण सहुपाप निवारण । कोइ मत संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम जिम सेवे सुरनर राया । श्रीजिन कुशल सुरीसर पाया । जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सद्गुरु गुण अभिनंद । ऋद्धि समृद्धि सो चिर नंद । मन वंछित फल सुख हुवोए ॥ १९ ॥ दादाजी श्रीजिनकुशलसूरजी उत्पत्ति विचार गर्भित स्तवन संपूर्णम्. ॥

॥ श्री दादाजीको स्तवन लि० ॥

विलशे ऋद्धि समृद्धि मिली । शुभयोगै पुन्य दशा सफली । जिनकुशलसूरि गुरु अतुलवली । मन वंछित आपै दादो रंगवलि ॥ १ ॥ मंगल लीलसमें विपुला । नव नवय महोच्छव राजयला । सुपसायै गुरु चढ़ती कला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थायै सवला । सद्वास कपूर तणा कुरला । हयगय रथ पायक बहुला । कल्लोलकरै मंदिरकमला ॥ ३ ॥ वीझै चमर निसाण घुरै । नरवैदरवारखड़ा पुहरै । जय जय कर जोड़ी उचरै । सांनिध्य गुरू सव काजसरै ॥ ४ ॥ सरसाभोजनपान सदा । दुख रोग दुकाल न होय कदा । अविचल ऊल्लट अंगमुदा । गुरुकूरम द्दष्टी प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम माद्दल नाद घमें । वत्तीसे नाटक रंगरमें । प्रगट्यो पुन्य प्रताप हमैं । सवला अरियण ते आयनमें ॥६॥ तनसुख मनसुख चीरतनें । पहिरै वेलाउल होयरनें । ध्यावो कुशल गुरू एक मनें । जृंभक सुर मंदिर भरै धनें ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आवै । करि स्याम घटामेह वरसावै । तिसीया तोय तुरत पावै । जलदाता त्रिजगसुजसगावै ॥ ८ ॥ लहियां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसायर मझिडरै ॥ बूड़ता वाहन जे समरै । ते आपद निश्चैसुं उवरै ॥ ९ ॥ खड़ खड़ खड़ग प्रहारवहै । सोदा-मनि जिम समसेलसहै । कुशल कुशल गुरु नाम कहै । ते खेम कुशल रण मझ लहै ॥ १० ॥ थुंभसकल परचा पूरै । श्रीनाग-पुरै संकट चूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भयटालै दूरै ॥११॥ वीरमपुरवाने सुधरै । खंभाइतपुर विक्रमनयरै । जिनचंदसूरि

पाटे पवरै । जसु कीरती महिमंडलपसरै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगै । उत्तर गुरुदीपै सौभाजागै । दहदिशि जन सेवा मागै । श्रीखरतर गच्छनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जन पदठामै । गाईजै कुशल नयर गामै । पुजैजे नरहितकामै । ते चक्रवर्तीपदवी पांमै ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि साखै । सेवकजननैं सुखिया राखै । समर्यां गुरु दरशनदाखै । श्रीसाधुकीरति पाठक भाखै ॥ १५ ॥ इति० ॥

(अथ दादासाहिबको स्तवन)

सदगुरु म्हारारे मोहनगारारे । वीनती सांभलो । सांभलीने गुरु करो सेवक प्रतिपाल । स० ॥ विरुद घणेरारे निगुण्या तुम-तणा । तुमछो प्रभु आतमना रखवाल ॥ स० ॥ १ ॥ जिन सासन जगमां जयो । सर्वजीवसुखकार । जंगमसुरतरू प्रगटीयो । सदगुरु तारन हार । तुमछो गुरुसब जनने सुख आल ॥ स० ॥ २ ॥ पंचनदीपर साधिया । पांचपीर परधान । सोभाव्यो जिनधर्मने । सार्यां वंछित काम, करो प्रभु वांछित पूरण दयाल ॥ स० ॥ ३ ॥ जीतीचोसठ जोगनी, वसकीया बावनवीर । झबकाकरती वीजली । स्थंभित करी गुणधीर करजो प्रभु अमचीसार कृपाल ॥ स० ४ ॥ प्रतिबोध्या नरनारीने, शासनशोभा वधार । चारित्र पाली निरमलो । स्वर्गलह्यो सुखकार । तुमें प्रभु संपदा पामी रसाल ॥ स०॥ ५ ॥ युग प्रधान जगपरगडो । अंबाअक्षरदीध जगगुरु चिंतामणि समो । मनवांछित फलदीध । सद्गुनामनवांछितपूरे रसाल ॥ स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक जस गुरुतणो । जाणे सयलजहान ।

परचा जगमे परगड़ा । सेवेराव राजन । सेवानो फल तुरतलहे निहाल ॥ स० ॥ ७ ॥ संघ उदय करो साहिबा । दयाकरी गुरुराज । अलिय विघन दूरै हरो । पूरो सहुजन काज । पूरीने प्रभु मेटो भवजंजाल ॥ स० ॥ ८ ॥ ठामठाम गुरुसोभता, थुंभघणामहिराण । भावे सेवै भविजना । सदा सुरंगे वाण । तुमछो गुरुभक्ततणा रिच्छवाल ॥ स० ॥ ९ ॥ सद्गुरु समजगको नहि । जीवनप्राण आधार । कमितपूरणसुरगवि । सुख कारण दिलधार । गुणनिधि अमचा परम कमाल ॥ स० ॥ १० ॥ श्रीजिनदत्तसूरीशरू । मणियाला जिनचंद । कुशलकरण कुशलेसरू । प्रणमें जिनकृपाचंद । करजो प्रभु शासननी संभाल ॥ स० ॥ ११ ॥ इतिश्री दादासाहेब स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ बीजनी थुइलिः ॥

वासुपूज जिन अंतर जामी, मनविसरामी स्वामीजी ॥ भवि जन तारण शिवसुखकारण, निजगुणना प्रभु कामीजी ॥ बीज दिवस जिनवरशिवसुखकर, चंद्रविमानेपामीजी ॥ नगर बुहारिमा मनुहारि सेवो जिन सुख धामीजी ॥ १ ॥ वासुपुज्य पदम प्रभु राता, चंद्र सुविधि जिन धवलाजी ॥ मल्लि पास दोय नीलाजाणो, मुनि सुव्रत नेमी कालाजी ॥ आठद्विगुण जग नायक लायक, सोवन वरण सुहायाजी ॥ बीजदिवस नव नव चउद्धिकजिन, वंदु अहनिशिपायाजी ॥ २ ॥ दुविध धर्म जिनवर प्रकाश्यो, अर्थ अधिक सुख कारिजी ॥ सूत्रे करि गणधर गुरु भाख्यो, भवि जनना उपगारिजी ॥ दोय शिक्षा दोय नय

निक्षेपा, चउ भंगी मन आणोजी ॥ बीज आराधि संपदा साधि, परमारथ पहिचाणोजी ॥ ३ ॥ बीजदिवस उपवास करीजे, पड़िक्कमणादिक सारोजी ॥ ए तप सुर सरिखो जाणो, निरुपम सुख दातारोजी ॥ कुमार यक्ष तिम शासनदेवी चंडा सांनिध भूरिजी ॥ शुभफलदायकसंघने होज्यो, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥ ॥ इति थूइ० ॥

॥ अथ पंचमीनी थुइलिः ॥

नेमिजिनेसर जगपरमेसर, पंचमिगतिनादाताजी ॥ श्रावण सुदिपंचमिदिन जनम्या, त्रिभुवनमें विख्याताजी ॥ समुद्रविजय नंदन जग वंदन, सिवा देवीमाताजी ॥ सहस वरस प्रभु आयुप-पाली, पाम्या सिवसुखसाताजी ॥ १ ॥ काति वदि संभव केवल पाम्यो, मिगसर सुबुधि जायाजी ॥ चैत्र चंद्र जन्म अजित संभव, अनंत सुदि सिवपायाजी ॥ वैशाखवदि कुंथु जिन दीख्या, पंचमि जगत सुहायाजी ॥ धर्म धवलजेठ पंचमिसीधा, सुरनरमिल जयगायाजी ॥ २ ॥ पंचमी तपविधि भाखे जिनवर, अर्थ अधिक सुखकारीजी ॥ सूत्रे गणधर गुरु शुभ दाखे आगम मांहि सारीजी ॥ नंदिविधिकरी देववांदीने, काउसग्ग मनधारीजी ॥ इक्कावन ज्ञानना भेदनमीने, श्रुत ज्ञान सेवो इक तारीजी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणो दोय टंक करीने, ज्ञान आराधो प्राणीजी ॥ मगसरादि पटमासमांउचरो,आगममांहि गवाणीजी ॥ जिनआणाधारक सुखकारक,खरतरगण श्रुतखाणीजी ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिपभणे, शासनदेवी सुहाणीजी ॥ ४ ॥

॥ अथ अष्टमीनी थुइलि० ॥

आठ प्राति हारज जसुसोहे, मोहे भवि जन चंदाजी ॥ चंद्र प्रभु आठम दिनसेवो, अनुभवरसनाकंदाजी ॥ आठ प्रमाद-तजीनेधारो, परमातम पद सारोजी ॥ द्वीप नंदीसर यात्रा करतां, अरिहंतध्यानप्रकारोजी ॥ १ ॥ रिषभ अजित सुमति सुव्रत नमि, सुपारस संभव आयाजी ॥ आदीश्वर दीक्षा अभिनंदन, नेमिपास शिव पायाजी ॥ भिन्न मास अष्टमी कल्याणक, तीन कालमां जाणोजी ॥ आठ जातिना कलश लइने, स्नात्र करे सुर राणोजी ॥ २ ॥ आठे प्रवचन माता पालो दोप सर्वने टालोजी ॥ ज्ञानादिआठ आचार सेवीने, आतमतत्व निहालोजी ॥ वीर जिनेसर अर्थ प्रकासे, सूत्र रचै गणधारीजी ॥ आठम तप आराधि भविजन, आठ वरसअधिकारीजी ॥ ३ ॥ पर्वतिथीमे पोपध भाख्यो, सिद्धांतछे जसुसाखीजी ॥ पड़िकमणो तपजप आदरीयै, देववंदनविधि राखीजी ॥ आठमंगल आराधतां पावै, सुख संपति गुणभूरिजी ॥ श्रुतदेवीसुपसायलहीने, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ इग्यारसनी थुइलि० ॥

एकादसी आखि आदिदेवे । आराधिने भवि सिवशर्मलेवे ॥ धरो ध्यान श्रीजिनराजकेरो । टले अनादिकालनो कर्महेरो ॥ १ ॥ मल्लि जन्म दीक्षा केवल पहाणं । अरनाथ चारित्र नमि परम नाणं ॥ दश खेत्रना कल्याणक एम जाणो । दोढसोने वलि त्रणसो पिछाणो ॥ २ ॥ इग्यारे वरस तिम मासकीजे । आराधि

अंग इग्यारह सुजसलीजै ॥ मौनमनधारी शुभधर्मकारी । श्रुतज्ञाननी भक्ति करिये विचारी ॥ ३ ॥ आठपोहरी पोसह करि यथा शक्तं । तप जप करी उज्जमणो सुभक्तं ॥ इक चित्त ध्यावे सुयदेवि पसायें । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सदा सुख थायें ॥ ४ ॥ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ नवपदजीनी थुइलि० ॥

श्रीसिद्धचक्र सुहंकर जाणो, ध्यान ए भविजन मनमां आणो, आतम तत्व पिछाणो, निरुपम सिव सुख कारण जाणो, आतमने निज घरमां आणो, अविचल संपदा खाणो ॥ श्रीपालराजा नवपद साधे, सुरसुख पामी सेवि समाधे, अरिहंत पद आराधे, मन-मोहन जिन गुण अगाधे, दायक लायक सिद्धि अबाधे, जग जश कीरति लाधे ॥ १ ॥ बारे गुण करि अरिहंत राजे, सिद्ध आठ गुण गणिवरछाजे, गुण छतीशविराजे ॥ पचीश गुण उव-ज्झायाराजे सत्तावीस मुनि महाराजे, सेवी गुणसुसमाजे ॥ दर्शन ज्ञान चरण तप कहिये, सिड सठ इकावन सितर लहिये, भेद पचास क्रम कहिये ॥ तेर सहस वलि गुणनो करिये, चउवीस जिनपति ध्यानज धरिये, इम भवसायर तरिये ॥ २ ॥ आसु-मासनी मानससेती, नव आंबिल करो सुखदेनि, चैतरमास वहेनि ॥ नव ओलि शुभभावे लेनि, इक्यासि आंबिल सहु हेति, वीजननी खेति ॥ श्री श्रीपालने मयणागणि, हरषभरि हियडे माणि, नवपद ध्यान धराणि ॥ नवपदनी नित्य स्मरना ..., करो भविक जन शास्त्रप्रमाणी, आगम मांहि गवाणी ॥ ३ ॥ त्रण टंक पांच शक्रस्तवकीजे, दोय टंक आवश्यक लीजे,

काउसग्ग नितकीजै ॥ खमासमण शुद्धचितमां धारो, प्रदक्षिणा करि गुणसंभारो, जिमछूटे भवलारो ॥ देवीचक्रेसरि सांनिधकारि, विमलेसर पूरे आस हमारि, सिद्धचक्रविधिसारि, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिभाखे, जिनआणा मनमांहि राखे, भवि सिवसंपदा चाखे ॥ ४ ॥ ॥ इति नवपद थुइ ॥

॥ अथ नवपद थुइलि० ॥

सिरिसिद्धचक्कसेवो भवियां, सुहसंपयपावो अविचलियां ॥ १ ॥
सिरिअरिहाइ नवपयझावो, चउवीसजिणवइ गुण गावो ॥ २ ॥
नवआंबिल नवओलीकरिये, गुणनोजैति काउसग्ग धरिये ॥ ३ ॥
तीनटंकदेववंदनकीजे, जिनकृपाचंद्रसूरि जशलीजे ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ अथ सांतीनाथनी थुइलि० ॥

सांतिजिनराया सर्वजीवसुक्खदाया, अचिरादेमाया जास सोवन्नकाया, विश्वसेनराया जासगुणगणसोहाया, मृगलंछनपाया मोक्षमंदिरसिधाया ॥ १ ॥ पदम वासु विसाला रक्तवर्णे सुहाला, चंद्रप्रभु धवला सुविधिजिनसुक्खसवला, मुनिसुव्रत सांमला नेमिजिनराजकाला, मल्लि पारस नीला, सोलजिनराजपीला ॥ २ ॥ जिनवरनीवाणी मीठीसाकरसमाणी, भविजनमनभाणी मोक्षनीछे निशाणी, नयगममनआणी सर्वभंगप्रमाणी, सेवो श्रुतखाणी जैनशास्त्रे वखाणी ॥ ३ ॥ शासनसुखदाइ गरुड़राजासहाई, वांछितफलदाइ देविनिर्वाणीमाई, जिनचरणसहाइ सर्वसंपत्कराई, कृपाचंद्रसूरिसदाई संघमे शांति वरताई ॥ ४ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ रोहणीनी थुइलि० ॥

वासुपूज्य जिनेसर वंदु मनधरिनेह, सुखसंपतिकारण आराधो गुणगेह, रोहणीतपकरतां पामें भवनो पार, सातवरस सत्तावीश जघन्यउत्कृष्टदिलधार ॥ १ ॥ अतीतअनागतवर्तमान त्रिहुकाल, सहुजिनवरप्रणमो आणिभावविसाल, जिन जन्म महोछव सुरपतिकरेसुविचार, इम चोविशजिनवर पूजोविविध प्रकार ॥ २ ॥ चंद्ररोहिणीदिवसे तपआदरिये सार, गुणनो प्रदक्षिणा खमासमणसुविचार, यथाशक्ति करिये चोविहार उपवास, चित्रसेनरोहिणीपरे पामे लीलविलास ॥ ३ ॥ पडिकमणो दोयटंक देववंदनत्रिहुंकाल, आठपोहरिपोपध काउसग्गसुविसाल, सुयदेविसांनिध रोगसोगसहुजाय, जिनकृपाचंद्रसूरि तपसेव्यां सुखथाय ॥ ४ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ दीवालिनी थुइलि० ॥

वीरजिनेसरभवणदिनेसर अतिशयगुणनादरियाजी, भव्यकमलप्रतिबोधता शोधता श्रमणसंघपरिचरियाजी, हस्तिपालराजानी सभामां अंतिमचोमाशी आयाजी, कातिवदिअमावसरात्रे स्वातिसिद्धसिधायाजी ॥ १ ॥ कल्याणक श्रीरिषभादिकना पांच पांच मनआणोजी, वीरनो गर्भापहारछठो आगममांहि वखाणोजी, तीनकाल जिनपूजाकरिने दीवालीदिन जाणोजी, च्यार आठ दश दोय वंदीने आतम निजवर आणोजी ॥ २ ॥ दीवालीदिन छठकरीने गुणना त्रण गुणिजेजी, सोलपहरलग पोपधठविने ध्यान प्रभुनो धरिजेजी, गौतमस्वामी केवलपायो पडवाने पुन्यवंताजी, एका-

सणोकरि हरपहृदयधरि सतरे वरसउजमंताजी ॥ ३ ॥ दीवाली दिनअतिउछरंगे कल्पसुणो भविप्राणीजी, ठवणायरियनीपूजा करीने गौतमरासनीवाणीजी, ब्रह्मशान्तियक्षराज सिद्धायिका देवीसांनिधकारीजी, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सेवोदीवालिदिल धारिजी ॥ ४ ॥ ॥ इति० ॥

॥ अथ पुनमनी थुइ ॥

श्रीसिद्धाचलतीरथसेवो, तीनजगतमांदुजोनएवो, एहथी शुभफललेवो ॥ श्रीआदीश्वरजिनवरराया, पुर्वनीवाणुं इणगिरिआया, इंद्रादिकमनभाया ॥ श्रीपुंडरीकप्रथमगणधारी, पांच क्रोड़मुनिवरपरिवारी, अणसणकर्यो हितकारी ॥ फागुण पूनिम संलेखनाजाणो, चैत्रीदिननिरुपमगुणखाणो, पाम्या पदनिरवाणो ॥ १ ॥ चैत्रीदिन देववंदनकीजे, भावसहित प्रभु पूजा रचीजे, जिनगुणगाइ जशलीजे ॥ तिलककरो प्रभुने दशवीश, चढता चलि तीश चालीस, पंचाशनी पूजा जगीश ॥ पुष्पअक्षतफलनैवेद्य सारजिनवरपूजा विविधप्रकार, धूपदीपमनुहार ॥ कलशअठोत्तरशत, पूजाकरिये, चोवीशजिनवरध्यानजधरिये, जिम भवसागरतरिये ॥ २ ॥ चैत्रीदिन शुभवारमां लीजे, गुरुमुखथी ए तपऊचरीजे, विधिसहितवहीजै ॥ सोलवरस लग तप आराधि, आतमगुणनिज संपदा साधी, पावे सहजसमाधी ॥ तपपूरणउझमणोधारो, करिने सासन सोभावधारो, जिमहोवेनिस्तारो ॥ काउसग्गप्रदक्षिणा करिये, गुणणोगुणी जिनगुणसांभरिये, आगमविधिअनुसरिये ॥ ३ ॥ दोयटंकपड़िक्कमणो कीजे, चैत्री सेत्रुंजययात्राकरी

पुन्यभंडारभरिजै ॥ छहरीपाली जेनरभेटे, संघपतिथइ सहु दुख मेटे, भववनमे नवि लेटे ॥ वारहपूनिम पर्वकहीजे, चारित्रतिथीशास्त्रमांहि लहीजे, चक्रेसरीसांनिधकीजै ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिराजै, खरतरगच्छ जिनआणाछाजै, सुखसंपदा सुसमाजै ॥ ४ ॥ इति पुनम थुइ० ॥

॥ अथ वीजनु चैत्यवंदनं लिख्यते ॥ १ ॥

द्विविध धर्म जिनवर कह्यो । साधुश्रावकनो जाण । शिक्षा दोय सेवो सदा । ग्रहणासेवन आण ॥ १ ॥ धर्म शुक्ल दुग ध्यान ने, ध्यावो चतुरसुजाण । आर्त्तरौद्र दोयपरिहरो । त्रिकरण शुचि महिरान ॥ २ ॥ अभिनंदन जनम्या प्रभु । सुमति अर चवियां । वासु पूज्य थया केवली । शीतल शिव सुख वरिया ॥ ३ ॥ सीमंधर युगमंधरा । वीसविहरमान होय । राग द्वेषनो त्याग करी । निश्चय व्यवहार जोय ॥४॥ वीजदिवस आराधिये ए । ज्ञानतिथीसुविहाण । सूरिकृपाचंद्रसेवतां । तपथीक्रोड कल्याण ॥ ५ ॥ ॥ इतिवीजतिथीनो चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपंचमी चैत्यवंदनं ॥ २ ॥

पांच ज्ञान प्रगटायवा । पंचमी तप सुप्रधान । आराधो भवि मने । प्रकटे ज्ञान निधान ॥ १ ॥ अवग्रहादिक जाणिये, मति अठाविश मार, चवदवीशभेद श्रुततणा । अवधि छ असंख्य प्रकार ॥ २ ॥ मनःपर्यव दुगभेदछे । केवलसकलप्रकाश । लोकालोक स्वरूपनो । ज्ञायक ज्ञान एखास ॥ ३ ॥ सर्वाराधक ज्ञानने । भाख्यो श्री जगदीश । सासोस्वासमां कर्मनो । क्षयकरे

विशवावीश ॥ ४ ॥ लघु मध्यम उत्कृष्ट पंच । मास वरिस जाव-जीव । विधिपूर्वक आराधतां । पामे ज्ञानसदीव ॥ ५ ॥ दोयप-रोक्ष प्रत्यक्षतीन । श्रुत उपगारी जाण । सूरिकृपाचन्द्र प्रणमतां । ल-हियें निर्मल नाण ॥ ६ ॥ इति पंचमी चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदनं लिख्यते ॥ ३ ॥

आठमदिन आराधिये । प्रवचनमातासार । अष्टसिद्धि आपे सदा । कापे कुमतिकुठार ॥ १ ॥ आठमद निवारिने । अष्टकर्म करि अंत । श्रावणसुदिआठमदिने । पासजीलह्या भवअंत ॥ २ ॥ भादरवावदि आठमें । सुपासचव्याजगभाण । माघ सुदि जनम्या अजित, फागुन संभवचव्यां जाण ॥ ३ ॥ चैतर वदि आठम रिषभ । जन्म दीक्षावे जाण । वैसाखसित अष्टमी । अभिनंदन निर्वाण ॥ ४ ॥ एहिजतिथी जनम्या सुमति । जेठ वदि मुनि सुव्रत, आषाढसुदि आठम । नेमिजिनेसर निर्वृत ॥ ५ ॥ श्रावण वदि आठम दिने । नमिजनम्या जिन जाण । पोसह करो आठपहेरनो । जिमलहो गुणमणिखाण ॥ ६ ॥ अष्टमी इम आराधिये । त्रिकरणकरि इकठोर । कृपाचंद्रसूरि भवितणा । तूटे कर्म कठोर ॥ ७ ॥ इति अष्टमी चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदनं लिख्यते ॥ ४ ॥

श्रीमल्ली त्रिभुवन धणी । जन्म दीक्षाने ज्ञान । कल्याणक-एकादशी । मिगसर शुदि मनआण ॥ १ ॥ अर पारस दीक्षा-ग्रही । एकादशी दिन जाण । रिषभ अजित सुमति नमि, पाम्यो केवलनाण ॥ २ ॥ पद्मप्रभु सिवपुरलह्यो । एकादशी अतिरूडी ।

इग्यारे अंग आराधवा । ए तिथी नहीं कूडी ॥ ३ ॥ इग्यारे गणधर थया । द्वादशअंगरचनार । जिनकृपाचंद्रसूरि सेवतां । पामे भवनो पार ॥ ४ ॥ इति एकादशी चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ १० शीतलजिन चैत्यवंदनं लिख्यते ॥५॥

शीतल जिनपतिजगतिलो, शांति सुधारससार । अंतर ताप बुझायवा । प्रभु दरसण जलधार ॥ १ ॥ सुग्रीव कुलनभ दिनमणि। नंदामात सुजात, तीनभवनतारनतरण, प्रभुजीछो विख्यात ॥ २ ॥ अंतर वैरी नमायवा । नमि सेवो जगदीश । पारस फरसन तें हुवे । पावन विसवा वीश ॥ ३ ॥ उगणीसे तेहोतरे, बुहारी थाप्या ईश । प्रभुपदपंकजमां नमें ॥ कृपाचंद्रसूरीश ॥ ४ ॥ इति १० शीतल जिन चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ १२ वासुपूज्यजिन चैत्यवंदनं लिख्यते ॥ ६ ॥

बारम जिनवरवंदिये । वासुपूज्य जिनचन्द । रक्तवरणद्युति सुंदरु, मोहे सुरनरवृंद ॥ १ ॥ सित्तरधनुपनी देहडी । लाख बहुत्तर आय । त्रिकरण जोगे आराधतां । निजगुणनिर्मलथाय ॥ २ ॥ देरासर भलो दीपतो ए ॥ बुहारी नगरमझार । सूरिकृपाचंद्र सेवतां । पामे जगजयकार ॥ ३ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ पर्युषण पर्वनो चैत्यवंदनं ॥ ७ ॥

श्रीवीर जिनेसर भाखियो । पर्वमांसिरदार । रत्नोमां चिंतामणि । गिरिमां शत्रुंजयसार ॥ १ ॥ लौकिक लोकोत्तर वलि । पर्वघणा दिलधार । पजुषण सम को नहिं । बोल्या शास्त्रमझार

॥ २ ॥ नंदीसर दीपेजई। उच्छव करे सुरराज । तिम श्रावक आराधतां । सारे वांछितकाज ॥ ३ ॥ आस्रव कषाय निवारिने । समायक करो शुद्ध । जिनपूजा परभावना । करिने तरो भव बुद्ध ॥ ४ ॥ कल्पसूत्रसुणो इकमना । संवच्छरी पडिक्कमिये । जिनकृपाचंद्रसूरि सेवतां । भवमां नवि भमिये ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपदजी चैत्यवंदनं लि० ॥ ८ ॥

श्रीअरिहंतनाबारगुण, सिद्धनाआठकहाय ॥ छत्तीशगुण सूरितणा । पचवीसकह्या उवज्झाय ॥ १ ॥ मुनिवरगुण सत्तावीसछै । दरशणसडसठजोय । ज्ञानइकावनभेदछै । चारित्र सित्तर होय ॥ २ ॥ तप पचाशगुण जाणियै । नवपदनाश्रीकार ॥ एकंदर सहुध्याइये । त्रणसैच्छयालीश सार ॥ ३ ॥ आंबिलकरि आराधियै । नवओली सुजगीश । त्रिकरणयोगेध्यावतां । जिनकृपाचंद्रसूरीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणीतप चैत्यवंदनं ॥ ९ ॥

वासुपूज्यजिनवरनमुं, बारमजिनसिरताज, रोहिणीतप आराधतां, सारे वांछितकाज, ॥ १ ॥ चोविहारउपवासकरि, पूजक पूजीदेव, दोयसहसगुणनो करी, त्रिकरणथिरकरोसेव ॥ २ ॥ सत्तावीशलोगसतणो, काउसग्ग दिलधार, खमासमणदेइभावथी, प्रदक्षिणासुविचार, ॥ ३ ॥ स्वस्तिककरि फलढोइयै, पूजाविविधप्रकार, जिनकृपाचंदसूरिसेवतां, पामे भवनोपार, ॥ ४ ॥ इति रोहणीतपनो चैत्यवंदनं सं० ।)

॥ अथ श्रीवीरजिन चैत्यवंदनं ॥ १०॥

चोविसमजिनवर नमुं, महावीरजिनदेव, शांति सुधामय चं-

दलो, सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ भद्रेसरमें दीपतो, देरासर मनुहार, वीरजिनेसर जगजयो, बावनदेहरी सार ॥ २ ॥ त्रिसलानंदन जगधणीए, सुख संपति करतार, त्रिकरणयोगे प्रणमतां, कृपाचंद सुखकार ॥ ३ ॥ इति श्रीवीरजिन चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीनेमिजिनचैत्यवंदनं ॥ ११ ॥

नेमिसरजिन जगधणी, रैवतगिरिसिणगार, यादवकुल नभ दिनमणि, भवियण ने सुखकार ॥ १ ॥ तीन कल्याणक इहां थयां, दीक्षानाण निरवाण, भव्य मनोरथ पूरवा, चिंतामणी समजाण ॥२॥ शिवरमणी रंगे वर्या ए, बावीसमजिनचंद, कृपाचंद नितप्रति नमें, शिवसुखतरूनोकंद, ॥ ३ ॥ इति नेमिजिन चैत्यवं-दन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनलांछन चैत्यवंदनं ॥१२॥

रिषभ वृषभ गज अजितने, संभवघोडोजाण, अभिनंदनने वांदरो, कौंच सुमति मन आण ॥ १ ॥ पद्म पद्म स्वस्तिक सुपार्श्व, शशिचंद्रप्रभ लहिये, मकर सुविधि शीतलश्रीवत्स, श्रेयांसखडगी कहिये ॥ २ ॥ वासुपुज्य महिषतणो, विमल वराह नो जाणो, अनंतश्येन वज्र धर्मने, शांति मृग पहिचानो ॥ ३ ॥ कुंथुनाथने बोकडों, अर नंद्यावर्त होय, मल्लीघट सुव्रत काछवो, नमि निलोत्पल जोय ॥ ४ ॥ नेमि संख फणि पार्श्वने, वीर सिंह कहाय, कृपाचंद्र ध्वज युतनमुं, चउवीसे जिनराय ॥ ५ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनलांछनचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ पूनिमचैत्यवंदनं ॥ १३ ॥

श्रीजिनसासनजगजयो, पर्वसिरोमणिजाण, पूनिमपर्वमोटो कयो,

त्रिकरणशुचिमनआण ॥ १ ॥ श्रावणसुदिपूनिमचव्या, मुनिसुव्रत-जगदीश, आसोजीपूनिमचव्या, नमित्रिहुंजगनाईश ॥ २ ॥ मिगसरपूनिम संभव, संयमलीधोसार, पौषी धर्मजिनेसरु, केवल ज्ञानउदार ॥ ३ ॥ चैत्रीश्रीपद्मप्रभु, केवलज्ञानप्रधान, इम पूनिमांजाणीये कल्याणक सुखखान ॥ ४ ॥ दशवीशत्रीश चालीशनी, पंचाश पूजासार, फलअक्षत नैवेद्यनी, पूजा विविध प्रकार ॥ ५ ॥ चैत्रीसेत्रुंजसेविये, जात्राकरीमनरंग, तिमकार्तिकी आराधिने, करो-सद्गुरुनोसंग ॥ ६ ॥ वारहपूनिम आराधियेए, श्रीयुगादिजिनदेव, जिनकृपाचंद्रसूरिसदा, सुरनरसारेसेव ॥ ७ ॥ ॥ इति पूनिम चैत्यवंदनसं० ॥

सोलमजिनवरसेविये, शांतिनाथसुखकार, अचिराउदरेऊपना, भाद्रववदिसातमसार ॥१॥ जेठवदितेरसप्रभु, जनम्या जगतदयाळ, मारिनिवारणथीथयो, शांतिनाम सुरसाल ॥ २ ॥ चक्रिपदपाम्यो-प्रभु, चउदशसंजमलीध, पौषसुदिनवमीदिने, केवल सर्व प्रसीध ॥ ३ ॥ जनमदिवसप्रभुपामीयो, सिवसुख परमपवित्र, लाखवरसनो आउखो, सुणोश्रीसांतिचारित्र ॥ ४ ॥ मृगलांछनसेवितसदा, गरु-डयक्षअभिराम, जिनकृपाचंद्रसूरिसेवतां, निर्वाणी पूरेकाम ॥ ५ ॥ इति सांतिनाथजी चैत्यववंदनं ॥ १४ ॥

वामानंदनपासजी, अश्वसेनकुलचंद, नीलवरणशुचिदेहडी, सेवे सुरनरइंद ॥ १ ॥ चेतवदि चोथऊपना, माता कूखे स्याम, पोष-दशमी जनम्याप्रभु, त्रिभुवनजन विसराम ॥ २ ॥ इग्यारस दीक्षाग्रही, कमठ हरावीईश, चैत्रकृष्णनीचोथने, केवल लह्यो जगीश ॥ ३ ॥ संघथापीने जगगुरु, विचर्यादेशविदेश, वाणा-

रसी नगरी थया, चउकल्याण विशेप ॥ ४ ॥ आपाढसित आठमे, सिववधु झाल्यो हाथ, जिनकृपाचंदसूरिसदा, सेवोजगनानाथ ॥५॥ इति पारसनाथ चैत्यवंदन ॥ १५ ॥

वीरजिनेसरजगधणी, त्रिशलानो जायो, आपाढशुदिपट्ठी प्रभु, देवानंदा उदरे आयो ॥ १ ॥ आश्विनवदि त्रयोदशी, हरणेगमेपी ईश, त्रिशलाउदरे संक्रम्या, चवदे स्वप्न लहीश ॥ २ ॥ चैत्रशुक्ल-त्रयोदशी, जन्मथयोसुखकार, चौसठइंद्रआव्या तिहां, स्नात्रकरे विधिसार ॥ ३ ॥ वर्धमान नाम थापीयो, वृद्धितणे अनुमान, मिगसरवदि दशमीलीयो, संजम सुखनी खान ॥ ४ ॥ वैशाख सुदि दशमीदिने, केवल पाम्योसार, पावापुरी मुगते गया, दीवालीसुखकार ॥ ५ ॥ इम कल्याणक प्रभुतणा, आराधे नरनार, जिनकृपाचंद्र सूरि कहे, पामे भवनो पार ॥ ६ ॥ इति श्री-महावीर स्वामी चैत्यवंदनं ॥ १६ ॥

॥ अथ नव पद वृद्ध स्तवनं ॥

(दुहा) अरिहंतादिकपदतणो । ध्यानधरि मनमांहि, सिद्ध चक्रगुणवरणवुं; त्रिकरणधरिउच्छाहि ॥ १ ॥ राजग्रहीनगरी [illegible] । समवसर्या गणधार ॥ सिद्धचक्रगुणवरणव्या, तेगुणजो [illegible]धिकार ॥ २ ॥ (ढालपहली) जगजीवनजगवालहो ॥ ए-देशी, श्रीगौतमगणेसरु । पभणे भविसुखकार लालरे । श्रेणिक पमुहा सांभले । उत्तमधर्मविचार ला० श्री० ॥ ३ ॥ दुर्लभ मानुष्यभव लही । सेवो श्रीजिनधर्म ला० दानादिकचउभेदथी । आराधिलहोधर्म ला० श्री० ॥ ४ ॥ भावविनाजे दानछे ।

सिवसुखतेहथी न थाय ला० सीयल ते निष्फळलोकमां । भाव विना कहिवाय ला० श्री० ॥ ५ ॥ भाववीहूणो तपसहि । भव वित्थारणहेतु ला० दानादिकभावेमिल्या । भवसायरना सेतु ला० श्री० ॥ ६ ॥ भाव मनोविषयिकह्यो, सालंबनमनजाण ला० आलंबनबहुजातिना । नवपदमनमा आण ला० श्री० ॥ ७ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज । उवझाय साधुवखाण, लालरे दर्शन ज्ञान चारित्रवलि । तप ए नवपद जाण ला० श्री० ॥ ८ ॥ ढाल दूसरी ॥ भरतरीनीदेशी ॥ नवपद ध्यावो भविजना। त्रिकरण करिइकतारजी ॥ गौतमस्वामी उपदिसै, श्रेणिकनरपतिसारजी॥ न० ॥ ९ ॥ अढारदोष दूरे टल्या । केवलज्ञानप्रकाशजी ॥ देवदानवपति प्रणमता । प्रगट करे तत्व खासजी न० ॥ १० ॥ एहवा श्री अरिहंतने । ध्यावोचतुर सुजाणजी ॥ भाव सहित आराधतां । सिवसुखलहोमहिराणजी न० ॥११॥ पनरभेद प्रसिद्ध छे । कर्म रहित सुखदायजी ॥ सिद्धअनंतचतुष्कता ध्यावो सिद्धलयलायजी न० ॥ १२ ॥ पंचाचारने पालता, परउपगार प्रधानजी ॥ शुद्ध सिद्धांत वखाणता आचारजश्रुतखानजी न० ॥१३॥ गणतृप्ति करता भला । सूत्रअर्थनोदानजी । शिष्यादिकने आपता । नमोउवज्झायसुजानजी ॥ १४ ॥ कर्मभूमिमां विचारता । रत्नत्रयनाधारजी ॥ सुमति गुपति मुनिपालता । निकषाया सुविचारजी न० ॥ १५ ॥ जिन प्रणीत जोशास्त्रमां । तत्वसद्दहण स्वरूपजी, दरशन रयण प्रदीपने। धारोचित्तमां अनूपजी न० ॥ १६ ॥ जीवादिकपदार्थनो । बोध-स्वरूप विचारजी, विनयकरि सीखोसदा । नाणछे सर्व आधारजी न० ॥ १७ ॥ अशुभक्रियानो त्याग छे । सुभ किरिया अप्रमा-

दजी ॥ उत्तम गुण निरुक्तथी । लहोचरणनो स्वादजी न० ॥ १८॥ सघन करमतमहरणकुं । भानुसमोतपजाणजी ॥ कषायरहित बारभेदछै । तपपदमनमांआणजी न० ॥ १९ ॥ (ढाल) तीजी ॥ कपूर हुवे अतिऊजलोजी एदेशी । एनवपदजिनधर्मनोजी, सारभूत कहिवाय, सिवसुखनोकारकसहीजी, आराधो गुरु सहाय, भविकजनसेवो जिनउपदेश, पभणे प्रथमगणेश, भ० ॥ ॥ २० ॥ ए नवपदथी नीपजैजी, सिद्धचक्रयंत्रराज, आराधिने सुखलह्योजी, जिम श्रीपालमाहाराज, भ० से० ॥ २१ ॥ तब पूछे मगधेसरूजी, कुणश्रीपालनरेश, किमआराधिसुखपामीयोजी, करुणाकरो गणेश भ० से० ॥ २२ ॥ गौतमस्वामि उपदिशेजी, निसुणो श्रेणिकराजान, चंपानगरीनोराजीयोजी, श्रीपालनामसुजाण भ० से० ॥ २३ ॥ उंबररोगेपीडीयोजी, परणि राजकुमारि, उज्जयणीमाजूहारियाजी, रिषभेश्वर मनुहारी भ० से० ॥ २४ ॥ मुनिचंद्रगुरुउपदेशथीजी, आराध्यो सिद्धचक्र, रोगगयो वलिसुखलह्योजी, संपदापामी जिमशक्र भ० से० ॥ २५ ॥ नव पद ओली आंबिलतणीजी, नवराणीनेसाथ, उज्जमणो पूरण कियांजी, करि खरच्यो घणो आथ भ० से० ॥ २६ ॥ नवपडिमाभरासरुजी, नवजीरणउद्धार, पहिलोपदआराधियोजी, नवपूजा मनुहार भ० से० ॥ २७ ॥ इमनवपदविस्तारथीजी, पूजी लह्यो सुखसार, आयुपूरण करि ध्यानथीजी, नवमे स्वर्ग अवतार भ० से० ॥ २८ ॥ इमश्रीपालनाभवथकीजी, नवमेभव सद्दु मार, निरुपम शिव सुख पामशेजी, कहे गौतमगणधार भ० से० ॥ २९ ॥ श्रेणिक सुणि हरखित थयो जी, प्रभुजीना वांद्या

पाय। वीरजिनेसर इम भणे जी, सुणश्रेणिक नरराय भ० से० ॥ ३० ॥ एक एक पद आराधतांजी, केई पाम्या भव अंत, नव पद ते निज आतमाजी, ध्याता ध्येय लहंत, भ० से० ॥ ३१ ॥ तीर्थंकर पद पामस्येजी, तुंइणभरतमझार, इम सांभलि नृप आनंदियोजी, निजधरपोतो सुखकार भ० से० ॥ ३२ ॥ कलश ॥ इम वीरजिनवरभुवन दिनयर नवपदमहिमावरणव्यो, सुरतवंदररहि चोमासो सिद्धचक्रगुणगणस्तव्यो, संवतउगणीसेपचोत्तर आश्विन शुदिसातमदिने, जिनकृपाचंद्रसूरिपभणे वर्तो मंगल प्रतिदिने ॥ ३३ ॥ इति नवपद वृद्ध स्तवनम् ॥

॥ अथ दूजनो स्तवनम् ॥

(दुहा) वर्द्धमान जिनवंदिये, त्रिशलानंदनदेव, सिंहलंछन सेवितसदा, सुरपतिसारे सेव ॥१॥ जन्मसमेथी जग गुरु, अतुलवलि वड वीर, तप उत्तम विधियुतकह्यो, जलनिधि जिम गंभीर ॥ २ ॥ (ढाल पहली ॥) कृपानाथ मुझवीनती अवधार ॥ ए देशी ॥ धर्म करो जिनराजनोजी, आणी उल्लटभाव, दोयभेदे आराधतांजी, पामोआत्मस्वभाव, भविकजनसेवो श्रीजिनवाणी, निजगुणमणिनी खाणी, ॥ भ० ॥ १ ॥ तिथि आराधन फलतणोजी, शास्त्रमांहे अधिकार, बीजआराधो भविजनाजी, तपकिरिया विधिसार भ० ॥ २ ॥ दोयमासलघु दूजनेजी, जावजीव उत्कृष्ट, दोयवरस दोयमासनीजी, करो बीज शुभदृष्ट, ॥ भ० ॥ ३ ॥ पडिकमणा दोय टंकनाजी, देववंदननिरधार, विधिसेतीफल नीपजेजी, पामेभवनोपार ॥ भ० ॥ ४ ॥ बीजदिवसनो सहु जुवेजी, चंद्रोदयसुप्रसिद्ध, वधातिकलातिमजाणजोजी,

वांछित सिद्ध ॥ भ० ॥ ५ ॥ दुविधधर्म जिनवरकह्योजी, शने सर्वविरत्त, धर्म शुकल दोयध्यानमांजी, होय सदा निरत्त भ० ॥ ६ ॥ अर्थ प्रकासे जिनवरूजी, सूत्ररचे गणधार, विहं सवे वाचंयमीजी, द्वादश अंग विचार, ॥ भ० ॥ ७ ॥ (ढाल दूसरी) ॥ नमोरे नमो सेत्रुंजगिरिरे ॥ एदेशी ॥ वीजदिवसमां जानियेरे, कल्याणक सुविसालरे, श्रावण सुदि वीजे चव्यारे, सुमतिनाथ दयालरे, नमोरे नमो जिनचंद्रनेरे ॥ १ ॥ माघमासनी ऊजलीरे, वीज दिवसमां जाणरे, अभिनंद जनम्या प्रभुरे, त्रिहुं जगना महिराणरे ॥ नमो रे० ॥ २॥ ए हीज तिथी वासुपूज्यजीरे, पाम्यो केवलनाणरे, फागुणसुदिवीजे जानियेरे, अरनाथचवन सुजाणरे ॥ नमोरे० ॥ ३ ॥ समेतसिखरपर सिववर्यारे, सीतल जिनवरनाणरे, चैतवदिवीजसुंदरुरे, अविचलसुखमनआणरे, ॥ नमो० ॥ ४ ॥ इम कल्याणक इनतिथीरे, काळ अनंते होयरे, अणंत कल्याणक जाणजो रे, एह आगमविधि जोयरे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ तपपूरणहूवा थकांरे, उज्जमणो सुविवेकरे, रत्नत्रयी आराधवारे, धन खरचो बहुछेकरे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ सीमंधरादि जिनवरारे, विहनमीसरे, मनमंदिरमांआवजोरे, जिनकृपाचंद्रसूरीसरे नमो० ॥ इति वीजका स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पंचमिका वृद्ध स्तवन लि० ॥

दुहा ॥ सिद्धारथ कुल दिनमणि । त्रिसलादेवि सुजात ॥ वर्द्धमानजिनचंदकु । नमन करि परभात ॥ १ ॥ गुरुदरियो भरियो गुण, किम विधि तरियो जाय ॥ वलिहारि गुरुदेवनी, मोमनरयो लोभाय ॥ २ ॥ जिन वाणी पीयूषरस, पानकरो निशिदीस ॥

पामो नाण सुहंकरु । भाखै जगनाईश ॥ ३ ॥ (ढाला) कपूर हुवै अति ऊजलोजी ॥ ए देशी ॥ ज्ञानआराधो भविजनाजी । आणि भक्तिअपार, पांचज्ञानप्रगटायवाजी । पंचमीसेवोउदाररे, प्राणि जिनवाणीमन आण, अनुपमसुखनीखाणरे ॥ प्रा० जिन० ॥ १ ॥ नाण वडो संसारमांजी, ज्ञानथी मुगति थाय, ज्ञानदीपक सम जाणियेजी, सर्व लोक प्रगटायरे, ॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ २ ॥ दिव्यज्ञानलोचनकह्योजी, लोकालोकदेखाय ॥ ज्ञानविनापशुसारिखोजी, जाणे नहीं नर कांयरे ॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ ३ ॥ ज्ञान आराधकसर्वथीजी, किरिया देशविचार, भगवति सूत्रमां भाखियोजी, आठमें शतक मझाररे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ अज्ञानी क्रोड वरसमांजी, तप करि निर्जरा जेह, ज्ञानी स्वासोस्वासमांजी, कर्मक्षय करे तेहरे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ ज्ञानतणो अधिकार छे जी, नंदीसूत्र मझार, क्रिया सहित ज्ञान सुंदरूजी, मोक्षतणो दातारर ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ जिमसोनो सुगंधथीजी, रत्नमुंदडी यें जाण, संख सोहे दूधे भर्योजी, तिमकिरयायुतनाणरे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ७ ॥ महानिसीथमांहे कह्योजी, पंचमीविधिविस्तार, वीरजिनंदे दाखियोजी, सूत्रैश्रीगणधाररे । प्रा० । जि० । ८ । (ढाल बीजी) सखि आजअनोपमदीवालि ॥ एदेशी ॥ ज्ञान आराधी संपदासाधी, निजगुणनो एउपगारी, सखि नाण सुहंकर गुणकारी ॥ ९ ॥ पंचमी तप विधियुत भवि करकै, नाणने सेवो इकतारी ॥ स० ना० ॥ १० ॥ मगसर माह फागुण वैसाख, जेठ आपाढने दिलधारी ॥ स० ना० ॥ ११ ॥ एपट्मासे विधियुत लीजे, शुभदिन गुरुमुखथी सारी ॥ स० ना० ॥ १२ ॥ दे ५ २६

करीने, पोथीपूजो सुविचारी ॥ स० ना०॥ १३ ॥ गीतारथगुरु चरणनमीने, नंदिविधिकरि हितकारी ॥ स० ना० ॥ १४ ॥ गुरुमुखउपवासभावेकरीने, पडिक्कमिटालो अतिचारी ॥ स० ना० १५ ॥ शास्त्रभणोश्रीसद्गुरुपासै, पंचमीदिनआरंभटारी ॥ स० ना० ॥ १६ ॥ पांचवरसपांचमासनेउत्कृष्ट, जावजीवकरे इकतारी ॥ स० ना० ॥ १७ ॥ पांचमासलघुपंचमीकीजै, स्तवनथुइकहे ब्रह्मचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १८ ॥ ढालतीजी ॥ पहलोअंग सुहामणोरे ॥ एदेशी ॥ ज्ञाननमोगुणभविजनारे, नाणप्रकाशकजाणरे सुगुणनर, पंचमीतपविधियुतकरीरेलाल, पामो अविचलनाणरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥ दोयभेदे नाणजाणीयेरे । निश्चयने व्यवहाररे ॥ सु० ॥ त्रणअनुयोगव्यवहारमांरे ॥ ला० ॥ द्रव्य निश्चय सुखकाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २० ॥ पांचज्ञानना भेदछे रे, इकावनसुविशेपरे ॥ सु० ॥ भिन्नभिन्न ते दाखव्यारे ॥ ला० ॥ तेह कहुं लवलेशरे ॥ सु० ज्ञा० ॥ २१ ॥ मतिज्ञानना जाणियेरे, आठावीश प्रकाररे ॥ सु० ॥ श्रुतनाचवदेनेवीशछेरे, अक्षरादिक सुविचाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० २२ ॥ अवधि छ असंखभेदछेरे, मनपर्यवदुगजाणरे ॥ सु० ॥ लोकालोक प्रकाशको रे ॥ ला० केवल मनमें आणरे ॥ सु० ज्ञा० ॥ २३ ॥ तीनज्ञान प्रत्यक्षछेरे, देशसर्व सुजगीशरे ॥ सु० ॥ अवधिमनपर्यव वलिरे ॥ ला० ॥ देश प्रत्यक्ष कह्या ईशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २४ ॥ केवल सर्व प्रत्यक्षनेरे, ख्यातो परमपवित्ररे ॥ सु० ॥ दोय परोक्ष पिछाणियेरे ॥ ला० मतिश्रुतभेदविचित्ररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ च्यार ज्ञान टप्पाकह्यारे, श्रुत अनुयोग विचाररे ॥ सु० उद्देशादिक

जाणियेरे, ला० अनुयोगद्वारमझाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २६ ॥ उपगारि श्रुतनाणथीरे, जाणे आज त्रिकालरे ॥ सु० ॥ परबोधकश्रुत सैवियेरे लाल, सद्गुरुचरणनिहालरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ वायण प्रछना परावर्त्तना रे, अनुपेहा दिलधाररे ॥ सु० ॥ धर्मकथा कही कीजीयेरे ॥ ला० ॥ सझाय पांच प्रकाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २८ ॥ अंग इग्यार बार उपांगछेरे, दश पयन्ना नंदीशरे ॥ सु० ॥ छछेद चउमूल दिलधरोरे ला० ॥ अनुयोगद्धार पैतालीशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥ ढाल चोथी ॥ गरवेनी ॥ स्वामीशरीरसोसाइ गयो ॥ एदेशी ॥ ज्ञानभजो भविप्राणीया, वंछितफलदातार, ज्ञानी दीपक समकह्यो, सूत्रै श्रीगणधार ॥ ज्ञान० ॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि, कल्पलताअनुकार, एहथीअधिकोजाणिये, महिमा अगमअपार ॥ ज्ञा० ॥ ३१ ॥ कालअनादिलगे भम्यो, मिथ्यामति भवमांय, सम्यग्ज्ञान प्रगटे यदा, भवमें न रहाय ॥ ज्ञा० ॥ ३२ ॥ समकितगुणप्रगटाववा, त्रणकरणकरेजीव, समकितज्ञान एकणसमे, लहै सुखअतीव ॥ ज्ञा० ॥ ३३ ॥ देशविरतिपामेंतदा, पल्यपहुत्तस्थितिजाय, संख्यातसागरगया चरणधर, ज्ञानादिकचिंतलाय ॥ ज्ञा० ॥ ३४ ॥ घातिकरमनो क्षयकरी, केवलज्ञानप्रकाश, भव्यकमलप्रतिबोधता, विचरे भगवंतखास ॥ ज्ञा० ॥ ३५ ॥ ज्ञानचरणदोयभेदछै, मुक्ति कारणजाण, तपसंजमविहुंदाखिया, भावए मनमांआण ॥ ज्ञा० ॥ ३६ ॥ पंचमिआराधनाकरि, ज्ञानभगतिकरो सार, तपपूरणथयां कीजिये, उज्जमणो सुविचार, ॥ ज्ञा० ॥ ३७ ॥ पांच पांच ज्ञानादिना, उपगरण करो सार, धनखरचो बहुभावथी, लहो उ-

संभार ॥ ज्ञा० ॥ ३८ ॥ देवो दान सुपात्रने, साहमीवछलसार, भगतिकरो साहमीतणी, रात्रीजागोउदार ॥ ज्ञा० ॥ ३९ ॥ वरदत्तने गुणमंजरी, ज्ञानआराधिनेसुख, पामी अविचल-पदलह्या, मेटीनेभवदुःख ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥ कलश । संवत् उगणीसैंपिचत्तर पोषवदिएकम भले, सुरतबंदरभविक सुखकर-सीतलजिनसुपसाउलै, श्रीवीरजिनवर पंचमितपविधिप्रकाश्यो शुभ-मणे, सुविहितपरंपरगच्छखरतर जिनकृपाचंद्रसूरिभणे ॥ ४१ ॥

॥ इति पंचमी ४ ढालनो स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टमी वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ वर्द्धमान जिनवरनमुं । समरिसारदमाय । अष्टमी तप विधिवरणवुं । आगमयुतसंप्रदाय ॥ १ ॥ आठम तिथी आराधवा । भाखं त्रिजगभाण ॥ विधिसेति तपकीजिये । पामे-उत्तमनाण ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली शंभवजिनवरवीनती एदेशी ॥

आठम तप आराधिये । अष्टमीगति दातारोरे ॥ प्रवचन-माता आठने । पालो निसदिन सारोरे ॥ आठम० ॥ १ ॥ अष्ट-सिद्धि कारक सदा । आठमतप उजमंतारे, सामायक पोसहकरि, पर्वतिथि सेवनारे ॥ आ० ॥ २ ॥ पर्वतिथीमां बंधाय छे । प्राये परभव आयुरे ॥ तिणकारणतिथीतपकरो । आगममांहि गवायुं रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ वृहदावश्यकवृत्तिमां । हरिभद्रसूरिबोल्लेरे, निस-चूर्णिलघुवृत्तिमां, योगशास्त्रमें खोल्लेरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नवपद प्रकरणवृत्तिमां । दिनकृत्यदेवेंद्रसूरिरे ॥ विधिप्रपा पंचाशक

वलि । इम अधिकार छे भूरिरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ सामायक पहिलां कह्यो । पाछल इरियानो पाठ रे ॥ जाणे पण माने नहिं । एह कर्मनो ठाठ रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ विधिथी सामायिककरो । जिम-पामो भवपारोरे ॥ अविधिथी किरियाकरि । नवि छूटे भवनो लारोरे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी यतनी ॥

परवतिथिये पौषधकरिये । शुद्धआगमने अनुसरिये । वलि आठ कर्मने हरिये । सलूणा भावभले आराधो, एतो आराधि सिवसुख साधो । सलूणा आठमतिथी आराधो ॥ १ ॥ आठम दोय चउदस कहिये । अमावस पूनिम लहिये । एह छ तिथी चारित्र वहिये ॥ स० ॥ भा० ॥ २ ॥ वली कल्याणकतिथी जाणो । पजूपण मनमां आणो । इत्यादिकपर्वपिछाणो ॥ स० ॥ भा० ॥ ३ ॥ बीजेअंगे पांचमेअंगे । उपाशकदशा सुखसंगे । आवश्यकटीकाउमंगे ॥ स० ॥ भा० ॥ ४ ॥ इत्यादिक आगम साखे । परवतिथिये पौपधभाखे । विधियुत करतांफलचाखे ॥ स० ॥ भा० ॥ ५ ॥ जे नित्यपौपधने ताणे । आगम विधि ते नवि जाणे । हरिभद्र वचनपरमाणे ॥ स० ॥ भा० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३ जी जइने कहेजो मारा वालाजीरे ए देशी ॥

आठम परव तिथीकही । मारा वालाजीरे । आराधो गुण गेह । जगगुरु वंदिये । मारा वालाजीरे । एह तिथी कल्याणक घणा । मारा वालाजीरे । त्रिहुं कालना गिणो तेह । जगगुरु वं० मारा वालाजीरे ॥ १ ॥ आचारांगमां भाखिया ॥ मा० ॥ वा० ॥ भावनाअध्ययनसार ॥ ज० ॥ मा० ॥ ठाणांगठाणेपांचमे ॥ मा०

॥ वा० ॥ कल्पसूत्रमनुहार ॥ ज० ॥ २ ॥ आगम प्रकरणचरित्र-घणा ॥ मा० ॥ वा० ॥ एमाप्रकटपणेतूंजोय ॥ ज० ॥ वं० ॥ पट् कल्याणक वीरना ॥ मा० ॥ वा० ॥ आगम मांहे होय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ३ ॥ पजूसणकल्पे कह्यो ॥ मा० वा० ॥ पचास दिवस प्रमाण । तेह नवि मानेमानथी ॥ मा० ॥ वा० ॥ जिनआज्ञा सुरखाण ॥ ज० वं० ॥ ४ ॥ इम अनेक कल्पना कारि ॥ मा० ॥ वा० ॥ मनमांन्योमांनेकोय ॥ ज० ॥ वं ॥ तुजआगम मुज मनवस्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ एहिजभव भव होय० ॥ ज० ॥ वं ॥ ५ ॥ विसंवादघणो पड्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ केहनेकहिये-जाय ॥ ज० वं० ॥ अतिशयज्ञानी तणो पड्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ विरहतेकेम खमाय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ६ ॥ दुःखमकालमां ऊपनो ॥ मा० ॥ वा० ॥ दक्षिण भरत मझार ॥ ज० ॥ वं० ॥ प्रभुनो-सरणो मे ग्रह्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ प्रभुछोप्राणआधार ॥ ज० ॥ वं० ॥ ७ ॥ तारक तारो तातजी ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुंछुं सेवकतुज्झ ॥ ज० ॥ वं० ॥ अपराधि घणा तारिया ॥ मा० ॥ वा० ॥ केमविसारसोमुज्झ ॥ ज० ॥ वं० ॥ ८ ॥ कलश ॥ श्रीवीर जिनवर भविकसुखकर मात त्रिशलानंदनो । मंथुएयो आगम भक्तिसंयुतदुरितकर्म निकंदनो । शुभवरस उगणीसेत-मोत्तरभाद्रवसुदिआठमसमें, जिन कृपाचंद्रसूरिस्तवनकीधो अनुभव-ज्ञानप्रकाशमें ॥ २४ ॥ इति अष्टमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ इग्यारसनो २ ढालनो स्तवन लि० ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्तिश्री मंगलकरण, हरणतापजिणचंद, वीरजिनं-दविनंदगम, प्रणमुंधरिआनंद ॥ १ ॥ गौतमआदि गणधरा

श्रुतकेवलिसुविहाण, त्रिकरणयोगेवंदता, पामेकोड कल्याण ॥ २ ॥ एकादशी तिथीवर्णवुं, शास्त्रतणे अनुसार, विधिपूर्वक आराधतां, पामे भवनोपार ॥ ३ ॥ (ढाल पहली) पणिहारीनी- देशी ॥ नेमिजिनेसरउपदिशै, सुखकारीरेलोय, सांभले कृष्ण- राजान, वालाछो, द्वारिकानगरी समवसर्या ॥ सु० ॥ रेवताचल- उद्यान ॥ वा० ॥ ४ ॥ पर्वाराधनफल कह्यो ॥ सु० ॥ सांभले परपदा वार ॥ वा० ॥ पर्युपण चउमासा भला ॥ सु० ॥ नवपद- ओलीसार ॥ वा० ॥ ५ ॥ पंचमीबीजआठम कही ॥ सु० ॥ जिनकल्याणक जाण ॥ वा० ॥ एकादशी इमजाणिये ॥ सु० ॥ पर्वाधिकमनआण ॥ वा० ॥ ६ ॥ मिगसरसुदि एकादशी ॥ सु० ॥ पर्वमांहि श्रीकार, ॥ वा० ॥ अरनाथदीक्षा ग्रही ॥ सु० ॥ पाम्योभवनोपार ॥ वा० ॥ ७ ॥ मल्लिजन्मसंजमलियो ॥ सु० ॥ पाम्योकेवलज्ञान ॥ वा० ॥ नमिनाथने ऊपनो ॥ सु० ॥ केवल- नाण प्रधान ॥ वा० ॥ ८ ॥ पांचकल्याणक अतिभला ॥ सु० ॥ थया इणभरतमझार ॥ वा० ॥ तिमहिजऐरवत खेत्रमां ॥ सु० ॥ भाखेजगदाधार ॥ वा० ॥ ९ ॥ पांचभरत ऐरवतवलि ॥ सु० ॥ पांचकल्याणकजाण ॥ वा० ॥ दशखेत्रना इम जाणियै ॥ सु० ॥ पचाशकल्याणक आण ॥ वा० ॥ १० ॥ तीनकालगिणतांथकां ॥ सु० ॥ दोढसैकल्याणकथाय ॥ वा० ॥ तिथीमांहिसिरोमणि ॥ सु० ॥ इग्यारससुखदाय ॥ वा० ॥ ११ ॥ अनंतकल्याणकइणपरे ॥ सु० ॥ अनंत चोवीसी जोय ॥ वा० ॥ मौनकरीआराधिये ॥ सु० ॥ एहथी सिवसुखहोय ॥ वा० ॥ १२ ॥ चोविहारउपवासथी ॥ सु० ॥ पौसहकरिनेसार ॥ वा० ॥ सुगुरुचरणसेवीकरी ॥ सु०॥

काउसग्गदिलधार ॥ वा० ॥ १३ ॥ मौनकरीमल्लिनाथजी ॥ सु० ॥ एकदिवससुखकार ॥ वा० ॥ मौनप्रथा इणपरिथइ ॥ सु० ॥ लह्योकेवलश्रीकार ॥ वा० ॥ १४ ॥ (ढाल बीजी) मातात्रिशला झुलावे पुत्रपालणे ॥ एदेशी सुखकर देवनिरंजननेमिजिनेंदइम-उपदिसै ॥ ए आंकडी ॥ भविजन भावधरिने सांभलेश्रीजिनवाण, अमीरसवयणेश्रवणअंजलीभर पीवतां, एतो जाये भवभवनिर्मित-कर्मनिवाण ॥ सु० ॥ १५ ॥ भवियण अंगइग्गारआराधवातप-विधिएकही, जेहथीपामे अनुपममहिमाअतुलअपार, वरसइग्यारने-मासएकादश तपकरो, संपूरण तप हुवाहोवेमंगलकार ॥ सु० ॥ १६ ॥ भ० अंगइग्यारे लिखावे सुवरण अक्षरे, पुस्तक पूठा ठवणी नवकरवाली सार, कवली झिलमिलपाटीनेवलि पाटली, वीटणामख-मलरेसम वरतणामनुहार ॥ सु० ॥ १७ ॥ भ० डोरालेखण झावी धामकूंपावलि कोथली, चटवा मिजागणने चंदरवाअधिकार, पूठीया चोपडरुमालनानाभातिना, पाटापाटलाने त्रिगडो रचेसुखकार ॥ सु० ॥ १८ ॥ भ० केसरखवखडखसकूंचीने वाटकी, प्यालाने कलसाअंगलूहणादिलधार, चामर छत्रत्रयने आभूषण रत्नेजड्या, रचिये वासखेपादिपूजाविविधप्रकार ॥ सु० ॥ १९ ॥ भ० देवपूजा तिम गुरुपूजाविधिआदरो, करिये साहमीवछलधरियेभावविमाल, रात्रिजागोकरि जिनगुणगावो प्रीतसुं अधिको धनखर्चीने लहिये-शिवरमाल ॥ सु० ॥ २० ॥ भ० इग्यारमनोतपसेवोभलेभावसुं, दुरितमेटे पापथकी चित्तलाय, चोरअग्निना उपद्रवथीनेऊगर्यो, इतिथी सेव्यां शिवमारगमां सुखेजवाय ॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इम नेमिजिनवरस्वामसुखकर सिवादेवीनंदनो, एकादशीतपफल

प्रकास्यो भविक जन आनंदनो, सर, नय, निधि, भू (१९७५) विक्रमवरसै पोषवदिएकादशी, जिनकृपाचंद्रसूरियभणें सुगुरु सेवो उल्लसी ॥ सु० ॥ २२ ॥ इति इग्यारशवृद्धस्तवनम् ॥

॥ रोहिणी तप स्तवनं ढाल पहेली ॥

वर्द्धमानजिनवरनमी, सुयदेवीसुपसाय । रोहिणीतप विधि वर्णवुं, शास्त्रथकी चितलाय, ॥ १ ॥ कल्याणक ओली भली, पंचम्यादि तप जाण । इम बहुविधतपवर्णव्यो, तिम रोहिणी मन आण ॥ २ ॥ हांरे मारा ठामधर्मनासाडापचवीसदेशजो ॥ एदेशी ॥ हांरे म्हारे जंबूद्वीपमांभरतक्षेत्रमनुहारजो, अंगदेशनगीनो सोहेअतिभलोरेलोय ॥ हां० ॥ चंपानामें सुंदरनवलीनयरीजो, वासुपूज्यनन्दन जगवन्दननृपतिलोरे लोय ॥ ३ ॥ हां० ॥ मघवा-राजा जगतादिवाजातत्थजो, कमलाराणी सीयलसुहाणीरायने रे लो ॥ हां० ॥ सुखभोगवतां पुन्य तणे परभावजो, आठपुत्र थयाराणी मनमां भायनेरे लो० ॥ ४ ॥ हां० ॥ तेउने ऊपर रोहणी नामे पुत्री जो, मात पिताने वाहली घणी ते ऊपनीरे लो० ॥ हां० ॥ चंद्रकलाजिम पुत्रीवधेसुहेण जो, पांचधाय करि पालतां योवनवयनीपनीरे लो० ॥ ५ ॥ हां० ॥ सुरकुंवरीसम देखी राजा पुत्रीजो, वरचिन्तामनपेठी रायनेतिणसमेंरे लो० ॥ हां० ॥ स्वयम्वरामण्डपमांड्यो पुहवीनाथ जो, देशदेशना भूपति-तेड्या सुख ससेरे लोय ॥ ६ ॥ हां० वीतसोकराजानो नन्दननाम जो, सोभागी गुणरागी कन्याये वर्योरे लो० हां० पूरवभवना पुन्यथी थयोविवाहजो, बहुलीसम्पदापामीकुंवरकारजसर्योरे लो० ॥ ७ ॥ हां० ॥ रङ्गरलीथइ सहु पहोता निजठाम जो, चित्रसेनने राज्य

देइ संजम लीयोरे लो० ॥ हां० ॥ वीतसोकनोनन्दनपामी राज्य जो, रोहिणीराणी साथे सुख सम्पद पीयोरे लो० ॥ ८ ॥ हां० रोहिणीराणीने आठपुत्र चार पुत्री जो, पूरवभवनासम्बन्धथी-आवीअवतर्या रे लो० हां० आठमापुत्रनो नामदियो लोकपालजो, खोलेमांलइ रायराणी गोखे वर्यारे लो० ॥ ९ ॥ हां० क्रीडा करें दम्पति नानाप्रकार जो, तिणसमे एकनारीने दीठीरोवती रे लो० हां० दीनथइ सिरपीटे नानाविलाप जो, देखी ने अचरज पामी रोहिणीसतीरे लो० ॥ १० ॥ हां० राजानेकहे राणी नाटकजोरजो, एहवो तो मैं कदियन दीठो नाथजीरे लो०, हां० कहोनिमुझने नाटकनो स्वामी नाम जो, जिनकृपाचंद्रसूरि एहने-सुकृत साथजीरे लो० ॥ ११ ॥

॥ ढाल दुसरी देशी यतनी॥

तब राजा कहे सुण राणी, मदमांही घणी भराणी, ए पुत्रमरे गभराणी, रोवेछे नेत्रभराणी, सलूणी बोल विचारी बोलो एतो सहु जगने सम तोलो, सलूणी बो० ॥ १२ ॥ जबवीतेतब जो कीजे, इमकहीने राजाखीजे, खोलेथीहाथमांलीजे, लेइ कुंवरने नीचो नाखीजे सलूणी बो० ॥ १३ ॥ तबरोहिणीहसती बोले, बालक किम नीचे होले, राजामनमां दुःखडोले, रोवेअति चिन्ताछोले, ॥ सलूणी बो० ॥ १४ ॥ पडतो सुत सासण देवे, सुकोमल हाथे लेवे, सिंहासन ऊपर सेवे, नाटक करि लुंछना लेवे, सलूणी बो० ॥ १५ ॥ एअचरिज सहुजन निरखे, राजा-गर्पा मनहरखे विस्मयलहि नरपति परखे; सुन पूरवपुण्यने परखे,

सलूणी चो० ॥ १६ ॥ राजा इण परि विचारे, कोई ज्ञानि गुरुपाउधारे, तो एह संदेहनिवारे, जिनकृपाचंद्रसूरि सुखसारे, ॥ १७ ॥

॥ ढाल तीजी रंगरसीयारंगरसवन्यो मनमोहनजी ए देशी ॥

इकदिनज्ञानिपधारिया, सुणोसुगुणाजी, वासुपूज्यस्वामीना अणगार, गच्छपतिआव्यारे सुणोसुगुणाजी, रूपकुंभ स्वर्णकुंभजी, सु० चउनाणीकरेउपगार, गच्छ० ॥ १८ ॥ राजादिक वंदनगया, सु० देसनादीधी उदार, ग० करजोडी राजा भणे, सु० रोहिणीनो अधिकार, ग० सु० ॥ १९ ॥ मुझमनअचरजअतिघणो सु० कृपाकरी कहो सुविचार गच्छ० सु० पूरवभवमुनिवरकह्यो, सु० तेहसुण्यो दिलधार, गच्छ० सु० ॥ २० ॥ जंबुद्वीपना भरतमां, सु० सिद्धपुरनगरकहवाय, ग० सु० पुहवीपालराजा तिहां सु० सिधमती राणी सुहाय, ग० सु० ॥ २१ ॥ इकदिन क्रीडाकारणे, सु० चन्द्रउद्यानमें जाय, ग० सु० क्रीडा करता पधारिया, सु० गुणसागर मुनि महाराय, ग० सु० ॥ २२ ॥ मुनिनेवांदी राजाकहे, सु० राणी मुनिने देवो दान, ग० सु० विषयनी अन्तराय मानती, सु० कडवी तुंवी देइ कीधो हेरान, ग० सु० ॥ २३ ॥ कालधर्म पाम्यो मुनिवरु सु० राणीने काढीराय ॥ ग० ॥ स० ॥ सातमे दिन कोढ ऊपनो, मरी छठी नरकते जाय, ग० सु० ॥ २४ ॥ नरकतीर्यंचना भव कर्या ॥ सु० ॥ इम काल अनन्तो जाण ग० सु० ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि भणे ॥ सु० ॥ तुमे न करो पाप सुजाण, ॥ ग० ॥ सु० ॥ २५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

जिम २ गिरिवरभेटियैरे तिम २ पाप पुलायसलूणा ॥ एदेशी ॥ ते राणी भवचक्रमारे, दुःखसह्याअनन्त, सलूणा तारापुरमांहे वसेरे, धनमित्रसेठमहन्त, ॥ स० ॥ २६ ॥ कर्मतणीगति जाणजोरे, कर्मकरो नहिंकोय, स० धनवतीकूखे ऊपनीरे, दुर्गंधा नाम होय, स० ॥ २७ ॥ एकवणिकना पुत्रनेरे, परणावी सुरसाल, ॥ स० ॥ पतिसंयोगे ऊच्छलीरे दुर्गंधतातत्काल, स० ॥ २८ ॥ त्रासपामीतेहनोधणीरे, परदेशेंगयोनाश ॥ स० ॥ ज्ञानिने पूछे पितारे, दुर्गंधानो त्रास, स० ॥ २९ ॥ ज्ञानि पूर्वभव कहेरे, प्रतिकार पूछे खास, स० गुरुकहे रोहिणी तप करोरे, सातवरस सातमास, स० ॥ ३० ॥ रोहिणीनक्षत्रने दिनेरे, चोविहार-उपवास, स० ॥ अठपोहरीपोपधकरोरे, वासुपूज्य पूजो खास, स० ॥ ३१ ॥ इमरोहिणी तपआदरीरे, सेवि विधियुत सार, स० ए ताहरी राणीथइरे, रोहिणीनामे नार, स० ॥ ३२ ॥ पूर्वभव रोहिणीतणोरे हरखितथया सुणि तेह, स० ॥ जिनकृपाचंद्रसूरि सेवजोरे धर्मधरिससनेह, स० ॥ ३३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

जइने कहजो म्हारा वालाजीरे ए देशी । राजा कहे मुनिराजने म्हारा वालाजीरे रोहिणीतप विधिसार, गुण निधि वंदिये, मा० तव मुनिवर तप विधि कहे, मा० चित्रसेनने रोहिणीनार, विहुं तपविधिसुणे, मा० ॥ ३४ ॥ चन्द्ररोहिणीदिनतपकरो, मा० वारला जिनवर सेव, करिये भावसुं, मा० गुणनो करो गुरु

मुखसुणी, मा० पांचसक्रस्तवदेव, त्रिहुंकालवांदिये, मा० ॥ ३५ ॥ देवजुहारो देहरे, मा० प्रभु आगल वृक्ष अशोक, करिये भावशुं मा० नैवद्य नाना भांतिना, मा० प्रभु सन्मुखढोवे थोक, चढते भावशुं मा० ॥ ३६ ॥ केशरचंदनमृगमदा, मा० पूजो प्रभु ऊल्छरङ्ग नानाभांतशुं, मा० आठमङ्गलप्रभुआगलै, मा० रचियें तन्दुलउज्जलचङ्ग, दुरितनिवारणो ॥ मा० ॥ ३७ ॥ पुस्तक पूजो भावशुं, मा० साधु सेवा करो सार, भव सागरतरो, मा० देवोदान सुपात्रने, मा० साहमीवत्सल अधिकार, करे मन रंगशुं ॥ मा० ॥ ३८ ॥ उज्जवणो कीजे भलो, मा० ज्ञानादि उपगरण करे सार, नाना भांतिना, मा० सत्तावीससंख्याकही मा० अथवा शक्ति तणे अनुसार, धनखरचे घणो मा० ॥ ३९ ॥ ब्रह्मचर्य पालो मुदा मा० उत्सव विविध प्रकार, करिये उमङ्गसुं मा० शासन सोभवधारिने मा० रथ यात्रा सुखकार, चउविध संघ मिली मा० ॥ ४० ॥ इणपरे रोहिणी विधिकही मा० राजा राणी तीर्थंकर पास, विधिसुं तपग्रहे मा० श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिभणे मा० भव भव धर्मसेवो भविखास, सर्वसुखसंपजे मा० ॥ ४१ ॥

॥ ढाल छठी राग धन्यासरि ॥

रोहिणीतपसेविने राजादिक, उज्जवणोकियोभावै, वासु पूज्य-स्वामीने पासै, दीक्षाथी चित्तलावैरे, भवि भावधरिने सेवो, एतो-सेविसिवसुखलेवोरे, भवि० ॥ ४२ ॥ चित्रसेनराय रोहिणीराणी, दीक्षालीधिगुणखाणी, आठेपुत्रे संजमलीनो, वरवा सिवपटराणीरे भवि० ॥ ४३ ॥ संजमसेवीने राजादिक, आतम तत्वनिहाली,

तप तपिने कर्म क्षयकीनो, दुद्धर अणसण पालीरे भवि० ॥ ४४ ॥ केवलीथइने राजादिकसह, सिद्धिवधूकरझाली, सादि अनंतस्थिति अनाये, वरती जगमें खुसालीरे ॥ भवि० ॥ ४५ ॥ मन- [illegible] महि: आगर, मेंथुणियो सिवगामी, उगणीसे इठन्तरवरसे, [illegible]रजन्म अभिरामीरे ॥ भवि० ॥ ४६ ॥ आदीसरजिनवर सुपसायै, [illegible]ानुवानगरे अधिकारी, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सेवो जिन शासन जयकारीरे भवि० ॥ ४७ ॥

॥ इति रोहिणी स्तवन छढालियो ॥

(अथ पूर्णिमा बृहत्स्तवनम्) (दोहा) स्वस्तिश्रीसुखसंपदा, कारण जिनवरदेव ॥ आदीश्वर अरिहंतजी, सारेसुरनरसेव ॥ १ ॥ पूनिमतिथिआराधवा, तपकरियेसुविशेष ॥ बारेमास पूनिमतणो, चरित्र कहुं लवलेश ॥ २ ॥ (ढाल १) जिम जिम गिरिवर- देखियेरे० ॥ एदेशि० ॥ श्रीजिनधर्मसुहंकरोरे । आराधोगुणखांण- सनेही । पूनिमपर्वमोटोकह्योरे । मासवारे मन आंण ॥ स० ॥ ३ ॥ जिमजिमपर्व आराधियेरे । तिमतिमलहिये सुख्ख ॥ स० जिनशासनजगमें जयोरे, मेटे भव भव दुख्ख ॥ स० ॥ ४ श्रावणमासमें जाणियेरे ॥ वदितीज [illegible] ॥ स० अनंतनाथ मानम चव्यारे । आठम [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ कुंथुनाथ नवमी चव्यारे । [illegible] [illegible]ति एह स० ॥ पांचम नेमि जनमियारे । छठ [illegible] ॥ ६ आठम पासजी सिवलह्योरे । पूनिम [illegible] स० उपवास करि आराधियेरे । कल्याणक [illegible] ॥ ७

(इति श्रावण मास०) ॥ भाद्रववदि सातमचव्यारे । सान्तिनाथ जगनाथ ॥ स० ॥ एहिज तिथि चंद्र प्रभुरे । झाल्यो सिववधु हाथ ॥ स० ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वआठमचव्यारे । सुविधि नवम शुदि जांण ॥ स० ॥ मुक्तिमहिलमें विराजियारे । पर्युषण सुप्रमांण ॥ स० ॥ ९ ॥ (इति भाद्रव मास) ॥ आसोजवदितेरस थयोरे । गर्भापहार (वीरनोवीजो) कल्याण ॥ स० ॥ नेमिज्ञान अमावसेरे । पूनिम नमिचव्या जाण ॥ स० ॥ १० ॥ (इति आश्विन मास०) ॥ कार्तिक वदि पांचम समेरे । संभवपांम्योनाण ॥ स० ॥ पद्मप्रभु बारस जनमियारे । नेमिचव्या जग भाण स० ॥ ११ ॥ तेरस पद्म दिक्षा ग्रहीरे । वीर दरस (अमावश) निर्वाण ॥ स० ॥ सुविधी सुदितीजउपनोरे । केवल नांण सुख खांण ॥ स० ॥ १२ ॥ पर्युषण ओली भलीरे । ज्ञान पंचमी पर्वजांण ॥ स० ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिसदारे । पर्व सेवो गुणखांण ॥ स० ॥ १३ ॥ इति कार्तिक मास० ॥ (ढाल २) आज आपे चालो सहियां सिद्धाचलगिरिजइयेरे ॥ एदेशी० ॥ मिगसरवदि पंचमि सुविधिजनु । छठे दीक्षा लीनी । दशम वीर संजम एकादशी । पद्ममुक्तिगतिकीनोरे ॥ १४ ॥ सुनो सुगुणा जिनशासन सुंदर । पर्व्वेघणा जयकारी । सुदि दशमी अरनाथजी जाया, पाम्या सिवसुखभारीरे ॥ सु० ॥ १५ ॥ इग्यारस अरनाथनी दीक्षा । मल्ली जन्म व्रतलीनो । केवल मल्ली नमि सुहंकर । पांमी जगतजसकीनोरे ॥ सु० ॥ १६ ॥ चवदश संभव जन्म लियो हैं । पूनिम दीक्षाधारी । पूनिम तिथि सेवीनेभविजन ॥ लहो सदा सुखसारीरे ॥ सु० ॥ १७ ॥ इति मार्गशीर्ष मास० ॥

तप तपिने कर्म क्षयकीनो, दुद्धर अणसण पालीरे भवि० ॥ ४४ ॥ केवलीथइने राजादिकसहु, सिद्धिवधूकरझाली, सादि अनंतस्थिति सुखपायो, वरती जगमें खुसालीरे ॥ भवि० ॥ ४५ ॥ मनमोहनमहिमानोआगर, मेंथुणियो सिवगामी, उगणीसे इठन्तरवरसे, वीरजन्म अभिरामीरे ॥ भवि० ॥ ४६ ॥ आदीसरजिनवर सुपसायै, जावुयानगरे अधिकारी, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सेवो जिन शासन जयकारीरे भवि० ॥ ४७ ॥

॥ इति रोहिणी स्तवन छढालियो ॥

(अथ पूर्णिमा बृहत्स्तवनम्) (दोहा) स्वस्तिश्रीसुखसंपदा, कारण जिनवरदेव ॥ आदीश्वर अरिहंतजी, सारेसुरनरसेव ॥ १ ॥ पूनिमतिथिआराधवा, तपकरियेसुविशेष ॥ बारेमास पूनिमतणो, चरित्र कहुं लवलेश ॥ २ ॥ (ढाल १) जिम जिम गिरिवरभेटियेरे० ॥ एदेशि० ॥ श्रीजिनधर्मसुहंकरोरे । आराधोगुणखांणसनेही । पूनिमपर्वमोटोकह्योरे । मासबारे मन आंण ॥ स० ॥ ३ ॥ जिमजिमपर्व आराधियेरे । तिमतिमलहिये सुख्ख ॥ स० ॥ जिनशासनजगमें जयोरे, मेटे भव भव दुख्ख ॥ स० ॥ ४ ॥ श्रावणमासमें जाणियेरे ॥ वदितीज श्रेयांस निरवाण ॥ स० ॥ अनंतनाथ सातम चव्यारे । आठम नमि जन्म जांण ॥ स० ॥ ५ ॥ कुंथुनाथ नवमी चव्यारे । शुदि दूज सुमति एह । स० ॥ पांचम नेमि जनमियारे । छठ दीक्षाथीनेह ॥ स० ॥ ६ ॥ आठम पासजी सिवलह्यारे । पूनिम सुव्रतचव्याईश ॥ स० ॥ उपवास करि आराधियेरे । कल्याणक सुजगीश ॥ स० ॥ ७ ॥

(इति श्रावण मास०) ॥ भाद्रववदि सातमचव्यारे । सान्तिनाथ जगनाथ ॥ स० ॥ एहिज तिथि चंद्र प्रभुरे । झाल्यो सिववधु हाथ ॥ स० ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वआठमचव्यारे । सुविधि नवम शुदि जांण ॥ स० ॥ मुक्तिमहिलमें विराजियारे । पर्युंपण सुप्रमांण ॥ स० ॥ ९ ॥ (इति भाद्रव मास) ॥ आसोजवदितेरस थयोरे । गर्भापहार (वीरनोवीजो) कल्याण ॥ स० ॥ नेमिज्ञान अमावसेरे । पूनिम नमिचव्या जाण ॥ स० ॥ १० ॥ (इति आश्विन मास०) ॥ कार्तिक वदि पांचम समेरे । संभवपांम्योनाण ॥ स० ॥ पद्मप्रभु बारस जनमियारे । नेमिचव्या जग भाण स० ॥ ११ ॥ तेरस पद्म दिक्षा ग्रहीरे । वीर दरस (अमावश) निर्वाण ॥ स० ॥ सुविधी सुदितीजउपनोरे । केवल नांण सुख खांण ॥ स० ॥ १२ ॥ पर्युंपण ओली भलीरे । ज्ञान पंचमी पर्वजांण ॥ स० ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिसदारे । पर्व सेवो गुणखांण ॥ स० ॥ १३ ॥ इति कार्तिक मास० ॥ (ढाल २) आज आपे चालो सहियां सिद्धाचलगिरिजइयेरे ॥ एदेशी० ॥ मिगसरवदि पंचमि सुविधिजनु । छठे दीक्षा लीनी । दशम वीर संजम एकादशी । पद्ममुक्तिगतिकीनोरे ॥ १४ ॥ सुनो सुगुणा जिनशासन सुंदर । पर्व्वघणा जयकारी । सुदि दशमी अरनाथजी जाया, पाम्या सिवसुखभारीरे ॥ सु० ॥ १५ ॥ इग्यारस अरनाथनी दीक्षा । मल्ली जन्म व्रतलीनो । केवल मल्ली नमि सुहंकर । पांमी जगतजसकीनोरे ॥ सु० ॥ १६ ॥ चवदश संभव जन्म लियो है । पूनिम दीक्षाधारी । पूनिम तिथि सेवीनेभविजन ॥ लहो सदा सुखसारीरे ॥ सु० ॥ १७ ॥ इति मार्गशीर्ष मास० ॥

पोप दशमि पार्श्व प्रभु जन्म्या । इग्यारस संजमलीधो । चंद्र जन्म बारसने दिवसे । तेरस व्रत मन कीधोरे ॥ सु० ॥ १८ ॥ चउदश शीतलज्ञानप्रलोहे । सुदि छठविमल नाण पायो । नवमी सांति नाण सुखदाई । इग्यारस अजितनाणआयोरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ अभिनंदन चवदश दिन सुंदर । केवलज्ञान कहाई । धर्म जिनेश्वर पोपी पूनिम । केवल लह्यो वरदाईरे ॥ सु० ॥ २० ॥ इति पोप मास० ॥ छठ पद्मप्रभु चवनकल्याणक । बारस शीतल जन्म जांण । शीतल नाथनी द्वादशि दीक्षा । तेरस रिपभ निर्वाणरे ॥ सु० ॥ २१ ॥ अमावश श्रेयांस केवलपायो । सुदिबीज अभिनंदनजाया । वासुपूज्य नाण धर्म विमल जिन । तीज जनम कहवायारे ॥ सु० ॥ २२ ॥ चोथ विमल जिन संजमधारी । आठम अजित जन्मलीनो । नवमीदीक्षा अजित अभिनंदन । द्वादशि संजम लीनोरे ॥ सु० ॥ २३ ॥ त्रयोदशि धर्मजिन दीक्षा । माघ मासमें जाणो । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो । परमारथ पहिचाणोरे ॥ सु० ॥ २४ ॥ इति माघ मास ॥ (ढाल० ॥ ३ ॥) यात्रीड़ा यात्रा नवाणुं करियेरे ॥ एदेशि० ॥ सुज्ञानी कल्याणक तप करियेरे । एनो करिये तो भवजलनरिये ॥ सु० ॥ टेर० ॥ वारे पूनिम पर्व्व वखाणोरे । कल्याणक तप मन आंणोरे । फागुन मास मांहे तुमे जाणो ॥ सुज्ञानीकल्याणक तप करियेरे ॥ २५ ॥ वदि छठ सुपार्श्वज्ञान पायोरे । सातम निर्वाण कहायोरे । सातम चंद्रज्ञानसुहायो ॥ सुज्ञानी कल्याणकतपकरियेरे ॥ २६ ॥ नवमी सुविधीचव्वानसीनोरे । एकादशिरिषभज्ञान लीनोरे । श्रेयांस बारस जन्म लीनो । सुज्ञानी कल्याणक तप करियेरे ॥ २७ ॥ मुनि

सुव्रत नाण बलिहारीरे । श्रेयांस तेरस दीक्षाधारीरे । वासुपूज्य चउदश जन्मसारी । सुज्ञानी कल्याणक तप करियेरे ॥ २८ ॥ अमावस संजम लीजेरे । अरनाथ चव्या सुदि बीजेरे । मल्लि जिन चोथ लहीजे । सुज्ञानी कल्याणकतप करियेरे ॥ २९ ॥ आठम संभव चव्या सुविहांणरे । मल्लि बारसनिर्वाणरे । मुनिसुव्रत दीक्षा जांण । सुज्ञानी कल्याणकतपकरियेरे ॥ ३० ॥ फागुन चोमासा सेवोरे । भाव होली करि फल लेवोरे । हिव चैत्र माससें वेवो । सुज्ञानी कल्याणकतपकरियेरे ॥ ३१ ॥ इति फागुण मास० ॥ वदि चोथपार्श्व चव्या नांणरे । पंचमि चंद्र चवन मन आणरे । आठम रिषभ जनम चरण जांण । सुज्ञानी कल्याणक तप करियेरे ॥ ३२ ॥ तीज धवल कुंथुनाथ नाणरे । अजितनाथ पंचमि निर्वाणरे । संभव अनंत सिवपुर ठाण । सुज्ञानी कल्याणक तप करियेरे ॥ ३३ ॥ सुमति नवम निर्वाण लहीजेरे, इग्यारस ज्ञान कहीजेरे । तेरस वीर जन्म ग्रहीजे । सुज्ञानी कल्याणक तप करियेरे ॥ ३४ ॥ चैत्री पद्मप्रभु ज्ञान मासे । अष्टापद ओली भासेरे । कृपाचंद्रसूरि सुविलासेरे । सुज्ञानी कल्याणक तप करियेरे ॥ ३५ ॥ इति चैत्र मास० ॥ (ढाल ४) विमलगिरि यात्रा नवाणुं करिये ॥ एदेशी० ॥ भविजन पूनिम पर्व्वने सेवो । सेवी शिवसुख लेवोरे ॥ भविजन ॥ टेर० ॥ वैशाखवदिपडिवाकुंथुसिव । दूज शीतल निर्वाण । पांचम कुंथु संजमलीनो । छठ शीतल चवन जांणरे ॥ भ० ॥ ३६ ॥ नमि दशमी शिवमंदिर पाम्यो । अनंत तेरस जन्म जांणो । चवदश चरण ज्ञान कुंथुजन्म्या । सुदिचोथ चतुर्थ (अभिनंदन) चवाणोरे ॥ ३७ ॥ धर्मच्यवन सातम

अभिनंदन–आठम शिवपुरराणो । सुमति जन्म नवमी दिन दीक्षा । वीरदसमी दिननाणोरे ॥ भ० ॥३८॥ बारस विमल च्यवन अजित जिन । तेरस संजम प्रमाणो ॥ इति वैशाख मास० जेठ वदी छठ श्रेयांग चविया । आठमसुव्रत जन्मकहाणोरे ॥ भ० ॥ ३९ ॥ नवमी दिन निर्वाण सुव्रतनो । तेरस सांती जन्म कहिये । एहिज दिन निर्वाण ए प्रभुनो । चवदश संजम ग्रहियेरे ॥ भ० ॥ ४० ॥ सुदि पंचमि धर्म शिवसुख लहियो । नवमी वासु पूज्य चविया । सुपार्श्व बारस दिन जन्म्या । तेरस संजम ठवियारे ॥ भविजन० ॥ ४१ ॥ इति जेठ मास० ॥ आषाढवदि चोथ रिषभ चविया । विमल सातम निर्वाण । नमि दीक्षा नवमी दिन लीधी । अनुपम सुखनी खांणरे ॥ भ० ॥ ४२ ॥ वर्धमांन सुदि छठ च्यवन शुचि । नेमि आठम शिव वरिया । चवदस वासु पूज्य शिवपायो । सुख-संपतिनादरियारे ॥ भ० ॥ ४३ ॥ इति आषाढ मास० ॥ बारे मास कल्यांणक प्रभुना । वरणव्या सास्त्र प्रमांण । बारे पूनिम पर्व वखांण्या । सेवो भविक सुख खांणरे ॥ भ० ॥ ४४ ॥ चैत्री दिन उपवास करिजे । पूजा विविध प्रकार । दश वीस तीस चालीस ... । तिलककरेसुखकाररे ॥ ४५ ॥ भ० ॥ इमहिज फल ... ... । प्रभु आगे सुविशाल । देववंदन पडिकमणो ... । करिल्हे सुखकरमालरे ॥ भ० ॥ ४६ ॥ ओली दोयने ... चोमासा । पर्यूषण सुखकार । दीवाली नाण पंचमी जाणो । ... इग्यारस दिलधाररे ॥ भ० ॥ ४७ ॥ पोषदसमी मेरु तेरस ... । आत्मातीज अविकारी । चैत्री कार्तिक पर्व इत्यादिक । ... सदा सुखकारीरे ॥ भ० ॥ ४८ ॥

(कलश.)

संवत्उगणीसेइठंतर–अक्षयत्रितीया दिनभले । झाबुवानगरे स्तवनकीधो आदिजिनसुपसाउले । श्रीगच्छखरतरगुणपुरंदर जिनवरआंणानोरसी । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो धर्ममनमें उल्लसी ॥४९॥
इति पूर्णिमां बृहत्स्तवनम्० ॥

(अथ मांडवगढ़ना शांतिनाथजीनो स्तवनलि०)

रागमाड़

सुणो शिवपुरस्वामी अंतरजामी सारो अमारोकाज ॥ आ०
सोलमजिनअचिराजीके नंदा । विश्वसेननरराज । सुद्धस्वरूप धारक सुखकारक । तीनभुवन सिरताजरे ॥ (सु० ॥ १ ॥)
जनमसमय प्रभु मारिनिवारी । शांतिनाम सुखसाज । जगतजीव जीवन सुखकारण । प्रगटे गरिबनिवाजरे ॥ (सुणो० ॥ २ ॥)
महागोप महामाहण जगपति । निर्यामक जिनराज । भवअटवि सत्थवाह सुहंकर । प्रभुदरशण लह्यो आजरे ॥ (सुणो० ॥ ३ ॥)
मांडवगढ़पति शांतिजिनेसर । श्रीसुपार्श्वमहाराज । उगणीसैं गुणयासीमेरु । तेरसदिन सुसमाजरे ॥ (सु ॥ ४ ॥) भावभले प्रभु भेटियारे । इंदोरसंघके साज । जिनकृपाचंद्रसूरिसदा । सेवाथी शिवराजरे ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ इति स्तवनम् ॥

अभिनंदन-आठम शिवपुरराणो । सुमति जन्म नवमी दिन दीक्षा । वीरदसमी दिननाणोरे ॥ भ० ॥३८॥ बारस विमल च्यवन अजित जिन । तेरस संजम प्रमाणो ॥ इति वैशाख मास० जेठ वदी छठ श्रेयांस चविया । आठमसुव्रत जन्मकहाणोरे ॥ भ० ॥ ३९ ॥ नवमी दिन निर्वाण सुव्रतनो । तेरस सांती जन्म कहिये । एहिज दिन निर्वाण ए प्रभुनो । चवदश संजम ग्रहियेरे ॥ भ० ॥ ४० ॥ सुदि पंचमि धर्म शिवसुख लहियो । नवमी वासु पूज्य चविया । सुपार्श्व बारस दिन जन्म्या । तेरस संजम ठवियारे ॥ भविजन० ॥ ४१ ॥ इति जेठ मास० ॥ आषाढवदि चोथ रिषभ चविया । विमल सातम निर्वाण । नमि दीक्षा नवमी दिन लीधी । अनुपम सुखनी खांणरे ॥ भ० ॥ ४२ ॥ वर्धमांन सुदि छठ च्यवन शुचि । नेमि आठम शिव वरिया । चवदस वासु पूज्य शिवपायो । सुख-संपतिनादरियारे ॥ भ० ॥ ४३ ॥ इति आषाढ मास० ॥ बारे मास कल्यांणक प्रभुना । चरणव्या सास्त्र प्रमांण । बारे पूनिम पर्व्व स्मांस्या । सेवो भविक सुख खांणरे ॥ भ० ॥ ४४ ॥ चैत्री दिन उपवास करिजे । पूजा विविध प्रकार । दश वीस तीस चालीस [illegible] । तिलककरेसुखकारने ॥ ४५ ॥ भ० ॥ इमहिज फल [illegible] करीदाने । प्रभु आगे सुविशाल । देववंदन पडिक्कमणो [illegible] । करिल्हे सुख्करमालरे ॥ भ० ॥ ४६ ॥ ओली दोयने [illegible] चोमासा । पर्युषण सुखकार । दीवाली नाण पंचमी जाणो । [illegible] इत्यादि दिलधारने ॥ भ० ॥ ४७ ॥ पोषदसमी मेरु तेरस [illegible] । आत्मातीन अधिकारी । चैत्री कार्तिक पर्व्व इत्यादिक । [illegible] सदा सुखकारीरे ॥ भ० ॥ ४८ ॥

(कलश.)

संवत्उगणीसेइठंतर–अक्षयत्रितीया दिनभले । झाबुवानगरे स्तवनकीधो आदिजिनसुपसाउले । श्रीगच्छखरतरगुणपुरंदर जिनचरआंणानोरसी । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो धर्ममनमें उल्लसी ॥४९॥ इति पूर्णिमां बृहत्स्तवनम्० ॥

(अथ मांडवगढ़ना शांतिनाथजीनो स्तवनलि०)

रागमाड़

सुणो शिवपुरस्वामी अंतरजामी सारो अमारोकाज ॥ आ० सोलमजिनअचिराजीके नंदा । विश्वसेननरराज । सुद्धस्वरूप धारक सुखकारक । तीनभुवन सिरताजरे ॥ (सु० ॥ १ ॥) जनमसमय प्रभु मारिनिवारी । शांतिनाम सुखसाज । जगतजीव जीवन सुखकारण । प्रगटे गरिवनिवाजरे ॥ (सुणो० ॥ २ ॥) महागोप महामाहण जगपति । निर्यामक जिनराज । भवअटवि सत्थवाह सुहंकर । प्रभुदरशण लह्यो आजरे ॥ (सुणो० ॥ ३ ॥) मांडवगढ़पति शांतिजिनेसर । श्रीसुपार्श्वमहाराज । उगणीसें गुणयासीमेरु । तेरसदिन सुसमाजरे ॥ (सु ॥ ४ ॥) भावभले प्रभु भेटियारे । इंदोरसंघके साज । जिनकृपाचंद्रसूरिसदा । सेवाथी शिवराजरे ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ इति स्तवनम् ॥

(अथ भोपावरना शांतिनाथजीनो स्तवन.)

शांतिनाथ महाराज राज हो दरशण करस्यां जी । ॥ आ० ॥ दरशण करस्यां वांछित लहेस्यां, तजस्यां अनादिमिथ्यात । रागद्वेषघन ग्रंथीभेदिने । तीनकरण विख्यातरे ॥ (हो दरशण० ॥ १ ॥) चउगइ रडवड्यो कुमति कुगतिसंग । रह्यो अनंतो काल । हिव प्रभु मुद्रा पुन्ये पामी । सुनिजर करिने निहालरे ॥ (हो दरशण० ॥२॥) भव्य अभव्यतणो मुज संशय । दूरकरो महाराज । शरणागतवच्छल हितकारक । विरुदधरावो राजरे ॥ (हो दरशण०) (॥ ३ ॥) शांतिस्वरूप प्रकाशन भासन । जिनदरशण सुखकार । शुद्धस्वरूप निहालत चेतन । अनुभव प्रगटे साररे ॥ (हो दरशण० ॥ ४ ॥) भोपावरमें शांतिजिनेसर । नवकरतनु विशाल । जिनकृपाचंद्र सूरि भेटे । भावभले सुरसालरे ॥ (हो दरशण करस्यांजी० ॥ ५ ॥) इति. ॥

(अथ शांतिनाथजीनो स्तवन०) लि० ॥

शांतिजिनंद ने सेवोरे ॥ मनवा ॥ शांति० ॥ से० ॥ मनवांछित फल लेवोरे ॥ मनवा ॥ आं० ॥ नयर हथनापुर दक्षिण भरते । विश्वसेनमहाराजा । अचिराराणी गुण मणीखाणी । बाजे जगजसवाजारे ॥ मनवा । शांति० जि० से० ॥ १ ॥ सर्वारथ सिद्धथी चवीया स्वामी । मातु उदर अवतरिया । भाद्रववदि सातम सुपर्णावे । सहुजन कारज सरियारे ॥ म० ॥ शां० जि० से० ॥२॥ स्वपर्णावे सुपन सेज सुनि । चउदसुपना देखे । सुकुलीणी ततखीण जाकनथई । जनमहनारथलेखेरे ॥ मनवा ॥ शां० जि० से०

॥ ३ ॥ जेठवदितेरस प्रभु जनम्यां । त्रिभुवनमें उद्योत । स्नात्रमहोत्सव मेरुशिखरपर । इंद्रकरे सुश्रोतरे ॥ मनवा ॥ शां० जि० से० ॥ ४ ॥ राजाघरमंगल जयकारि । पुत्रजनम उच्छरंग । गर्भमांहिं प्रभु मारिनिवारी । तिणशांतिनाम सुख संगरे ॥ मनवा ॥ शां० जि० से० ॥ ५ ॥ कुमरपणे पचवीस सहस । वरस वस्या सुखवास । मंडलीक चक्री पद पाली । एटला वरस सहुं खासरे ॥ मनवा शां० जि० से० ॥ ६ ॥ जेठवदि चउदश सुभवारे । संजम प्रभुजी लीनो । एक सहस राजा परिवारे । चोथो ज्ञान मनभीनोरे ॥ मनवा शां० जि० से० ॥ ७ ॥ कर्म शत्रुने जीपवाकारण । विचरे परमदयाल । पोषसुदि नवमी नंदिवृक्षतले । केवल पाम्यो रसाल रे ॥ मनवा ॥ शां० जि० से० ॥ ८ ॥ समवसरणमें चउ मुखजिनवर । देशना दे मनुंहार । संघचतुरविधथापी जगत्गुरु । कीनो जगत उपकाररे ॥ मनवा शां० जि० से० ॥ ॥ ९ ॥ मृगलंच्छन विराजितप्रभुजी । गरुड यक्ष सेवा सारे । शासनसुरिनिर्वाणी अनुपम । वांछितदे निरधाररे ॥ मनवा० ॥ शां जि० से० ॥ १० ॥ लाखवरस प्रभु आयुपपाली । समेतशिखर शिव वरियारे । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सेवी । निजगुणनिरमलकरियारे ॥ मनवा शां० ॥ जिनदनेसे० ॥ ११ ॥ इति० ॥

(अथ नेमिनाथजीको स्तवन.)

आज आनंद वहाररे प्रभु वेठे मगनमे ॥ एदेशी ॥ नेमि जिनंद दयालरे । सेवो स्याम सलुणासेवोस्या० ॥ आ० ॥ समुद्र विजय

नंदनजगवंदन, सिवादेवीमात मलाररे ॥ (सेवो स्याम सलुणा० ॥ १ ॥) अपराजितअनुत्तरथी चविया । मातुउदर मझाररे ॥ (सेवो स्याम० ॥ २ ॥) कातिवदिबारसप्रभु उपना । चित्रा नक्षत्र शुभ वाररे ॥ (सेवो० ॥ ३ ॥) चउदे स्वपना देखे राणी । तीर्थंकर सूचनाररे ॥ (सेवो स्याम० ॥ ४ ॥) श्रावणशुदि पंचमी जिनजनम्या । त्रिभुवनमें सुखकाररे ॥ (सेवो० ॥ ५ ॥ मेरु सिखर परजन्म महोत्सव । इंद्र करे अधिकाररे ॥ (सेवो० ॥ ६ ॥ समुद्रविजयराजाघरउच्छव । वरत्यो जयजयकाररे ॥ (सेवो० स्याम० ॥७॥) शुदिछठ विभु भये व्रतधारी । ब्रमचारि सुविचाररे ॥ (सेवो० ॥ ८ ॥) सोरिपुरमें जन्म भयो है । द्वारिका संजमसाररे ॥ (सेवो स्याम० ॥ ९ ॥) गिरनार गिरिके सहसावनमे । चोथो नाण दिलधाररे ॥ (सेवो० ॥ १० ॥) पांचसुमतिधर तीन गुप्तिधर ॥ विचरे प्रभु मनुहाररे ॥ (से० स्याम० ॥ ११ ॥) दुकर तपकरि कर्म शत्रुहणि । घातिकर्मक्षयकाररे ॥ (से० ॥ १२ ॥) रेवतगिरि विचरंता आया । शुक्लध्यान ध्याताररे ॥ (से० स्याम० ॥ १३ ॥) आसोजनी अमावस दिवसे । केवल ज्ञान श्रीकाररे से० ॥ १४ ॥) समवसरणमे चोमुख प्रभुजी । देशना देवे सुखसाररे ॥ (सेवो० ॥ १५॥ चउविह धर्म प्रकासे जगगुरु । संघ थाप्यो सुखकाररे ॥ सेवो स्याम० ॥ १६ ॥ अठारसहसमाधुनी संपदा । श्रमणी चालीस हजाररे ॥ सेवो० १७ ॥ एक लाख गुणत्तर सहस । श्रावक समकित धाररे ॥ सेवो स्याम० १८ ॥ तीनलाखअठार हजार । श्रावकणीसुविचाररे (सेवो० ॥ १९ ॥) सहसवरस प्रभु आयु पाली । मुक्ति वधू भरताररे ॥ सेवो स्याम० ॥ २०॥ रयनेमी

राजिमति वेउं । मोक्ष गया निरधाररे सेवो० ॥ २१ ॥ पांचसें छत्तीस मुनिवर साथे । सादि अनंत स्थितिकाररे ॥ सेवो स्वाम० २२ आषाढ शुदि आठमने दिवसे । सिद्धि सौध मझाररे ॥ सेवो० ॥२३॥ गोमुख यक्ष वांछित पूरे । अंविका करे सुखसाररे ॥ सेवो स्वाम० ॥ २४ ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो । तीरथ जयजयकाररे ॥ सेवो स्वाम० ॥ २५ ॥ इति० ॥

(अथ नेमिनाथजीनी थुइ लि० ॥)

नेमि जिनंदा पूनिम चंदा । सम मुख सोभता । सिवादे जाया । सहुमनभाया । इंद्रादिक सेवता, सोरिपुरमें । त्रिभुवन सुखमें । प्रभु परमारथी । संयमें साता । जगना त्राता । धर्मनासारथी ॥१॥ रिषभ जिनेसर । भुवन दिनेसर । अष्टापद सिववर्या । वीरपावापुरी । पूज्य चंपापूरी । निजकारज कर्या । गिरनारगिरिपर । नेमिजिनवर । सिववधुकर ग्रह्यो । वीसजिनेसर । समेत सिखरपर । सिवमंदिरलह्यो ॥ २ ॥ जिनवर वाणि । अमिय समाणि । मिठी जिमसेलड़ी । अधिकसुहाणि । भविमनभाणि । अमृतरसवेलड़ी । जिनगुणगाति । समरसमाति । सुरवधुगावति । अनुभवसंगे । आत्मउमंगे । जिनगुण ध्यावति ॥ ३ ॥ अंबिकादेवी सुजसलहेवी । सुतदोयलालती । शासनदेवी । सुरनरसेवी । संघरखवालती । गोमेधयक्ष । सांनिध दक्ष । संघने कीजिये । जिनकृपाचंद्रसेविसूरींद्र । जगमें जशलीजिये ॥ ४ ॥ इति० थुइ.

(अथ श्रीपार्श्वनाथजीनी थुइ.)

पास जिनराया वामाजाया । नगरी वणारसी । अश्वसेनराजा जगमें ताजा । सब्रजन तारसी । वदि चोथदिवसे चैत्रजगीसे । प्रभुजी अवतर्या । दशमी पोष जग संतोष । सब कारज सर्या ॥१॥ प्रथम जिनेसर चारहजारे । पास मल्लि त्रयशत । वीर इकेला पट् सतमाथे । वासुपूज्य अहित्रत । उगणीस जिनपति सहस संघाते संजमआदर्यो । कर्मखपावी केवलपामी । निजकारजकर्यो ॥ २ ॥ जिणपतिवाणी मीठी जाणी । स्वर्गे सुरवेलड़ी । साकर खंडे गुलनहि मंडे । पीलेरस सेलड़ी । द्राखवनमांहे अमृत अमराहे । त्रण पशुचावती । एमकुलाजी जिनगुणगाजी । इंद्राणीगावती ॥ ३ ॥ पारमयक्षकारजदक्षकरे सहुसंघनो । च्यारछेवाहुकच्छवसाहु वरण सांमलवनो । देवी पद्मा सुखनीसद्मा दीये सुखसंपदा । जिन कृपाचंद्र पभणे सुरिंद सेवे सुरनरमुदा ॥ ४ ॥ इति थुइ० ॥

(अथ श्रीमहावीरस्वामी थुइ.)

आषाढशुदि छठी स्वर्गथी चवीया ईस । अश्विनवदि तेरस त्रिसला कूखे जगीस । शुदितेरसजनम्या चैत्रमाससुखकार । श्रीवीर जिनेसर वंदुभाव उदार ॥ १ ॥ मिगसर वदि दशमी संजमसुं मनलाय । वैशाखसुदिमें केवल दशमीभाय । कातिअम्मावसि पाम्यो पदनिर्वाण । चोवीस जिनवर आपो मुज सुखखाण ॥ २ ॥ अरिहंत प्रकास्यो उपधान तप श्रीकार । नवकार इरिया वहि नमुत्थुणं मनुहार । अरिहंत चेइयाणं लोगस्स द्रव्य सवजान । सिद्धाणं बुद्धाणं मालगान

उपधान ॥ ३ ॥ विधिसेति वहियै गुरुमुखसुणि सुविचार । श्रीमहानिशीथे भाख्योएअधिकार । सिद्धायिकादेवी वांछितदे निरधार । जिनकृपाचंद्र सूरि तपसेव्या जयकार ॥ ४ ॥ इति थुइ० ॥

(अथ उपधान चैत्यवंदन लि०)

वीरजिनंदे भाखीयोः उपधानतपविस्तार । सूत्रे गणधर साखियोः महानिशीथमझार ॥ १ ॥ पहलोवीसउ नवकारनोः इरिया वीसड़जानः भावस्तव पेतीशनो ठवणास्तवचउआण ॥ २ ॥ लोगस्स अठावीस नो । दव्वत्थवछकड़होय । माला उपधान सातमो । सिद्धाणं बुद्धाणं जोय ॥ ३ ॥ सातभय निवारवा । सातकरो उपधान । क्रिया शुद्ध करवातणो । एहउपाय सुजान ॥ ४ ॥ विधि योगे आराधियेए । तप उत्तम सुखकार । जिन कृपाचंद्रसूरिसदा । आगमनो आधार ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनं० ॥

इति श्रावकनित्यकृत्यसंपूर्णम् ॥

